



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

एकांत स्थान में
साधना करने का मूल्य
है, पर भीड़ में रहकर भी
एकांत का-सा अनुभव
करना परम मूल्यवान है।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली

वर्ष 25 • अंक 50 • 16 सितम्बर - 22 सितम्बर, 2024



प्रत्येक सोमवार

प्रकाशन तिथि : 14-09-2024 • पेज 20

₹ 10 रुपये

अंतर्राष्ट्रीय मैत्री दिवस के आयोजन से पूरे विश्व में बने मैत्री का माहौल : आचार्यश्री महाश्रमण

सूत।

09 सितम्बर, 2024

क्षमापना दिवस का पावन दिन। क्षमा मूर्ति, समता के सागर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने क्षमा का महत्व समझाते हुए फरमाया- प्रश्न किया गया है कि क्षमापना से जीव को क्या मिलता है। उत्तर दिया गया- क्षमापना से आह्लाद भाव - प्रसन्नता प्रकट होती है। सब प्राण-भूत आदि जीवों के प्रति जीव मैत्री भाव कर लेता है। मैत्री भाव से भाव विशुद्धि हो जाती है। भाव शुद्ध करके प्राणी निर्भय बन जाता है। मैत्री, क्षमापना और निर्भयता का आपस में संबंध है।

हमने पर्युषण महापर्व की आराधना की। भगवती संवत्सरी की भी आराधना की। संवत्सरी को पिछला खाता बन्द कर दिया जाए। पिछले वर्ष के कलुष भावों के सारे कागजों को फाड़ दें। क्षमापना दिवस पर विश्व मैत्री दिवस भी पूरे विश्व में आयोजित हो। अंतर्राष्ट्रीय मैत्री दिवस भी आयोजित हो जाए तो पूरे विश्व में मैत्री का माहौल बने, ऐसा प्रयास



किया जा सकता है। कार्यक्रम में 84 लाख जीव योनि से खमत खामणा की विधि है। मंगल प्रवचन के साथ ही आचार्य प्रवर ने खमतखामणा का क्रम प्रारम्भ करते हुए साध्वीप्रमुखाश्री, मुख्यमुनिश्री, साध्वीवर्याश्री से खमतखामणा करते हुए मंगल आशीर्वाद भी प्रदान किया। आचार्यश्री ने समस्त साधु-साध्वीवृंद, समणीवृंद से भी खमतखामणा की तथा चित्त समाधि का मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

मुमुक्षु बहनों, उपासक श्रेणी, सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों व श्रावक-

श्राविकाओं से भी पूज्यवर ने खमत खामणा की। अनेक जैन सम्प्रदायों के आचार्यों, जैनेत्तर धर्म गुरुओं और धर्म संघ से मुक्त साधु-साध्वी व समणियों व सामाजिक संस्थाओं, गुरुकुल वास के कर्मचारियों से भी खमत खामणा की।

आचार्य प्रवर ने चारित्रात्माओं को एक-एक उपवास की तथा श्रावक-श्राविकाओं को एक वर्ष में तीन उपवास की आलोचना बताई। परम पूज्य कालूगणी के महाप्रयाण के अवसर आचार्यश्री ने उनको श्रद्धा के साथ वंदन किया। (शेष पेज 17 पर)

महामना आचार्यश्री भिक्षु

222वें चरमोत्सव

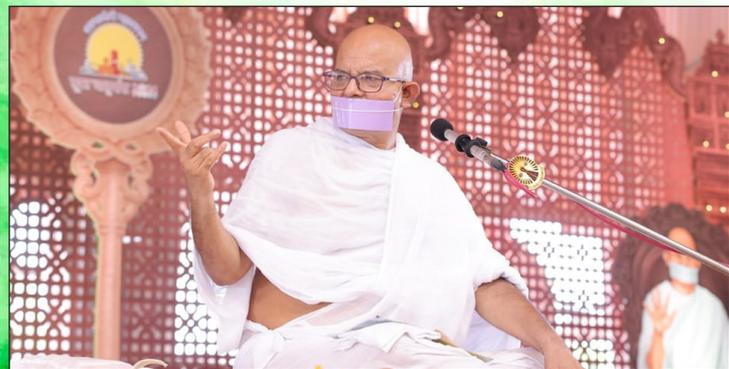
पर भाव भरी श्रद्धा प्रणति

नाभि-नंद जिन-चंद समो भिक्षु स्वामी।
पंचम काल बिचाल हुयो जग में नामी।
जग में नामी, शिवगति-गामी कर जिन-शासन-संपत्ति पामी।
जय-जय भिक्षु स्वाम प्रभु अन्तर्यामी।



श्रद्धाप्रणत अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

भगवती संवत्सरी का दिन है विशेष धर्माराधना का दिन : आचार्यश्री महाश्रमण



सूत।

08 सितम्बर, 2024

पर्वाधिराज पर्युषण का शिखर दिवस भगवती संवत्सरी। क्षमा के सागर गुण रत्नाकर महा तपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने भगवती संवत्सरी के पावन अवसर पर सम्पूर्ण धर्मसंघ को मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया

कि धर्म को उत्कृष्ट मंगल बताया गया है। धर्म की आराधना का क्रम भी दुनिया में चलता है। सृष्टि का मानो सौभाग्य है कि इस दुनिया में हमेशा तीर्थंकर विद्यमान रहते हैं।

ऐसा कोई ऐसा समय नहीं होता, जब पूरी सृष्टि में कहीं न कहीं धर्म की आराधना नहीं होती हो। धर्म की आराधना साधु भी करते हैं और गृहस्थ भी करते हैं।

यूं तो धर्म की आराधना सदैव करणीय होती है पर कुछ-कुछ समय विशेष साधना के लिए भी होते हैं। जैन शासन की श्वेताम्बर परंपरा में पर्युषण महापर्व के अंतर्गत भगवती संवत्सरी का दिन विशेष धर्माराधना का दिन होता है। यह क्षमा का पर्व है, मैत्री से जुड़ा हुआ है। पिछली सारी कटुताओं को, वैर विरोध को दूर करने का दिन है। (शेष पेज 17 पर)

संवत्सरी महापर्व

संवत्सरी के पावन अवसर पर गत वर्ष में हुई ज्ञात अज्ञात
भूलों हेतु बारम्बार खमतखामणा

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

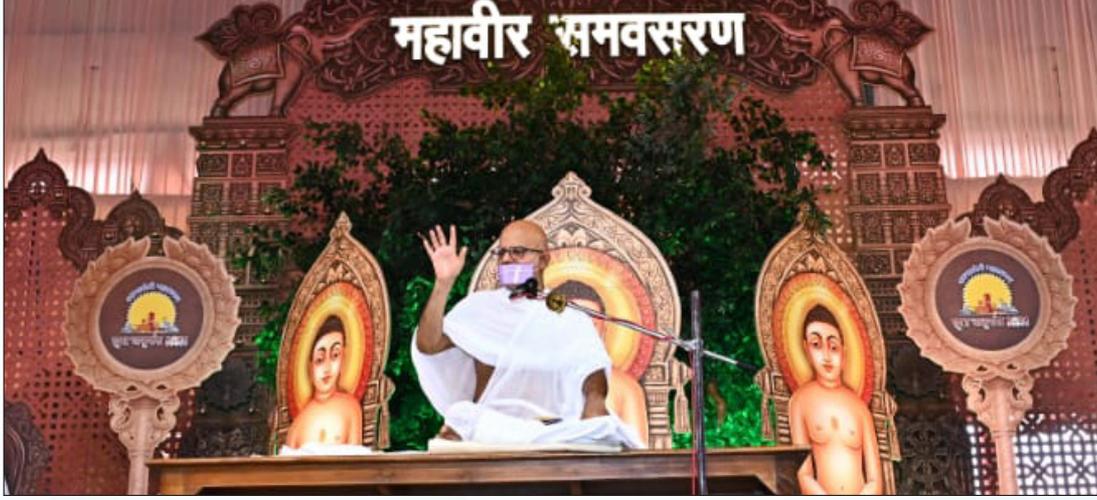


पुण्य कर्म के योग से मिलती है सत्ता : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

06 सितम्बर, 2024

जप दिवस - पर्युषण पर्वाधिराज का छठा दिन। अध्यात्म योगी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर के पूर्व भवों की विवेचना कराते हुए नयसार की आत्मा के पांचवे भव से 25वें भव तक की यात्रा करवाई। चौथे भव में पांचवें देवलोक का जीवन सम्पन्न कर भगवान महावीर की आत्मा मनुष्य के रूप में कौशिक नाम के ब्राह्मण बने, जीवन के संध्या काल में तापस बन साधना में लग गए। जीवन के सन्ध्याकाल में कुछ विशेष साधना हो सके तो बहुत अच्छी बात हो सकती है। अनेक भवों के आयुष्य को पूर्ण करते हुए अपने अठारहवें भव में वे पुनः मनुष्य के रूप में पोतनपुर नामक नगरी के राजा प्रजापति की दूसरी रानी मृगावती के पुत्र त्रिपृष्ठ के रूप में उत्पन्न हुए। राजतंत्र में राजा सेवा के लिए होता है तो लोकतंत्र में राजनेता सेवा के लिए होते हैं। पुण्य कर्म के योग से सत्ता मिलती है, सत्ता का घमण्ड नहीं करना चाहिए। सत्ता सेवा के लिए है, उसके अनुरूप जनता की सेवा करने का प्रयास करना चाहिए। राजनीति हो, समाजनीति हो, धर्मनीति हो, चाहे संस्थाएं हो, उनका जो मुखिया बनता है, उसकी टीम भी सक्षम हो और मुखिया



में काम कराने की भी दक्षता होनी चाहिए।

त्रिपृष्ठ प्रतिवासुदेव का वध कर वासुदेव बनता है और यहां क्रूर होकर कई कर्मों का बन्ध कर सातवीं नरक में उत्पन्न होता है। इस प्रकार जन्म-मरण करते हुए 23वें भव में पुनः मनुष्य बनते हैं। पश्चिम महाविद्यालय में मौका नगरी में राजा धनंजय और रानी धारिणी के पुत्र को जन्म दिया, नाम रखा गया प्रियमित्र। प्रियमित्र चक्रवर्ती बना और फिर सत्ता को छोड़ आत्म कल्याण के लिए साधु भी बन गया। सातवें देवलोक में 24 वां भव पूर्ण कर 25वें भव में राजकुमार नंदन के रूप में जन्म लेते हैं। 23 लाख वर्ष तक गृहस्थ रहने के बाद नन्दन राजर्षि बन गया। एक लाख वर्ष के संयम पर्याय में

विशिष्ट तपस्या कर तीर्थंकर नाम गोत्र का उपाजन कर लिया। उसके बाद भगवान महावीर की आत्मा दसवें देवलोक में उत्पन्न होती है।

जप दिवस के संदर्भ में पूज्य प्रवर ने फरमाया कि जप साधना का अच्छा प्रयोग है। इससे निर्जरा का लाभ मिल सकता है। कोई अक्षर ऐसा नहीं है, जो मंत्र नहीं है। कोई ऐसी वनस्पति नहीं जो औषधि न हो और कोई ऐसा व्यक्ति नहीं होता, जिसमें कोई अहंता नहीं होती। जप तो जन्म-मरण का नाश करने वाला हो सकता है। आवश्यकता है इनका सही संयोजन करने वाले की। जप का प्रयोग भाव शुद्धि का अच्छा साधन बन सकता है। इसके बाद भी आदमी को जितना जहां संभव हो,

अपने कार्य के प्रति भी जागरूक रहने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि शक्ति के अनेक स्रोत हैं उनमें एक है- शब्द। शब्द की आवृत्ति से पैदा होने वाले प्रकंपन हमारे शरीर, मन और भावों को प्रभावित करते हैं। जप का प्रयोग स्पष्टता, तन्मयता और एकाग्रता से करना चाहिये। मंत्र की आराधना का एक लक्ष्य आत्मा साधना है, इसमें भौतिक कामना न हो। साधना में जाने वाले साधक का यही लक्ष्य होना चाहिये कि मन में कोई कामना न हो। जप का दूसरा लक्ष्य होता है देवता की आराधना और तीसरा लक्ष्य बताया गया कष्ट को दूर करना। मंत्र

साधना का सबसे महत्वपूर्ण लाभ है- हमारे कर्म संस्कारों का क्षीण होना। हम आत्मा को निर्मल बनाने के लिए मंत्र की साधना करें।

मुख्य मुनिश्री तप-त्याग धर्म पर विवेचना करते हुए कहा कि तप और त्याग दो ऐसे मार्ग हैं जिनसे हम आत्म साक्षात्कार कर सकते हैं। तप से अतीत के पाप कर्मों का प्रक्षालन होता है, अनागत भविष्य की वासनाओं का विसर्जन होता है और व्यक्ति की आत्म शक्ति का संवर्द्धन होता है। करोड़ों-करोड़ों वर्षों के संचित कर्म भी तप के द्वारा निर्जित हो जाते हैं। तप वही कर सकता है जिसके अंतराय कर्म का क्षयोपशय होता है। त्याग स्वाधीनता से होता है, आत्म कल्याण की भावना से होता है। राग के समान दुःख नहीं है और त्याग के समान सुख नहीं है। व्यक्ति त्याग की चेतन को जगाए।

साध्वीवर्या जी ने तप और त्याग विषय पर गीत का संगान किया।

मुनि नम्रकुमारजी व मुनि विनम्रकुमारजी ने तीर्थंकर अरिष्टनेमि के जीवनवृत्त का वर्णन किया। साध्वी मार्दवयशाजी, साध्वी चैतन्ययशाजी व साध्वी कमनीयप्रभाजी ने जप दिवस के संदर्भ में गीत का संगान किया।

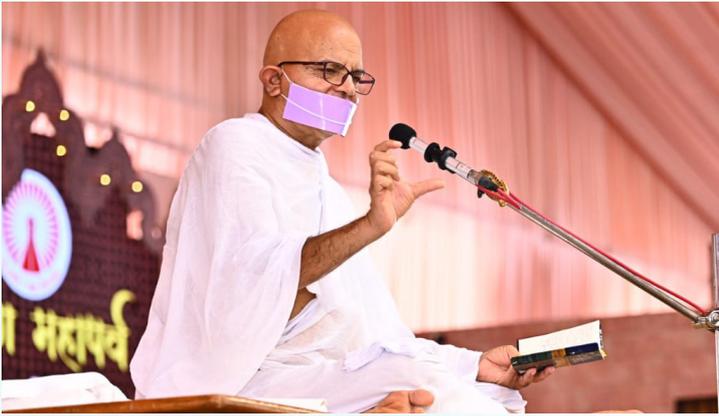
कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पुरूष सिंह, पुरूषोत्तम, पुरूषवर पुंडरीक थे भगवान महावीर : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

07 सितम्बर, 2024

पर्वाधिराज पर्युषण का सातवां दिन-ध्यान दिवस। निर्जरा के बारह भेदों में ध्यान और स्वाध्याय को उत्कृष्ट निर्जरा का उपाय बताया है। ध्यान योगी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के प्रसंगों को व्याख्यायित कराते हुए फरमाया कि दुनिया में कुछ पुरूष सिंह होते हैं, पुरूषोत्तम, पुरूषवर पुंडरीक होते हैं। भगवान महावीर इसी कोटि के महान व्यक्ति थे। परम प्रभु महावीर का जीव दशम देवलोक का आयुष्य संपन्न कर वहां से च्युत होता है। भगवान महावीर के पांच प्रसंग एक ही नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में सम्पन्न हुए। उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के योग में वह आत्मा दसवें देवलोक से च्यव कर मनुष्य लोक में गर्भ में स्थिति प्राप्त करती है। प्रभु का गर्भ संहरण का प्रसंग भी इसी नक्षत्र की स्थिति में हुआ। प्रभु का जन्म, दीक्षा स्वीकार, केवल ज्ञान-केवल दर्शन की



प्राप्ति भी इसी नक्षत्र के योग में हुई।

प्रभु महावीर की आत्मा दशम देवलोक से च्युत हुई तब चौथे अर का अंतिम समय था। उस समय आषाढ़ शुक्ला षष्ठी को वैशाली नगरी के उपनगर ब्राह्मणकुण्ड नामक गांव में ऋषभदत्त नामक ब्राह्मण की पत्नी देवानंदा के गर्भ में गर्भस्थ होती है। इन्द्र के मन में एक विचार आया कि भगवान का जन्म क्षत्रिय वंश में होना चाहिये। इन्द्र के निर्देश पर हरिणमेषी देव ने गर्भ की 83वीं रात्रि में देवानंदा के गर्भ को क्षत्रिय सिद्धार्थ की

पत्नी त्रिशला की गर्भ में स्थापित किया और त्रिशला के गर्भ को देवानंदा के गर्भ में स्थापित कर दिया गया। शिशु का विकास अब त्रिशला के गर्भ में हो रहा है। मां को कष्ट न हो इसलिए गर्भस्थ शिशु ने अपना हलन-चलन बंद कर लिया तो मां दुःखी हो गयी। मां को दुःखी देख बालक ने पुनः अपना हलन-चलन प्रारम्भ कर दिया। माता-पिता कितने उपकारी होते हैं। उस शिशु ने गर्भ में ही यह प्रतिज्ञा कर ली कि माता-पिता के संसार में रहते हुए साधु दीक्षा नहीं स्वीकार करूंगा। चैत्र

शुक्ला त्रयोदशी की मध्य रात्रि में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में और रानी त्रिशला एक सुशिशु को प्रसूत करती है। बारहवें दिन नामकरण संस्कार कर शिशु का नाम वर्धमान रखा जाता है।

ध्यान दिवस के संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि ध्यान अपने आप में साधना है। हमारे यहां प्रेक्षाध्यान की पद्धति प्रचलित है। 30 सितम्बर को प्रेक्षाध्यान दिवस पर प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष का शुभारम्भ होने वाला है। प्रेक्षाध्यान दिवस गुरुदेव तुलसी के शासनकाल में व मुनि नथमलजी (टमकोर) के योगदान से प्रारम्भ हुआ। वह केवल तेरापंथ के लिए नहीं, जैन-अजैन सभी के लिए कारगर बना। आदमी अपने जीवन में यथायोग्य ध्यान का भी अभ्यास करें, यह काम्य है।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने ध्यान दिवस के उपलक्ष में कहा कि हमें भीतर की यात्रा प्रारम्भ करनी है। भीतर की यात्रा ध्यान के द्वारा प्रारम्भ होती है। लक्ष्य तक पहुंचने के लिए ध्यान सर्वश्रेष्ठ

साधन है। ध्यान कर्म निर्जरा का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। जिस एकाग्रता से हमारे राग द्वेष अल्प हो जाते हैं, शांत हो जाते हैं, वह ध्यान है। ब्रह्मचर्य धर्म पर मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने गीत का संगान किया। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने ब्रह्मचर्य धर्म की चर्चा करते हुए कहा कि अध्यात्म की साधना में लीन होने के लिए हमें इंद्रिय और मन का नियंत्रण करना जरूरी है। समुद्र को पार करने में जैसे नौका श्रेष्ठ होती है, वैसे ही इस संसार समुद्र को पार करने के लिए ब्रह्मचर्य की साधना श्रेष्ठ होती है। पदार्थों के प्रति आसक्त व्यक्ति आत्मा में रमण नहीं कर सकता। कहा गया कि तपों में श्रेष्ठ तप है ब्रह्मचर्य। हम योगाभ्यास और निमित्तों से बचाव कर ब्रह्मचर्य की साधना कर सकते हैं।

मुनि पार्श्वकुमारजी व मुनि केशीकुमारजी ने भगवान पार्श्वनाथ के जीवनवृत्त पर अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी स्तुतिप्रभाजी ने ध्यान दिवस पर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

प्रवर्द्धन महिला सेमिनार का आयोजन

समाज और राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती है नारी

पूर्वी दिल्ली।

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में पूर्वी दिल्ली महिला मंडल द्वारा प्रवर्द्धन महिला सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया गया। पदाधिकारीगण एवं मंडल की बहनों ने साथ मिलकर स्वागत गीत का संगान किया। अध्यक्ष सरोज सिपानी ने पधारी हुई संपूर्ण राष्ट्रीय टीम, गणमान्य व्यक्तियों एवं सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण का स्वागत किया। अर्जुनराम मेघवाल ने अपने वक्तव्य में प्राचीन काल की विदुषी महिलाओं का स्मरण करते हुए कहा कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। महिलाओं के उत्थान के लिए आचार्यश्री तुलसी के द्वारा दिए गए अवदानों का गुणगान करते हुए उनके द्वारा रचित 'संयममय जीवन हो' गीतिका को लयबद्ध गाकर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता डागा ने प्रवर्द्धन का महत्व समझाते हुए कहा कि आज की नारी हर क्षेत्र में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेकर आगे बढ़ती जा रही है। अनुशासन और जीवन मूल्यों का पाठ पढ़ने वाली हर महिला उतनी ही प्रबुद्ध है जितना की एक वैज्ञानिक और साहित्यकार। नारी सशक्तिकरण एवं नारी-उत्थान से हम बहुत गर्वित हैं। राष्ट्रीय महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने अपने वक्तव्य में नारी की महिमा और शक्ति का गुणगान किया। तत्पश्चात्



एक चर्चा परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसमें पैनलिस्ट के रूप में उपस्थित थे- डॉ. रमा शर्मा (प्रिंसिपल हंसराज कॉलेज), डॉक्टर प्रोफेसर सुरभि ढींगरा, आस्था जैन (सह निदेशक, कोयला मंत्रालय) मरियम फारुकी (भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा, सोशल मीडिया सहप्रभारी)। मॉडरेटर की कुशल भूमिका निभाई राष्ट्रीय महामंत्री नीतू ओस्तवाल एवं दिल्ली व यूपी प्रभारी सुनीता जैन ने।

इस परिचर्चा में महिलाओं से संबंधित अनेक विषयों पर प्रकाश डालकर उपस्थित सभी बहनों को यह एहसास कराया गया कि भारत की प्रत्येक नारी समाज और राष्ट्र निर्माण में एक अहम भूमिका निभाती है क्योंकि संस्कार निर्माण का मुख्य दायित्व महिलाओं का है। सभी ने इस बात पर

बल दिया कि महिलाएं पुरुषों से स्पष्टा ना रखें अपितु अपने मौलिक संस्कारों को सुरक्षित रखते हुए आगे बढ़ें।

पूर्वी दिल्ली कन्या मंडल ने एक नाटिका की प्रस्तुति द्वारा मीरा, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, मदर टेरेसा, कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, मैरी कॉम आदि नारियों की गौरव गाथा पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर साध्वी संगीतश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा- आज महिलाएं मेहनत, लगन और दृढ़ निश्चय के साथ नई उपलब्धियों के परचम लहरा रही हैं।

साध्वी मुदिताश्री जी, साध्वी कमलविभाजी, साध्वी शांतिप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बिजली चमकती है तो आकाश बदल देती है, आंधी उठती है तो दिन रात बदल देती है, जब गरजती है नारी

शक्ति तो, इतिहास बदल देती है। दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में जैन समाज के अतिरिक्त अन्य समाज की प्रबुद्ध बहनें भी अच्छी संख्या में उपस्थित थीं। इस अवसर पर दिल्ली, एनसीआर की सभी महिला मंडल के अध्यक्ष, अपनी टीम के साथ, क्षेत्रीय सभाओं, युवक परिषद, ज्ञानशाला व अणुव्रत समिति की टीम ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवायी। मंत्री सुमन भंडारी ने संचालन किया।

कार्यक्रम संयोजिका सरला दूगड एवं मंजू बाँठिया, क्षेत्रीय संयोजिका अमिता बरडिया, शिल्पा बाफ्रना, कल्पना सुखानी व प्रचार प्रसार मंत्री प्रमिला डागा का सराहनीय श्रम रहा। लगभग 800 लोगों की उपस्थिति से कार्यक्रम सफल हुआ।

आध्यात्मिक अनुष्ठान खोलता है सिद्धि का द्वार

रायपुर। मंत्र जहां साधक के जीवन में आध्यात्मिकता का विकास करता है, वहीं आधि-व्याधि-उपाधि से निजात दिलाता है, शारीरिक, मानसिक कष्टों को भी काटता है। पारिवारिक, सामाजिक माहौल में भी सौहार्द, सामंजस्य, मैत्री, प्रेम के प्रवाह को प्रवाहित करने में सहायक बनता है। उपरोक्त विचार मुनि सुधाकर जी ने श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा रायपुर द्वारा आयोजित लाल गंगा पटवा भवन के जय समवसरण में 'णमोत्थुणं अनुष्ठान' में विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहे। अनुष्ठान में तीर्थंकर परमात्मा के 1008 नामों का समुच्चारण करते हुए णमोत्थुणं कल्प के मंत्रों का उच्चारण किया गया। आज के इस विशेष अनुष्ठान में लगभग 950 से अधिक जैनों के साथ जैनेतर बंधुओं ने भी सहभागिता दर्ज करवाई। लगभग 2:30 घण्टा चले इस विशेष अनुष्ठान में रायपुर के साथ-साथ चेन्नई, बेंगलोर, राजनांदगांव, दुर्ग, भिलाई, अम्बिकापुर, मनेन्द्रगढ़, कवर्धा, सरायपाली, टिटलागढ़, धमतरी इत्यादि अनेकों क्षेत्रों के लोगों ने सहभागी बन अनुष्ठान किया।

मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल, स्वागत तेरापंथ सभा के अध्यक्ष गौतम गोलछा एवं आभार सभा के मंत्री चंद्रकांत लूंकड व कार्यक्रम का कुशल संचालन मनीष नाहर ने किया। अनुष्ठान के पश्चात मुनिश्री के सान्निध्य में तपस्वी कमल ललवानी - 31, शोभा सेठिया-16, अरुण सिपानी- 11, सोनम बरलोटा-10 को तपस्या का प्रत्याखान करवाया गया। अनुष्ठान में व्यवस्था की दृष्टि से सहयोगी रत्ना महेन्द्र बापना व सोनाली नरेश बापना रहे।

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

श्रीदुंगरगढ़।

अभातेमम निर्देशानुसार चित्त समाधि शिविर का आयोजन श्रीदुंगरगढ़ महिला मंडल द्वारा 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा हुई। मुख्य अतिथि योग गुरु ओम कालवा ने योग द्वारा चित्त समाधि के प्रयोग करवाए गए। साध्वी सुमंगलाश्रीजी व साध्वी ललिताश्रीजी ने जीवन शैली को व्यवस्थित बनाने के सूत्र सिखाए।

'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा- कोई भी परिस्थिति आए, विवाद नहीं करें, प्रसन्न रहें। अपने जीवन में छोटी-छोटी तपस्या करें, जब तक जिए अपना काम स्वयं करें, अपशब्द का प्रयोग ना करें, दूसरों से अपेक्षा नहीं करें। खुद का चित्त शांत रहेगा तो दूसरे भी शांति में रहेंगे। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणागीत का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मंजू झाबक ने किया। कार्यक्रम के प्रायोजक किरण देवी गीया ने आभार व्यक्त किया।

सिद्धि तप का अभिनन्दन समारोह आयोजित

गुवाहाटी।

मुनि प्रशांतकुमार जी के सान्निध्य में सिद्धि तप करने वाली श्राविका लीला देवी महनोत (धर्मपत्नी सिखर चंद महनोत) का सिद्धि तप अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा- तपस्या से कितनी-कितनी निर्जरा होती है। पुराने पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं। ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप में आगे बढ़ने का महत्व होता है। तपस्या का ही अभिनन्दन होता है, उसी की ही अनुमोदना की जाती है। संघ-समाज

का गौरव बढ़ता है। भगवान महावीर के समय धन्ना अणगार जैसे महान तपस्वी हुए हैं। भगवान महावीर ने फरमाया शक्ति का संगोपन नहीं करें। अपने सामर्थ्य के अनुसार अध्यात्म में अपने आपको लीन करें।

शरीर का उपयोग धर्म में करें। जीवन का सच्चा आनन्द भोग में नहीं, त्याग में है। लीला देवी महनोत ने सिद्धि तप जैसा कठिन तप किया है। सभी इनसे प्रेरणा लें।

मुनि कुमुदकुमार जी ने कहा- जिनशासन में मोक्ष प्राप्ति के लिए आत्मसाधना की जाती है। तपस्या

करने वाला साधक तप के साथ-साथ पंचाचार की साधना करता है। आचार्यों की पुण्याई से छहमासी, बारहमासी तप करने वाले अनेकों साधक हैं। लीला देवी महनोत ने सिद्धि तप कर कठिन कार्य किया है। इनसे प्रेरणा प्राप्त कर तप में आगे बढ़ें। महिला मंडल ने गीत के द्वारा एवं सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन जम्मड़ ने वक्तव्य के द्वारा अनुमोदना की।

सभा की ओर से अभिनन्दन-पत्र माणक बोरड़ ने प्रदान किया। तेरह सदस्यों ने तेला का संकल्प लेकर साहित्य भेंट किया।



शुद्ध भावों से वन्दना करने से होता है तीर्थंकर गौत्र का बंधन

चेन्नई।

साधना के छोटे-छोटे प्रयोग भी उपयोगी बनते हैं, नव निर्माण में सहायक बनते हैं, आत्मोन्नति के साधक बनते हैं। उपरोक्त विचार आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि हिमांशुकुमार जी ने तेरापंथ सभा भवन, साहूकारपेट में धर्म परिषद् को सम्बोधित करते हुए कहे। मुनिश्री ने कहा कि साधना का एक अंग है- वन्दना। जिनेन्द्र प्रभु, पंच महाव्रतधारी साधुओं को मन, वचन, काया की एकलयता में शुद्ध भावों से वन्दना की जाती है, तो अनेकानेक लाभ होते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्याय के 11वें सूत्र में भगवान महावीर

ने बताया कि सम्यक् भावना से वन्दना करने से- नीच गौत्र कर्म का क्षय और उच्च गौत्र का बन्धन होता है, वन्दना से विनम्रता आती है, अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण होता है, अबाधित सौभाग्य की प्राप्ति होती है, तीर्थंकर गौत्र का बंधन भी हो सकता है।

मुनिश्री ने वन्दना के आध्यात्मिक पक्ष के साथ व्यावहारिक लाभ को उजागर करते हुए बताया कि शुद्ध भावों से वन्दना करने वाला व्यक्ति दुर्गति में नहीं जाता है। नीचे झुक कर वन्दना करने से एड्रिनल ग्रंथि के हारमोस बैलेंस होते हैं, उससे गुस्सा शांत हो जाता है, चंचलता कम होती है, रक्त का प्रवाह मस्तिष्क की ओर होने से न्यूरॉन्स का स्राव बढ़ जाता

है उससे बुद्धि का विकास होता है, चेहरे की सुंदरता और ओजस्विता बढ़ती है। मुनि हेमंतकुमारजी ने LORD is Now Here विषय पर प्रस्तुति देते हुए कहा कि हर व्यक्ति सुख को पाना चाहता है और भौतिक जगत, पदार्थ की प्राप्ति में ही सुख का अनुभव करता है। जबकि वास्तविक सुख तो जिनेश्वर द्वारा बताया मार्ग ही है।

वर्तमान में जिनेश्वर प्रभु साक्षात् हमारे सामने नहीं है, परन्तु उनकी श्रुत वाणी के रूप में वे अभी भी हमारे बीच में ही हैं। सम्यक् पुरुषार्थ के साथ जिन वचनों की पालना करने वाला अपने जीवन का रुपांतरण कर सकता है, मुक्ति को पा सकता है।

प्रबल आत्मबल से होता है तप का आराधन

कांदिवली, मुंबई।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से मालाड निवासी भगवती देवी धींग ने मासखमण तप पूर्ण किया। मासखमण की सानन्द संपन्नता पर साध्वीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मासखमण तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगल प्रज्ञा जी ने कहा- जैन परम्परा में तपस्या को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। दृढ़ संकल्पशील व्यक्ति ही तप के कठिन-पथ पर गतिमान रह सकता है। तप के साथ ज्ञान, जप, ध्यान और स्वाध्याय की साधना की जाती है तो वह और विशिष्ट बन जाता है। बाह्य तप का आराधन व्यक्ति प्रबल आत्मबल से पूर्ण कर लेता है, पर अपने कषायों को उपशांत करना भी बड़ा तप है।

साध्वीवृंद द्वारा भिक्षु अष्टकम् से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष विभा श्रीश्रीमाल ने शुभ-कामनाएं दी। तेरापंथ युवक परिषद् कांदिवली अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने तप-अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। तेरापंथ युवक परिषद् मलाड के अध्यक्ष जयन्ती मादरेचा ने तपस्विनी बहन का परिचय प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा मलाड के सहमंत्री मुकेश कोठारी ने तप का अनुमोदन करते हुए साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत्त पावन संदेश का वाचन किया।

तपस्विनी बहन की वर्धापना में मांगीलाल धींग, चेतना कच्छारा ने तप अनुमोदना स्वर व्यक्त किया। तेरापंथ महिला मंडल मलाड ने सामूहिक संगान किया। पारिवारिक जन ने अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी वृंद ने 'तप-कव्वाली' प्रस्तुत की। मंच संचालन साध्वी शौर्यप्रभाजी ने किया।

चित्त-समाधि एवं रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

पश्चिम विहार, दिल्ली। अभातेममं द्वारा निर्देशित, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मण्डल दिल्ली(पश्चिम) द्वारा चित्त-समाधि कार्यशाला एवं रक्षा-बंधन कार्यशाला साध्वी लब्धिप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन पश्चिम विहार में रखा गया। इस अवसर पर बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वी श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि चित्त की समाधि को बनाए रखने के लिए कुछ सूत्रों को अपनाना चाहिए।

चित्त की निर्मलता को बनाए रखने के लिए अध्यात्म के संग लगाव, सकारात्मक सोच व क्षमा का भाव होना चाहिए। जैन संस्कारक मनीष बरमेचा व पवन गिड़िया ने विधि-पूर्वक रक्षाबन्धन को जैन धर्म के अनुरूप मनाने और मंगल भावना यंत्र के बारे में विस्तार से बताया। अध्यक्ष रीटा चोरड़िया ने सभी का स्वागत किया और जैन संस्कारकों व पश्चिम विहार सभा का बहुत-बहुत अभार प्रकट किया।

परिवार में प्रिय बनने के लिए आत्मीयता जरूरी है

चिकमगलूर। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जीता है। समाज की एक छोटी एकाई है- परिवार। हमारी पारिवारिक जीवन शैली में विचार भेद रुचिगत संस्कार भेद, रहन-सहन भेद आदि का उपक्रम नैसर्गिक है।

ऐसी स्थिति में एक दूसरे के भाव एवं जीवन क्रम को समझना परिवार के लिए आदर्श बन सकता है। ये विचार मुनि मोहजीत कुमार जी ने एक विशेष प्रवचन माला में 'परिवार में प्रिय कैसे बनें' विषय पर प्रकट किए। मुनिश्री ने परिवार की परिभाषा करते हुए कहा कि परिवार में प्रिय बनना है तो सद्व्यवहार, अपनेपन का विकास, सहानुभूति, सकारात्मक दृष्टि कोण का विकास करना होगा।

वाणी में प्रियता, सरसता, मुदुता का प्रयोग करने से परिवार में प्रिय बन सकते हैं। साथ-साथ जन्म नहीं ले सकते, साथ साथ मर नहीं सकते, साथ-साथ जी तो सकते हैं। परिवार के प्रत्येक सदस्य में सहयोग, शिष्टाचार और प्रशंसा का मनोभाव विकसित हो।

'परिवार में प्रिय कैसे बने विषय पर प्राक् प्रस्तुति देते हुए मुनि जयेशकुमार जी ने कहा- प्रियता का सबसे बड़ा आधार है आश्वास और एक दूसरे के प्रति विश्वास। इन दो तथ्यों से परिवार में प्रियता का विकास किया जा सकता है।

रक्तदान शिविर का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा स्वेच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन राघव रेसीडेंसी में किया गया। नमस्कार महामंत्र के स्मरण के पश्चात परिषद् अध्यक्ष गगनदीप बैद ने उपस्थित सभी का स्वागत अभिनन्दन किया। शिविर में राघव रेसीडेंसी के अध्यक्ष आशु महाराज ने अपने भाव रखे। शिविर में सम्पूर्ण प्रबंध समिति, कार्यसमिति, विशिष्ट आमंत्रित सदस्य, किशोर मंडल,

साधारण सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। रक्त दान में कुल 70 यूनिट का संग्रह किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में उपाध्यक्ष एवं ब्लड डोनेशन ड्राइव के पर्यवेक्षक विक्रम भंडारी एवं संयोजक अभिषेक खटेड़, आदि का विशेष श्रम रहा। एमबीडीडी संयोजक भरत भंडारी ने राघव रेसीडेंसी, प्रायोजक नरेंद्र-सुमन भंसाली परिवार, लाइफ केयर ब्लड बैंक एवं सभी रक्तदाताओं का आभार व्यक्त किया।

मास खमण तपस्या का अभिनंदन समारोह

नोखा।

आत्मबल, गुरु कृपा और पुण्योदय से तपस्या होती है। मनोबल मजबूत हो, आस्था, निष्ठा व संकल्प शक्ति से तपस्या की जा सकती है, भव-भव के कर्म बंधन काटे जा सकते हैं। यह उद्गार 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी ने रेखा महेंद्र पारख के मासखमण तपाभिनंदन समारोह पर कहे। ऋषभ पारख ने भी 9 की तपस्या की। साध्वी वृंद, पारख परिवार की बहनों, महिला मंडल एवं युवक परिषद् ने आई तप गीतिका का संगान किया। परिवार के

नन्हे बालक-बालिकाओं ने तपस्या का सुंदर चित्रण किया। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी का संदेश वाचन साध्वी समताश्री जी ने किया। अभिनंदन पत्र का वाचन मंत्री मनोज घीया ने किया। पूर्व प्रधान कन्हैया लाल सियाग व समाज सेवी धनराज गोलछा ने जैन धर्म की तपस्या को महान तप बताया। पारख परिजन, महिला मंडल मंत्री प्रीति मरोठी, इंद्रचंद बैद 'कवि', सभा अध्यक्ष शुभकरण चौरड़िया, हनुमानमल बैद ने तप के प्रति भावांजली व्यक्त की। संचालन सभा उपाध्यक्ष लाभ चंद छाजेड़ ने किया।

फिजिकल मिशन एंपावरमेंट पर कार्यशाला का आयोजन

उत्तर कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में द आर्यन्स स्कूल के सभागार में कक्षा नौवीं और दसवीं के विद्यार्थियों हेतु तेरापंथ युवक परिषद्, उत्तर कोलकाता ने फिजिकल मिशन एंपावरमेंट पर कार्यशाला आयोजित कराई गई।

कार्यशाला की शुरुआत तेरापंथ

युवक परिषद् उत्तर कोलकाता के मंत्री प्रदीप हीरावत के स्वागत वक्तव्य से हुई। प्रशिक्षक जय चौरड़िया, अनंत चौरड़िया ने विद्यार्थियों को जलने पर, अस्थि भंग होने, बाह्य व आंतरिक रक्त स्राव होने पर, आकस्मिक बाढ़ आने पर, हृदयाघात के लक्षणों व प्राथमिक उपचारों के बारे में विशेष जानकारी दी। इस कार्यशाला में कोषाध्यक्ष विनोद आंचलिया एवं नीतीश गोलछा, मंगल वैद्य तथा आर्यन्स स्कूल

शिक्षक वृंद उपस्थित रहे। कार्यशाला में द आर्यन्स स्कूल के १०२ विद्यार्थी ने भाग लिया। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में शारीरिक फिटनेस, मानसिक सशक्तिकरण और जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। इस कार्यशाला के लिए सांस्कृतिक समन्वयक सुषमा राय ने तेरापंथ युवक परिषद् उत्तर कोलकाता की पूरी टीम के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।



संक्षिप्त खबर

समृद्ध राष्ट्र योजना के तहत कार्यशाला का आयोजन

जसोल। अभातेममं के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के तहत नवकार विद्या मंदिर जसोल में दूसरी कार्यशाला का आयोजन किया गया। सहमंत्री डिम्पल सालेचा ने सामूहिक नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करवाया। विद्यालय की छात्राओं द्वारा मंगलाचरण किया गया। सहमंत्री मीना भंसाली ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। उपाध्यक्ष सरोज भंसाली ने आलस्य नहीं समय का सदुपयोग करें विषय पर कहा कि जो सोता है वो खोता है और जो जागता है वो पाता है। अध्यक्ष कंचन देवी ढेलडिया ने बच्चों की दैनंदिन गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। सरोज तातेड़ ने जैन साधु की दिनचर्या की जानकारी दी। स्कूल प्रधानाध्यापिका किरण कोठारी एवं महिला मंडल की ओर से सरला नाहटा ने आभार व्यक्त किया।

मुस्कुराएं बचपन: खिलखिलाएं पचपन

पाली। तेरापंथ महिला मंडल एवम् तेरापंथ कन्या मंडल पाली द्वारा अपना घर आश्रम में रक्षाबंधन का पर्व लगभग 70 वृद्ध महानुभावों के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र द्वारा की गई। तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्याओं ने रक्षा बंधन गीत की प्रस्तुति दी। सभी वृद्धजनों को महिला मंडल व कन्यामंडल द्वारा राखी बांधी गई। तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा मनोरंजन के लिए खेल खिलाया गया। हमें उनसे शिक्षा मिली की कैसे जीवन को प्रत्येक चुनौती का सामना एक सकारात्मक मुस्कान एवं ऊर्जा के साथ किया जाता है।

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

जोरावरपुर। 'शासनश्री' साध्वी शशिरेखाजी के सान्निध्य में अभातेममं निर्देशित चित्त समाधि शिविर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत के साथ की गई। साध्वी श्री ने चित्त की निर्मलता के बारे में बताते हुए कहा कि चित्त समाधि अर्थात् शांति से जीना। जहां प्रेम होता है, सहिष्णुता होती है, सहभागिता होती है, मानसिक शांति होती है, वहां चित्त की निर्मलता बरकरार रहती है। जैन दर्शन में सहना, समभाव से रहना, स्थितियों परिस्थितियों को सहना कर्म निर्जरा बताया गया है। वह भी चित्त की निर्मलता से ही संभव है। साध्वी कांतप्रभाजी ने मंगल भावना का प्रयोग करवाया। साध्वी मृदुलाश्री जी ने अपने विचार व्यक्त किए। कन्या मंडल सहसंयोजिका हर्षिता मरोठी ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। जोरावरपुर महिला मंडल द्वारा चित्त समाधि गीतिका का संगान किया गया।

रियायती दर पर किडनी फंक्शन जांच

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के अंतर्गत विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस के उपलक्ष में वरिष्ठ नागरिकों का रियायती दर पर किडनी फंक्शन जांच की गई। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। किडनी फंक्शन जांच में यूरिया, सीरम क्रियेटिनिन, यूरिक एसिड, सोडियम, पोटेशियम, क्लोराइड कुल 6 रक्त जांच का समावेश किया गया। इस शिविर से कुल 55 सदस्य लाभान्वित हुए। शिविर आयोजन हेतु प्रायोजक के रूप में भूरालाल, प्रकाश चन्द्र, कैलाश चन्द्र दक परिवार ने अर्थ सहयोग प्रदान किया। शिविर को सुव्यवस्थित आयोजन करने में तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया, जयंतीलाल गाँधी, हरीश पोरवाड़, मुकेश भंडारी, किशोर मंडल से दर्शन पोरवाड़ ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है।
माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां
आत्मशुद्ध है, विश्वास भी है। — आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ पर्वत पाटीया। भीनासर निवासी पर्वत पाटीया (सूरत) प्रवासी पुखराज सरोज देवी कोचर के सुपुत्र अशोक व पुत्रवधु रोशनी कोचर के प्रांगण में कन्याधन का जन्म हुआ। नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन छाजेड़, पवन कुमार बुच्चा, रवि मालू ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानंद सम्पन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ दिल्ली। दिल्ली निवासी संदीप सचिन जैन का नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ संस्कारक राजकुमार जैन एवं नवीन जैन ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

■ भीलवाड़ा। रोशन लाल, महावीर कुमार, चेतन कुमार चिप्पड़, भीलवाड़ा के नूतन प्रतिष्ठान नाकोड़ा एंटरप्राइजेज के शुभारंभ का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से करवाया गया। इस कार्यक्रम में निर्मल सुतरिया, सुमित नाहर ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

मासखमण तप अभिनंदन समारोह

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में मासखमण तप अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा प्रेक्षा विहार में आयोजित हुआ। मासखमण तपस्वी बाबूलाल दुगड़, प्रत्यूष कोठारी, मंजुला घीया, रेखा दुगड़, अंजू चोरडिया, सुनीता सुराणा ने मासखमण तप का मुनिश्री द्वारा प्रत्याख्यान किया। मंजु कुण्डलिया ने आर्यबिल मासखमण तप (32 दिन) का प्रत्याख्यान किया। इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- तप आत्मशक्ति की परम औषध है। तप

आत्मशांति का कल्पवृक्ष है। तप समाधि का मंगल स्थान है। तप शरीर और मन का संतुलन है। तप आसक्ति को परास्त करने की शक्ति है। तपस्या प्रदर्शन के लिए नहीं बल्कि निदर्शन व कर्म निर्जरा के लिए करनी चाहिए। मुनिश्री ने आगे कहा तप विघ्न विनाशक संकट मोचक है। तपस्या से जिनशासन व तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना होती है। तपस्या में ब्रह्मचर्य की साधना, क्रोध विजय व स्वाध्याय करना चाहिए। तपस्या में लेन-देन से बचना चाहिए।

मुनि कुणाल कुमार जी ने तप गीत का संगान किया। सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने सभी तपस्वियों का स्वागत करते हुए तप अनुमोदना में अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के द्वारा तपस्वियों को प्रदत्त संदेशों का वाचन तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष बजरंग डागा, तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्ष चंद्रकांता पुगलिया, तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष विक्रम भण्डारी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम से विनीत झाबक, अणुव्रत समिति हावड़ा के मंत्री बीरेंद्र बोहरा, पूर्वांचल सभा के सहमंत्री आलोक बरमेचा ने किया। तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने तप अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया। मासखमण तपस्वियों के परिवार जनों ने गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से तप अनुमोदना में अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानन्द जी ने किया।

टीपीएफ फ्यूज़न IX साउथ ज़ोन कॉन्फ्रेंस आयोजित

हैदराबाद।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, हैदराबाद द्वारा आयोजित TPF फ्यूज़न IX साउथ ज़ोन कॉन्फ्रेंस का आयोजन 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। इस कॉन्फ्रेंस का मुख्य विषय संवर्द्धन और समृद्धि की दिशा में प्रगतिशील और सार्थक चर्चाएं करना था। साध्वीश्री ने सभी प्रोफेशनल्स को आशीर्वचन प्रदान किया। मुख्य वक्ता रोहित प्रधान ने AI in Daily Life विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स ChatGPT और Copilot आदि के

माध्यम से मोबाइल में ही अनेक तरह के डाटा analysis, आकर्षक प्रेजेंटेशन और विविध विषयों पर विश्लेषण आदि हम चंद सेकेंड में ही तैयार कर सकते हैं और उनका अच्छे ढंग से उपयोग कर सकते हैं। वहीं नेशनल पुलिस अकादमी में 33 वर्षों तक सेवा देने वाले डॉ. सक्सेना ने Towards Better Life Style Management विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। उन्होंने जीवनशैली प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे एक व्यवस्थित जीवनशैली हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकती है।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में टीपीएफ साउथ ज़ोन अध्यक्ष मोहित बैद,

बैंगलोर से पधारे साउथ ज़ोन उपाध्यक्ष विक्रम कोठारी, विशाखापटनम अध्यक्ष प्रेक्षा नाहटा ने तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के आयामों से सभी को अवगत कराया। हैदराबाद ब्रांच अध्यक्ष पंकज संचेती ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में टीपीएफ राष्ट्रीय टीम से ऋषभ दूगड़, नरेश कठोतिया, नवीन सुराना, दीपक संचेती, रक्षिता बोहरा की विशेष उपस्थिति रही। हैदराबाद ब्रांच पदाधिकारी सहित अनेक टीपीएफ सदस्यों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। कॉन्फ्रेंस के मुख्य संयोजक अनुष बम्बोली, अणुव्रत सुराना, वर्षा बैद, दीक्षा सुराना थे। कार्यक्रम का समापन TPF के मंत्री निखिल कोटेचा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।



साध्वीश्री धैर्यप्रभा जी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्गार

सुखे सुखे ऊपर ही रहो

● साध्वी सिद्धार्थप्रभा ●

साध्वी धैर्यप्रभाजी मेरे जीवन में श्रेय और प्रेय की कहानी है। एक मां होने के नाते उनका हम तीनों संतानों के प्रति प्रगाढ़ स्नेह भाव था। हम तीनों उनके गार्हस्थ्य जीवन की अमूल्य निधि थी। हमसे बढ़कर उनके लिए कोई नहीं था। हमारी इच्छा, हमारे विकास के लिए वे सब कुछ त्याग सकती थी। उनका हमारी पढ़ाई पर जोर रहता था। हमारी शिक्षा उच्च स्तरीय हो, उसके प्रति भी वे जागरूक रहती थी। जैसे-जैसे शिक्षा ऊंची हुई, साथ में खर्च भी बढ़े। उन्होंने इसकी कभी चिन्ता नहीं की। कई वर्षों तक आवश्यक गहनों के अलावा ज्यादा गहने नहीं खरीदती। वे उन को हमारी शिक्षा में लगा देती। उनका कहना था कि गहने तो बाद में जब तुम्हारी शादी होगी तब नए ट्रेन्ड के बनवा लूंगी, अभी मुझे जरूरत नहीं है।

प्रेरणा प्रोत्साहन तो उनका निरंतर चलता रहता था। उनकी दृष्टि थी कि केवल पढ़ाई ही नहीं, अन्यान्य विषयों में भी हम आगे रहें। इसलिए प्रतिवर्ष स्कूल में होने वाली सभी एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज में भाग लेना हम तीनों के लिए अनिवार्य था। मैं कई बार कहती- मैं सिर्फ भाषण, चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लूंगी। वे कहती- नहीं, सभी में भाग लेना है। स्कूल में हम तीन ही बच्चे ऐसे थे जो सभी में भाग लेते। वे प्रतियोगिताएं थी- भाषण, लेखन, (अंग्रेजी, हिंदी), गायन, चित्रकला, स्पोर्ट्स, फैंसी ड्रेस आदि। उनका मानना था कि हमारा स्टेज फियर हटे, कोई कार्य आए तो किसी की राह नहीं देखनी पड़े। उत्तीर्ण होना आवश्यक नहीं था, भाग लेना जरूरी था। आज हम तीनों कुछ पढ़ सकते हैं, लिख सकते हैं, बोल सकते हैं, सृजन करते हैं, गायन कर सकते हैं, यह उन्हीं की बदौलत है। उन्होंने सिर्फ प्रेरणा ही नहीं दी वे स्वयं भी प्रेरणा, उत्साह व जुनून की धनी थी। छोटी वय में ही शादी हो जाने के कारण उन्होंने गार्हस्थ्य जीवन के अनेकानेक कार्य सीखे व सिखाए।

उन्हें खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, घूमने का भी शौक ठीक ही था, तो वैराग्य वृत्ति भी अच्छी थी। उन्हें प्रतिवर्ष केवल दो पिक्चर के अलावा देखने का त्याग था। यह इनका श्रेय का पंथ और सिर्फ हम बच्चे इससे वंचित न रहें उसके लिए उन्होंने दो रखा, वह था प्रेय का पंथ। उत्साह और उमंग ने दीक्षा लेने के बाद नया रूप ले लिया। दीक्षा के बाद पात्री के रंग रोगन सीखा, रजोहरण, पूंजनी भी बनानी सीखी, लोच भी वे स्वयं करते थे। शासनमाता की प्रेरणा से उन्होंने एक पूंजनी बनाई और प्रथम दीक्षा दिन पर उसे उपहृत किया व प्रथम बार बहिर्विहार यात्रा के बाद आचार्यप्रवर के प्रथम बार दर्शन करने पर आचार्यप्रवर को उपहृत किया। कई बार कई सतियां मिलकर एक ओघा निर्मित करते हैं वहां उन्होंने अकेले रजोहरण का निर्माण किया। वे लोच भी स्वयं करती थी। अठाई की तपस्या में भी उन्होंने लोच किया।

इतना ही नहीं आचार्यप्रवर के दीक्षा कल्याण महोत्सव पर 51 के 51 संकल्प पूरे किए। इसी दौरान

उन्होंने अपनी संयम साधना को अनेकानेक व्यक्तियों को प्रेरणा दी। एक साल में 125 बारह व्रती बनाए, 55 लोगों को गुरु धारणा करवाई, 51 उपासक बनाए, 125 अणुव्रती बनाए। लोगों को तपस्या की भी खूब प्रेरणा दी। इन सबकी जानकारी मुझे तब हुई जब तपस्या के दौरान अनेक लोग उनके दर्शनार्थ आते। लगभग उनमें 20% लोग ऐसे थे जिन्हें मैं जानती। वे या तो ज्ञातिजन या परिचित थे। परन्तु लगभग 80% लोग ऐसे थे जिन्हें साध्वी धैर्यप्रभाजी की प्रेरणा छू गई। वे कहते- साध्वी धैर्यप्रभाजी के दर्शन करना चाहते हैं, उनकी प्रेरणा से हम उपासक बनें, मासखमण किया, तपस्या की, पखवाड़ा किया आदि। महाराज! हमने देखा है, आपकी मां को इतने शांत, सरल, हमेशा स्वाध्याय, जप में रत रहते। 51 संकल्पों में एक था- 50 संस्कृत श्लोक की रचना करना। वे संस्कृत का क, ख भी नहीं जानती थी, पर फिर भी उन्होंने सामान्य संस्कृत सीखी, शब्दार्थ, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग के नियम आदि जैसे तैसे जोड़-तोड़ कर 50 श्लोकों की रचना की। अंग्रेजी भाषा के प्रति भी उनका लगाव अच्छा था। जब मैंने मासखमण तप किया तब उन्होंने मुझे अंग्रेजी में तीन गीत भेजे और साध्वी तेजस्वीप्रभाजी को भावों का समप्रेषण किया क्योंकि तब तक उन्होंने मोबाइल, प्रिन्ट आउट आदि का व्यवहार भी बन्द कर दिया। हमें भी निरन्तर इंग्लिश बोलने व पढ़ने की प्रेरणा देती रहती। उत्साह इतना था कि उन्हें उपदेश, भाषण, गीत आदि का कोड था। साध्वी उज्जलप्रभा जी ने उनकी तीव्र भावना देख उन्हें उपदेश व गीत का अवसर प्रदान किया, जिसको उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से किया। तत्वज्ञान, आगम की रुचि भी गहरी थी।

एक बार का प्रसंग- साध्वी धैर्यप्रभा जी ने मुझसे कहा- आप अपना पी.एच.डी का विषय तत्वज्ञान से संबंधित ही लेना, इससे वैराग्य बढ़ता है। तभी मैंने उसे कहा- आपकी तत्वज्ञान में इतनी रुचि है तो आप तत्वज्ञान की परीक्षा क्यों नहीं देते? तब अपना संकल्प बताते हुए उन्होंने कहा- महाराज! मेरे प्रिन्ट आउट का उपयोग नहीं करने का संकल्प है। यदि एकजाम दूंगी तो प्रिन्ट आउट मेरे निमित्त से होगा। यदि मेरे लिए लिखित का पेपर मिल जाए तो मैं तैयार हूँ। मेरे मन में महाप्रज्ञ श्रुताराधना की परीक्षा देने की इच्छा है। हालांकि पूरा तो मैं नहीं कर पाऊंगी परन्तु कम से कम एक पेपर देने की इच्छा है, यदि मेरे लिए पेपर बन जाए तो। उन्होंने औसध आदि का प्रयोग नहीं किया, वे कभी गत्ता नहीं लगाती, मच्छरदानी उपयोग में नहीं लेती, चप्पल नहीं पहनती, ऊनी वस्त्र का प्रयोग कम करती।

उनका मेनेजमेन्ट भी स्ट्रॉन्ग था, तभी इतने छोटे समय में साधु की दिनचर्या के साथ 51 संकल्प पूरे किए। मुनि श्री अनिकेत कुमार जी भी गृहस्थ अवस्था में यदा कदा उनसे कनसल्ट करते। घर का कार्य, बाहर से समान लाना, कपडे-वस्तु आदि खरीदना, सोशियल कनेक्शन को निभाना आदि में वे दक्ष थी। वे

धुन की धुनी थी। जो कार्य सोच लिया उसे करके ही विराम लिया, चाहे कितने ही संघर्ष आए। संकल्प भी सामान्य नहीं होते, विशेष ही रहते।

मैंने देखा उन्होंने अपने जीवन में तीन व्यक्तियों की ज्यादा सुनी। गृहस्थ में थे तब पहले थे उनके संसारपक्षीय पिता- स्व. सम्पतराज जी छल्लाणी। उनके प्रति उनका आंतरिक स्नेह व सम्मान के भाव थे। कोई भी नया कार्य या निर्णय लेती उनसे परामर्श जरूर लेती व उनके विचारों को नहीं टालती। साध्वी धैर्यप्रभाजी के मन में था मैं भी अपने पिता को दीक्षा की प्रेरणा दूं। भावना होते हुए भी वे दीक्षा नहीं ले पाए। परन्तु साध्वीश्री ने उन्हें संथारे के समय सुस्थिर किया। उन्हें संथारे में अमोह की ओर अग्रसर करवाया।

दूसरे थे- मेरे संसार पक्षीय पिता- स्व. मुनि अनिकेतकुमारजी। वे धुन की धुनी थी, तब भी चाहे वे हजार प्लान्स बनाती परन्तु जब तक मुनिश्री (गृहस्थ में) की रजामंदी नहीं होती वे कार्य नहीं करती। उनके कार्य में मुनिश्री का मार्गदर्शन भी सहायक बनता। जब से दीक्षा ली तब से गुरु ही उनके लिए सब कुछ थे। जब दीक्षा की अनुमति मांगी तब गुरुदेव ने उनसे पुछा कहां रहोगी? उन्होंने कहा- जहां गुरुदेव रखवाएंगे वहां रहूंगी। अनेक संघर्षों के बावजूद भी उन्होंने अपनी ओर से निवेदन नहीं किया कि मैं अमुक के साथ रहूंगी। यहां तक कि बेटियों के लिए भी अर्ज नहीं किया। कुछ अंश में मैं मानती हूँ कि मेरा गुरुकुलवास उनकी देन है। तपस्या के दौरान भी उन्हें डर था कि गुरुदेव उनकी तपस्या पर मर्जी कराएंगे या नहीं। चूँकि प्रायः चोले के दिन से साध्वियां आचार्यप्रवर से प्रत्याख्यान करती हैं। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने निवेदन किया- गुरुदेव! आरे तपस्या करणै रो मन है। आचार्य प्रवर ने मुस्कान के साथ स्वीकृति प्रदान की। उस दिन उनके खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कुछ दिन (16) बाद जब वे नीचे उतर कर दर्शन नहीं कर पाई तब आचार्य प्रवर ने आशीर्वाद देते हुए फरमाया- सुखे-सुखे ऊपर ही रहो। आचार्यप्रवर का आशीर्वाद वास्तव में वे केवल ऊपर ही नहीं और ऊपर चली गईं। गुरु निष्ठा इतनी गजब की थी कि हम तीनों को भी दीक्षा की आज्ञा भी उन्होंने दी। जब तेजस्वी प्रभाजी और मुनि कौशल कुमार जी के आज्ञा लेने का प्रसंग आया तब साध्वी धैर्यप्रभाजी ने उनके असमंजस को समाधान देते हुए कहा गुरु को चुनो। गुरु ने भी हम पर अनन्त कृपा कर हमारे माता-पिता को दीक्षा दिरा दी। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसे पेरेंट्स मिले, ऐसे गुरु मिले।

अंत में कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहती हूँ साध्वी काव्यलता जी, साध्वी मीमांसाप्रभा जी का जिन्होंने इस अनुष्ठान में इनका सहयोग दिया, साध्वी हेमलताजी का वर्ग जिन्होंने उनकी सेवा की, सहयोग दिया। साध्वीप्रमुखा जी की वत्सलता, प्रेरणा, प्रोत्साहन ने उन्हें चित्त समाधि पहुंचाई। मैं गुरुदेव से यही आशीर्वाद चाहती हूँ कि मैं उनके अधूरे सपनों को पूरा कर सकूँ।

धैर्यप्रभा जी का जीवन वैराग्यमय था

● साध्वी प्रसन्नप्रभा ●

तपस्विनी साध्वी धैर्यप्रभा जी का जीवन बहुत ही वैराग्यमय जीवन था। वे प्रत्येक क्षण का जागरूकता से अंकन करती थी। उपवास के साथ आयम्बल करती, आयम्बल में जो मिल गया उसे समता भाव से, अनासक्त भाव से, मौन सहित ग्रहण करती थी। आयम्बल तप के साथ भी चरम प्रत्याख्यान करती। उपवास में भी मौन रखती थी, प्रति दिन प्रहर करती थी। कभी भी पोरसी को नहीं छोड़ा, चाहे कितनी भी प्यास लग जाये। स्वावलंबी थी, साध्वी हेमरेखाजी को कहती कि आप तेला करें, पारणा मैं लाऊंगी, आप के लिए ओघा भी बना दूंगी।

साध्वी हेमरेखा जी के पास आते ही कमरे में आते हो कहा - यह कमरा बहुत ही रमणीय लगता है, स्थान बहुत ही सौम्य लगता है। कमरे में आते ही मेरे मन में आनंद की अनुभूति होती है। वे कमरे में एक ही स्थान पर अपना जप-तप स्वाध्याय में रमण करती। सभी साध्वियों से कहती कि मुझे आप लोग अधिक से अधिक आगम स्वाध्याय सुनाओ। साध्वी हेमरेखा जी भगवती सूत्र के कुछ खंड टिप्पण सहित पढ़ाए, वे ध्यान पूर्वक सुनती। चौबीसी, आराधना का स्वाध्याय प्रतिदिन करती। आचार बोध, संस्कार बोध, तेरापंथ प्रबोध, तुलसी प्रबोध, महाप्रज्ञ प्रबोध, 52 बोल खोल कर सुनाया। अनेकों सूत्र, स्तोत्र, स्तवन आदि का स्वाध्याय एवं जप आदि का प्रयोग साध्वी श्री करवाते। साध्वी हेमरेखा जी के माध्यम से साध्वी जिनरेखाजी एवं साध्वी निर्वाणश्री जी को निवेदन करवाया कि मेरे लिए तप का गीत नहीं बनाना है, आप तो मुझे दशवैकालिक सुना देना। साध्वीप्रमुखाश्री प्रातः दर्शन देने आते तो गीत सुनाते। सबको ध्यान से, जागरूकता से सुनते थे।

साध्वी हेमरेखाजी ने 46 दिनों में स्वयं ने स्वाध्याय करते हुए उनको भी स्वाध्याय करवाया। इस प्रकार साध्वी धैर्यप्रभाजी का अप्रमत्त जीवन रहा। साध्वीश्री जी के जीवन से हम भी अप्रमत्त रहने की प्रेरणा प्राप्त करें। उनकी आत्मा अति शीघ्र मोक्ष पंथ को प्राप्त करे।

साध्वीश्री धैर्यप्रभा जी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्गार

निर्लिप्त साधिका

● मुनि कौशल कुमार ●

जिंदगी ऐसी बना जिंदा रहे दिलशाद तू।
जब न हो तू दुनिया में, आए दुनिया को याद तू।।

साध्वी श्री धैर्यप्रभाजी ने सुदीर्घ तपाराधना में सघन पुरुषार्थ कर संयम जीवन को धन्य कर पण्डित मरण को प्राप्त किया। गार्हस्थ्य के पांच दशक की संपूर्ति पर जिन्होंने सपरिवार श्रीचरणों में दीक्षा ली, मात्र छः वर्ष (लगभग) के संयम पर्याय में विदेह की साधिका, अनासक्ति का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करनेवाली, अपने संकल्प बल को प्रबल पुरुषार्थ और दृढ़ निश्चय के साथ तप समाधि से अपने जीवन को पूर्ण किया। अंतगडदसाओ में महासेन कृष्णा के जीवन वृत्त को अपनाकर अपनी साधना का उत्कर्ष प्राप्त किया।

बचपन में उत्पन्न वैराग्य के संस्कार को जिन्होंने अपने पूरे परिवार में संक्रांत किया, उस अंतर्मुखी आत्मा ने अपने आराध्य के श्री चरणों में प्राणार्पण कर दिया। अनासक्त जीवन में अनेकानेक बाह्याभ्यंतर परिस्थितियों को समता व सहिष्णुता से, अनुकूलता व प्रतिकूलता को गौण कर गुरुदृष्टि व तप साधना को अपना लक्ष्य बनाकर अविराम साधना के पथ पर बढ़ती रही। मेरे संसार से विरक्त होने के प्रसंगों में उनकी प्रेरणाएं निमित्त बनीं। घर में सामायिक करने बैठती तो मुझे सामायिक की प्रेरणा देकर सामायिक करवाती, संसार की नश्वरता का बोध कराती। उनकी विरक्ति भरी औपदेशिक बातें सुनकर मेरे मन में वैराग्य का अंकुरण हुआ। मैं जो कुछ भी अपनी संसारपक्षीय बड़ी बहन साध्वी श्री सिद्धार्थप्रभा जी से तत्त्वबोध प्राप्त कर आता, मुझेसे चर्चा करती, जिज्ञासा समाधान के द्वारा तत्त्वज्ञान की गहराई में उतरने के लिए प्रेरित करती।

दीक्षित होने के बाद हृबली मर्यादा महोत्सव में हमारा अंतिम मिलन हुआ था और मुझे पुनः चर्चा करते हुए आगम का गहरा अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। जीवन विकास के कुछ सूत्र प्रदत्त किए—श्रमनिष्ठा, सेवाभावना, संघ-संघपति के प्रति विनय व समर्पण, गुरु दृष्टि की जागरूकता से आराधना करना, अधिक से अधिक अप्रमत्त रहना। संयम जीवन को तप समाधि से अपने आप को भावित करने वाली कठोर साधना कर उत्तरोत्तर बढ़ती रही। विविध अभिग्रह धारण कर अपने जीवन को साधना की प्रयोग भूमिका बना, साधुत्व के संस्कार को केवल आदर्श नहीं अपितु जीवन को संवारते हुए जीने की कला प्रस्तुत की। जैन साधना पद्धति के तपोयोग की साधना कर जीवन के उत्कर्ष को प्राप्त किया। आगम में अनेक तपस्वी महापुरुषों का विवेचन प्राप्त होता है— इस वर्तमान काल में उनके संयम जीवन में सुदीर्घ तपस्या व अस्वाद वृत्ति की साधना के संस्मरण पढ़ने वालों को रोमांचित करते हैं।

हम तीनों भाई-बहनों के जीवन के विकास में, संस्कार निर्माण में, वैराग्य संवर्धन में, तथा ज्ञान-ध्यान में प्रवर्धमान बने रहने में उनकी प्रेरणा निरंतर बनी रहती। स्व. मुनि श्री अनिकेत कुमार जी स्वामी के संयम जीवन स्वीकार करने में अपूर्व योगदान था। उस पुण्यात्मा मातृश्री धैर्यप्रभाजी की आत्मा के प्रति उत्तरोत्तर आरोहण की मंगल कामना करता हूँ। उनकी आत्मा शीघ्र मोक्षश्री का वरण करें।

अनुभव के क्षण

● साध्वी प्रांजलयशा ●

कवि के शब्दों में-

“जिन्दगी घर किराए का है, एक ना एक दिन बदलना पड़ेगा।
मौत जब तुझको आवाज देगी, घर से बाहर निकलना पड़ेगा।।”

मुत्यु कब किसके द्वार पर दस्तक देती है, पता नहीं चलता। साध्वी धैर्यप्रभाजी का इस तरह तपस्या में दिवंगत होना प्रायः सबके लिए आश्चर्य का विषय बना। सूरतवासी आकर पूछने लगे, क्या हुआ था? क्या वे अस्वस्थ थीं?

साध्वी धैर्यप्रभाजी ने अपने जीवन में प्रभु महावीर की वाणी- “समयं गोयम! मा पमायए” को चरितार्थ किया है। संयम जीवन की छोटी सी पर्याय में प्रायः तपस्या कर आत्म उज्वलता को प्राप्त किया। तप के प्रति उनका अधिक रूझान था। उन्होंने उपवास, वर्षीतप, एकासन, नीवी, आयंबिल, प्रहर, 6 विगय वर्जन आदि तप किए। उन्होंने संयम जीवन में जागरूक रहकर आत्मोत्थान के लिए अच्छा प्रयत्न किया।

पूना यात्रा के अनुभव-

पूना यात्रा के दौरान मुझे उनके साथ रहने का अवसर मिला। वे अपने ढंग से जीवन जीती थीं। उनको पदार्थों के प्रति कोई आकर्षण नहीं था। उन दिनों उन्हें पात्री पर रखने के लिए एक प्लेट की आवश्यकता थी। जब हम गोचरी के लिए एक घर में गए वहां हमने एक प्लेट देखी। प्लेट उनकी पात्री पर फिट बैठ रही थी और वजन में भी हल्की थी। मैंने उनसे कहा, आपको प्लेट चाहिए तो ये प्लेट ले लो, आपके उपयोगी रहेगी। उनके एक संकल्प था कि प्रातिहारिक वस्तु भी

मांगकर नहीं लेती थी, कोई भावना भाता तो ग्रहण कर लेती। धैर्यप्रभाजी ने मुझेसे कहा, मुझे अपेक्षा तो है लेकिन आपने इस प्लेट के बारे में सामने से पूछा है, इसलिए यह मेरे संकल्प के अनुसार ग्रहण करने योग्य नहीं है।

कुछ दिन बाद एक भाई ने एक कार्टून को भावना भाई। धैर्यप्रभाजी ने उसे तत्काल जांच लिया और उस कार्टून से दो ढक्कन बनाए और प्लेट के स्थान पर इस कार्टून के ढक्कन का उपयोग किया। इस प्रकार वे अपने संकल्प के प्रति दृढ़ थीं।

उन्होंने संकल्प किया कि जब मैं आचार्य प्रवर के दर्शन मुम्बई में करूँ तो मुझे भेंट स्वरूप एक रजोहरण तैयार करना है। रजोहरण तैयार करने के लिए वह बड़ी जागरूक बन गईं। विहार के बाद विश्राम न करके वे रजोहरण बनाने में अपना समय लगाती थीं।

वे इस कार्य में इतनी लीन हो जाती थी कि उन्हें पता ही नहीं चलता कि जिस स्थान पर वो बैठी हैं वहां धूप आ गई है। वे धुन की धनी थीं। आखिर आचार्यप्रवर के दर्शन से एक दिन पूर्व उन्होंने रजोहरण तैयार कर दिया था। दृढ़ संकल्पित होने के कारण वे अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर पाईं। मैं उस दिवंगत आत्मा के प्रति मंगलकामना करती हूँ कि वह अध्यात्म की दिशा में अग्रसर होकर अपने लक्ष्य को शीघ्र ही प्राप्त करें।

समता की साधिका

● साध्वी मुक्तिश्री ●

समता की साधिका तपस्विनी साध्वी धैर्यप्रभा जी को निकट से देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनके जीवन की अनेक विशेषताएँ हैं। उनमें से कुछ विशेषताओं ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। उनकी जागरूकता, अर्हत वंदना, पात्र पात्रियों के कल्प के बारे में पूरी जागरूकता, जैसे के उन्होंने समाधि पात्र को काम लिया हो। उनकी सहिष्णुता बेजोड़ थी। मुझे यह प्रेरणा मिली कि हमें अपने नियमों को जागरूकता से पालन करना चाहिए, सहिष्णुता का विशेष अभ्यास करना चाहिए।

जीवन बहुत ही स्वावलम्बी था

● साध्वी हिमश्री ●

साध्वी धैर्यप्रभाजी को विक्रम संवत् 2081 में गुरु सन्निधि का सुअवसर प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में तपस्या प्रारम्भ की। उनका संकल्प इतना दृढ़ था कि मुझे गुरुदेव के दीक्षा कल्याणक के अवसर पर 51 दिन की तपस्या करना है। लेकिन विधि का ऐसा ही योग था कि 46 दिनों का तप करके अपनी जीवन यात्रा सम्पन्न की। वह साधक धन्य होता है जिसे अंतिम समय में गुरु की शरण मिलती है। मैंने देखा साध्वी धैर्यप्रभाजी का जीवन बहुत ही स्वावलम्बी था। उधना में एक महीने साथ में रहे। 9 महिनों से उनके तपस्या चल रही थी, उपवास, उपवास के पारणे में आयम्बिल करते। आयम्बिल करते तो स्वयं गोचरी वालों के साथ में जाते। एक दिन तो 10 माला उपर चढ़ना था, साध्वियों ने कहा हम लाकर दे देते हैं, उन्होंने कहा- नहीं महाराज! मैं तो स्वयं जाउंगी।

कृतज्ञता के भाव- कोई भी उनका सहयोग करते बार-बार कृतज्ञता ज्ञापित करते - आपने बहुत कृपा कराई। जब भी उनको उपदेश देने का कहते वो तैयार रहते, गीतिका भी बहुत अच्छी गाते थे।

अनासक्ति की चेतना जागृत थी-आयम्बिल की तपस्या में कैसी भी वस्तु मिले वे सहजभाव से, अनासक्त भाव से उसे खाते। कभी भी यह नहीं कहा कि यह वस्तु मुझे मिली नहीं है। यह सब उनकी अनासक्त चेतना का ही सुपरिणाम था।

स्वावलम्बी जीवन की प्रतिमान

● साध्वी उज्जलप्रभा ●

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर के चैनै चतुर्मास में पूज्यप्रवर की मंगलमय देशना सुन सपरिवार गुरु चरणों में समर्पित हो जाना, ऐसा अद्भुत इतिहास रचने वाली, दृढ़ मनोबली, स्वावलम्बी जीवन की प्रतिमान, तपस्या की तरणी में सवार होकर संयम जीवन को पार पहुंचाने वाली 'साध्वी धैर्यप्रभा जी' ने अल्पकालीन संयम पर्याय में ही अपना काम सिद्ध कर लिया। साध्वी धैर्यप्रभा जी की संयम के प्रति दृढ़ आस्था थी। उनका संयम जीवन सबको विस्मित करने वाला था। उनकी संयम चर्या विशेष संकल्पों से भावित थी। वे एक उत्साही साध्वी थीं। किसी भी कार्य को करने में तत्पर रहती थीं। रंगाई-सिलाई आदि कार्य सीखने की ललक रहती थी। वह धुन की पक्की थी। किसी भी कार्य का प्रारंभ करने पर जब तक वह पूर्ण नहीं हो जाता, विराम नहीं लेती थी। गृहित संकल्पों के पालन में दृढ़ता थी। अनेक संकल्पों में एक संकल्प था कि मांगी वस्तु नहीं लेना। केशलुंचन का समय- मांगी राख से नहीं करना। जब सहजतया उपलब्ध हुई तभी लुंचन कराया। उनमें सेवाभावना भी अच्छी थी। स्वरो में मधुरता थी, जब परिषद् में वह गाती तो सबको मुग्ध कर देती थी। धन्य उनकी दृढ़ता! धन्य उनका संयम जीवन! साध्वी धैर्यप्रभाजी का परम सौभाग्य रहा कि पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में 46 दिन की तपस्या में संयम यात्रा संपन्न करने का दुर्लभतम अवसर भी प्राप्त हुआ। दिवंगत आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना, शीघ्र ही परमलक्ष्य को प्राप्त करें।



साध्वीश्री धैर्यप्रभा जी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्गार

SĀDHVĪ DHAIRYA PRABHĀ - An Ideal To Restrained Life

● Sādhvī Tejasvī Prabhā ●

Life begins everything to end and ends everything to eventually begin. We were 5, then became 4, but again 5, then to 4 and now to 3. Amidst this journey of 5 to 3 a magic happened. We inclined spiritually. Though it is inconsolable to accept the reality, it even seems quite ahead of time, but reality is life began anew.

Sādhvī Dhairya Prabhā departed for ever, but not on a random note, but as an epitome of how to live a purposeful and restrained life. She wasn't free of challenges, infact she invited challenges and made sure she lives and wins them with sweet smile. Since her 1st to last breathe she visioned an unusual life. Her vigour, passion, zeal, aspiration were determined. My parents chemistry, their unity, their way of upbringing and sacrifice for their kids, their moral and ethical valves, their determination and what not, anything and everything they gave was definetly without expectation, but as an offspring it lets me ponder can I ever repay? For her kids, she made sure my dad brings three different toys for 3 of us, only because we three should share, play together and the eldest one would get chance to make 1st choice. This way she made sure we stay sharing, caring, and respecting each other. In regards to education, most of Bohra kids did their schooling from D.A.V., a well recognised school, then. But we three were enrolled to Sri Sarada Secondary School. When my cousins insisted her to let us 3 join D.A.V. she denied validating 3 reasons:

1. Discipline of SSSS is stern than D.A.V.
2. On the occasion of Diwali, SSSS kids aren't allowed to attend school in colour dress instead in school dress. Your Grandfather expired on Diwali. Our family, on date, doesn't encourage the tradition to buy new clothes on Diwali.
3. SSSS gives an alternative to parents to bring lunch during lunch break. She made sure she doesn't pack lunch early morning 7 but, walk to school in scorching sun with hot lunch boxes, so that we three study healthy.

For our higher studies she made Sādhvī Siddhārth Prabhā give 31 entrance exams, 21 entrance by me and Muni Kaushal Kumār attend FIITJEE. (An advance course of IIT). She made sure we attended varying coaching sessions based on our career options to grow intellectually and stand in line with the competitive world. But it wasn't so easily available to us, she made sure we attend these sessions travelling in local bus rather than car/auto. When my cousins asked why? She said:

1. Student life isn't luxury life.
2. They should know the true taste of life. They aren't burdened with payment of fee/school uniform/ washing clothes/utensils. Only burden is study. After education they have to join well established business of dad. So I want them to live true schooling.

When I expressed my wish to pursue my higher studies abroad, she came up with conditional approval:

1. Don't ever change your title without our consent.
2. Be an example not a sample.
3. I may reside miles (countries) apart, but can't fail to recognize your voice. Your voice would reveal if you are on right/wrong path. Even if you are on right path, we might want you back to home country at our will. Don't live

in a misconception that, we (Parents) have invested crores to your studies, who on this earth would let discontinue. To me your life is more valuable than career.

While the above description pictures the stern discipline on her kids, she certainly had a kind heart that melts for us. She gave me freedom to my life as well. She suggested me and Muni Kaushal (Kuldeep Bohra) to shop for our wedding at our will from U.S.A. In span of 4 years, we grabbed all we could excepting 3 things:

1. Bride - groom.
2. In laws wedding outfit.
3. Maternal family's wedding outfit. *(List of shopping would be intimated later)

Meanwhile, I was bending more towards spirituality, they even found a perfect match for me. In a state of flux, I asked mom what to do; she suggested me to become an ascetic. I was taken aback. I asked if this was your wish then why send abroad or search alliance for me? She smiled and replied – "It's our duty, today none can question and we can proudly say we gave you everything. Now you decide". This way I saw various versions of mom. Most inspirational version was when siddhārth prabhāji joined P.S.S. She unnumbered her resolutions. Back to back, be it food, delicacies, outfits, accessories, entertainment, list extends pages. Most inspiring was at the age of 36 she along with Aniket muni (Ashok Bohra) resolved to remain celibate unto death. Undeniably both parents proved to be true partners. After initiation from puṣpalatā to Dhairya prabhā she underwent drastic transformation. Since I wasn't by her side in her accetic life, on an unfrequent note I got updates of her life from laities, or other ascetics or relatives. Besides the updates from, Smriti Sabhā, I got to know:

1. She plucked her hair (लोच) by herself.
2. During her fast, when nuns reached her abode to sing self composed songs. She requested them to invest their time in reciting scriptures to her. So that both of their time remains productive.
3. Her fondness for english had no match. Even during fasts she requested Sādhvī Stuti prabhā to recite english songs of Ācārya Tulsī, so that she could by heart it.
4. She carried her handwritten copy Dasvaikālika meaning all through her journey.

Probably the more I get in contact with outer world, I would get to know more secrets of mom. Falling in line, verdicts of, all makes me feel proud, for she lived a true stern ascetic life. Though her life style wasn't just a sip of coffee, but she definetly awakened numerous lives, who were deep assleep. In school I was taught

माता पिता गुरु देव But she taught us, your **माता पिता** is गुरुदेव He is Dawn for you, Motivates you, Authority for you, One off for you, Defends for you, Mindful for you.

So remain undeniably dedicated to your Gurudev. This was the first and last message by her words and action. I am (we are) indebted to Ācāryā Mahāśramaṇa for pouring his unconditional blessings on our family. I wish we always be blessed with such blessings of Guru and parents. May our parents soul attain the supreme goal at the earliest.

वैराग्य से परिपूर्ण साध्वी धैर्यप्रभाजी

● साध्वी दीप्तिशशा ●

साध्वी धैर्यप्रभाजी की जब भी स्मृति करती हूँ तो सर्व प्रथम चैन्नई की पुष्पलता अशोक बोहरा की छवि उभर कर सामने आती है। कितनी खुशमिजाज, व्यवहार, कुशल, संस्कारित और 'अतिथि देवो भवः' उक्ति को सार्थक करती हुई विशिष्ट महिला थी। जब उनकी ज्येष्ठ पुत्री शीतल ने पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश किया, तब पुष्पलताजी से परिचय हुआ। धीरे-धीरे मेरे संसारपक्षीय परिवार का भी उनके परिवार से संपर्क बढ़ गया। जब भी हमारा चैन्नई जाना होता तो अशोक जी के घर रात रुकते और वे जब मुंबई आते तो हमारे यहाँ ठहरते।

सन् 2015 में जब हम चातुर्मास से पूर्व चैन्नई में विचरण कर रहे थे उस वक्त नेपाल में भूकम्प आया। उस वक्त गुरुदेव काठमांडों में थे और साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी वीरगंज (संभवतः) में विराज रहे थे। भूकम्प के समाचार सुन हमने पुष्पलताजी से पूछा कि साध्वी सिद्धार्थप्रभा जी कैसे हैं? कहां हैं? गुरुदेव के साथ या साध्वीप्रमुखाश्री जी के साथ? तब उन्होंने कहा- पता नहीं? मैंने कहा आप तो वहां से समाचार ले सकते हो। उन्होंने कहा गुरुदेव की कृपा से वो ठीक ही होंगे। मुझे क्या चिंता? एक क्षण के लिए मेरे मन में आया कि ये कैसी मां है, जो बेटी के समाचार के लिए चिंतित भी नहीं है। पर फिर ऐसा लगा कि धन्य है ऐसे श्रद्धानिष्ठ माता-पिता जो अपनी बेटी को गुरुचरणों में सौंप कर निश्चित हो गए।

परमपूज्य गुरुदेव ने महती कृपा कर चैन्नई चातुर्मास में अशोक बोहरा एण्ड फेमिली को दीक्षा प्रदान की। तब से मन में ललक, इच्छा थी कि मैं जल्दी से जल्द मुनि अनिकेत कुमारजी और साध्वी धैर्यप्रभाजी के दर्शन करूँ। मुनि श्री अनिकेत कुमार जी को तो नहीं देख सकी पर साध्वी धैर्यप्रभाजी से मुंबई चातुर्मास में मिलने का और कुछ दिन आस-पास रहने का भी अवसर प्राप्त हुआ। उनकी कुछ चर्यागत सोच से थोड़ा आश्चर्य भी हुआ। पहले तो उनका अद्भुत वर्षीतप जिसमें उपवास-एकासन का क्रम, फिर कुछ दिन उपवास-नीवी का क्रम और फिर उपवास-आर्यबिल का क्रम चला।

उनके चिन्तन की बात करूँ तो किसी भी वस्तु को मांगकर नहीं लेना। स्वावलंबन का जीवन जीते थे। यहां तक कि नन्दनवन (मुंबई चातुर्मास) में तो अपना लोच भी उन्होंने स्वयं ही

किया। जब मुझे ज्ञात हुआ कि वे लोच कर रहे हैं तो मैं भी कुछ सहयोग करने के लिए पहुंची पर देखा कि वो तो साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी से भी सहयोग नहीं ले रहे थे। पर उनके कुछ अवशेष केश लेने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ।

साध्वी धैर्यप्रभाजी में आगम वाचन की उत्कृष्ट इच्छा देखी। नन्दनवन में उत्तराध्ययन आगम आसानी से उपलब्ध नहीं हो रहा था। मेरे नेश्राय में एक प्रति थी। जब उन्हें पता चला कि मेरे पास उत्तराध्ययन है तो एक दिन उन्होंने मुझे निवेदन किया कि क्या मैं यह आगम ले सकती हूँ? तब मैंने उन्हें जगह बता दी कि यहां से जब भी चाहो तब ले सकते हो और यथास्थान रख देना। मैं कक्ष में रहती नहीं रहती पर कक्ष में जो भी होता वे उनको सूचित करते और कहते या मौन में व्यक्त करते कि साध्वी दीप्तिशशाजी से मेरी आज्ञा ली हुई है।

नन्दन वन में कुछ दिनों तक हमारी गोचरी साथ में थी। उनका जब पारणा होता तो कभी-कभी वे गोचरी करने के साथ चलते। जब उनके तपस्या के अनुरूप द्रव्य प्राप्त होता तो वे कितनी बार मेरे प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते। मैं कहती ये तो कोई खास बात नहीं पर वे फिर भी व्यक्त करते रहते।

ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने जीवन में वैराग्य और संयम का पुष्प खिलाया और तप की लता के सहारे चलकर आत्मिक विकास किया। मैंने कभी नहीं सोचा था कि नन्दनवन की वह पहली मुलाकात और थोड़े दिनों का साथ अंतिम मुलाकात हो जाएगी। कल्पना तो यहां तक थी कि गुरुदेव की कृपा से योगक्षेम वर्ष में परिवार के चारों सदस्य फिर से मिलेंगे और वह नजारा सभी देख अभिभूत होंगे। पर साध्वी धैर्यप्रभाजी तो इतनी शीघ्र प्रस्थान कर जाएगी सोचा भी न था। मुनि कौशलकुमार जी का सौभाग्य था कि वे अंत में मुनि अनिकेत कुमार जी के साथ थे और साध्वी सिद्धार्थप्रभा जी का सौभाग्य है कि वे अंत समय में साध्वी धैर्यप्रभाजी के पास थे। गुरुदेव की असीम कृपा से साध्वी धैर्यप्रभाजी ने परिवार संग दीक्षा ग्रहण कर इतिहास रचा तो वहीं गुरु चरणों में अपना जीवन अर्पण कर एक और स्वर्णिम पृष्ठ रच दिया। ऐसे अप्रमत्त, स्वावलंबी, वैराग्य से परिपूर्ण साध्वी धैर्यप्रभा जी की आत्मा को शीघ्र सिद्ध गति प्राप्त हो यही मंगलकामना है।



साध्वीश्री धैर्यप्रभा जी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्गार

संयम जीवन कर सफल

● मुनि कमल कुमार ●

नन्दन वन के तुल्य है, भैक्षव गण की ख्यात।
वीतराग सदृश मिले, महाश्रमण गणनाथ।
महाश्रमण गुरुचरण में, दीक्षा सपरिवार।
महाश्रमण सान्निध्य में, की है जय जय कार।।
पति पत्नी सुत पुत्रियां, पांचों बड़े विनीत।
पति-पत्नी पर भव चले, गाएं मंगल गीत।।
संयम जीवन कर सफल, धैर्यप्रभा जी आज।।
तप में देवलोक सुन करके, होता सात्विक नाज।।
चलते फिरते कर लिया, भव-भव से कल्याण।।
मुनि अनिकेत, धैर्यप्रभा, चले बढ़ा गणशान।।
मुनि कौशल सिद्धार्थप्रभा, तेजस्वी कुल तीन।
उनकी गण को देन है, तीनों बड़े कुलीन।।
मात-पिता गुरुदेव हैं, सतत रहे यह ध्यान।
उनके आशीर्वाद से, होगा आत्मोत्थान।।
स्मृति सभा में कर रहे, हृदय खोल गुणगान।
जल्दी से जल्दी वरे, सतिवर पद निर्वाण।।

गुरुदेव आपके चरणों में

● साध्वी सुनन्दाश्री ●

शक्ति का स्रोत बहे कल-कल गुरुदेव आपके चरणों में।
भक्ति से भवित हम पल-पल गुरुदेव आपके चरणों में।
मैय्या की नैय्या पार लगी गुरुदेव आपके चरणों में।।
परिवार सहित संयम पथ पर, आरूढ़ महाव्रत के रथ पर।
भगिनी भ्राता अरू मात पिता सज धज आए आभरणों में।।
हम सबमें सद् संस्कार भरें, कैसे उपकारों से उबरें।
मां की ममता का माप नहीं, हम कह नहीं सकते वरणों में।।
अनिकेत धैर्य की संतानें, अपना सोभग्य प्रबल मानें।
इतिहास अमर यह रह पाए, तेरापथ के संस्मरणों में।।
आध्यात्मिक पथ संचरण करें, लक्षित मंजिल का वरण करें।
आत्मा का ऊर्ध्वारोहण हो, शुभ भाव रहे आचरणों में।।
अनिकेत बने सुरपुर गामी अव धैर्यप्रभा भी अनुगामी।
गुरुदेव आप ही मात-पिता सब कुछ अर्पण श्री चरणों में।।
तर्ज : महावीर तुम्हारे चरणों में

स्वर्ण कसौटी ज्यों निखरी

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●

शत-शत वंदन नेमानंदन, किया अमित उपकार है।
किन शब्दों में व्यक्त करें प्रभो! दिल से हम आभार हैं।।
चेन्नई पावस में दे दीक्षा, किया अशोक सबको भगवन,
बन गई पुष्पा धैर्यप्रभा कौशल तेजस्वी भाई बहन।
महाश्रमण बरतारे तर गया, यह बोहरा परिवार है।।
सौभाग्य थी धैर्यप्रभाजी, सेवा का अवसर पाया,
नंदन वन मुंबई और सूरत पावस मौका मन भाया।
लगातार दो पावस में, प्रभु सन्निधि का उपहार है।।
दूढ़ सकल्पी धैर्यप्रभाजी, तप समरांगण में उतरी,
वर्षीतप में आयम्बिल तप स्वर्ण कसौटी ज्यों निखरी।
छय्यालीस उपवास अमास, सोमवती भव पार है।।
बद्धांजलि कर श्रद्धार्पण हम, सद्गुण की स्मृतियां करते,
दिया सहाज जिन जिन सतियों ने, भक्ति से वंदन करते।
महाउपकारी भैक्षवशासन, पग पग जय-जयकार है।।
तर्ज : कलियुग बैठा मार कुंडली

तप से जीवन

महकाया

● साध्वी ऋद्धिप्रभा ●

तप से जीवन महकाया, गण का गौरव विकसाया।
आत्मा को शुद्ध बनाया, धैर्यप्रभाजी।।
सुख सुविधाएं छोड़ी सारी, कठिन राह को अपनाया,
परिकर संग दीक्षा ले तुमने महाश्रमण साया पाया।
तप की गंगा मन भाई, हर दिन तुम इसमें न्हायी,
अन्तर्मन में हरसाई---धैर्यप्रभाजी।।
रिश्तों नातों को त्यागा, आत्मा से जोड़ी इकतारी,
वचनयोग से दूरी वाणी संयम से मैत्री प्यारी।
आगम स्वाध्याय सुहाया, बंधन को शिथिल बनाया,
संयम का स्वाद भाया---धैर्यप्रभाजी।।
सूरत चौमासे में तेरी, जागी कैसी पुण्याई,
गुरुकुलवासी बनकर तुम आत्मवासी बन सुख पाई।
इक इक कर कदम बढ़ाया, सपना साकार बनाया,
कर्मों का भार घटाया---धैर्यप्रभाजी।।

बनी उत्रुण सिद्धार्थप्रभा, मां के इच्छित अरमान फले,
कोशल से संयम तेजस्वी बना लिया गुरु छांव तले।
अनिकेत सफल बन पाया, सार्थक निज नाम बनाया,
पौरुष का दीप जलाया---धैर्यप्रभाजी।।

तर्ज : प्रज्ञा के दीप जलेंगे

गण गौरव महकाया

● साध्वी शरदयशा ●

गण गौरव महकाया, गुरुवर चरणन में।
संयम सफल बनाया, गुरुवर चरणन में।
गुरुवर चरणन में, गण नंदनवन में, भैक्षव शासन में।।
धन तेरस के शुभ दिन तुमको, दीक्षा का आदेश मिला था।
पुत्री सुत पति संग चैन्नई में, संयम का शुभ सुमन खिला था।
सिद्धार्थ प्रथा ने बुलाया, गुरुवर चरणन में।।
लगभग छः वर्षों की अवधि, उत्तम समता अल्प थी उपधि।
तन से मानो मोह नहीं था, सदा निर्जरा से थी प्रीति।
पौरुष दीप जलाया, गुरुवर चरणन में।।
गुरु दीक्षा कल्याणक अवसर, इक्यावन तप भेंट शुभंकर।
किस ने सोचा निज जीवन को, भेंट चढ़ा देगी वो तपकर।
संकल्प अटूट निभाया, गुरुवर चरणन में।।
परम कुपालु गुरु उपकारी, भव-भव में रहना आभारी।
प्रमुखाश्रीजी की वत्सलता, सींच रही थी तप की क्यारी।
सतियों ने साज दिलाया, सूरत में इतिहास बनाया,
गुरुवर चरणन में।।

तर्ज : तूने मुझे बुलाया शोरावालिया

जीवन धन्य तुम्हारा

● साध्वी हेमरेखा ●

जीवन धन्य तुम्हारा।
तप सरिता में नहाकर तुमने कल्मष दूर उतारा।।
पहले दिन उपवास दूसरे दिन आयंबिल चलता,
साढ़े दस महिनो से लगातार तप तरुवर पलता।
उस पर यह बावन दिन का तप वंदन बार हजारों।।
महातपसी गुरु महाश्रमण का मंगल सुखमय साया,
साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा का शुभाशीष वर पाया।
साध्वीवर्या महर नजर पा चमका भाग्य सितारा।।
उच्च भावना उच्च साधना उच्च मनोबल तेरा,
क्षुधा परीषह सहफर तुमने तोड़ा कर्मन घेरा।
बार-बार अनुमोदन करता साध्वी परिकर सारा।।
तप को सखा बना दुर्लभ जीवन का सार निकाला,
अनासक्ति की सघन साधना पाया दिव्य उजाला।
हिम्मत की कीमत जग में धारा जो पार उतारा।।
हेमरेखा मुक्तिश्री प्रसन्नप्रभा जी आज बधाये,
धैर्यप्रभा जी! बढ़ो चढ़ो तप सरणी मंगल गाये।
सेवाभावी बेटी का सहयोग मिला मनहारा।।

तर्ज : संयममय जीवन हो

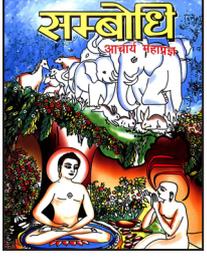
प्राचीन युग की परम्परा का स्मरण कराने वाली तप चेतना

● साध्वी जिनप्रभा, साध्वी प्रबुद्धयशा ●

साध्वी धैर्यप्रभाजी धुन की धुनी साध्वी थी। पारिवारिक और भौतिक सुख-वैभव को त्याग कर वे परिवार सहित संयम सुखों का आस्वाद लेने के लिए भैक्षव शासन की नौका में आरूढ़ हुईं। लगभग छः वर्षों के संयम पर्याय में उन्होंने अपने त्याग वैराग्य की सुवास धर्मशासन में फैलाई। उनकी तप चेतना प्राचीन युग की परम्परा का स्मरण कराने वाली है। तपस्या के साथ-साथ उनकी सेवा भावना और ज्ञान के प्रति आकर्षण भी उल्लेखनीय है। उनके चेहरे पर मौन और मुस्कान का अद्भुत योग था। उन्होंने 'अप्पोवही' आगम सूक्त को अपने जीवन में चरितार्थ किया। चिकित्सा के इस वातावरण में दवाई का प्रयोग न करना उनकी दृढ़ता का निदर्शन है।
वे कर्मठ, उत्साही और स्फूर्तवान साध्वी थीं। साध्वोचित हर कार्य को सीखने और करने की उनमें ललक थी। उनके भीतर गुणदृष्टि और प्रमोदभाव था। वे कभी किसी के प्रति शिकायत भाव नहीं रखती, सबके प्रति अहोभाव रखती थीं।
लगभग 50 वर्ष की आयु में दीक्षित होकर भी उन्होंने साधना में उत्कर्ष लाने का आयास किया। वे अपनी चर्या के प्रति सजग थीं। उनके मन में गण-गणपति के प्रति अटूट आस्था थी। उनको देखकर ऐसा अनुभव हुआ कि उन्हें शरीर के प्रति नहीं आत्मा के प्रति आकर्षण था। प्राप्त सुविधाओं का भोग न कर उन्होंने कठोर चर्या का जीवन जीया।
तपस्या के दौरान उनकी प्रसन्नता विलक्षण थी। उन्होंने बावन की तपस्या का लक्ष्य बनाया पर छियालीस की तपस्या में वे अकस्मात् कालधर्म को प्राप्त हो गईं। उनके आध्यात्मिक उत्थान के प्रति शुभांशा करते हैं।



संबोधि



गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

व्रतों की साधना में संलग्न श्रावक भी मृत्यु से डरे नहीं। वह जब देख ले कि देह जीर्ण हो रहा है, तब मृत्यु से पहले ही मौत की तैयारी कर ले। इस तैयारी का नाम संलेखना है। इसमें वह भोग्य पदार्थों से अपने मन को हटाता है। उसका चिंतन होता है- 'मैंने संसार के समस्त पदार्थों का अनन्त कालचक्र में उपभोग किया है। यह सब उच्छिष्ट है। इन उच्छिष्ट पदार्थों में मेरा क्या आकर्षण ? विज्ञ पुरुषों के लिए वान्त भोजन स्वीकार्य नहीं होता। वह यों सोच सारहीन पदार्थों से जीवन-निर्वाह करने लगता है। इसके बीच कभी एक दिन का उपवास, कभी दो दिन का उपवास, कभी एक बार भोजन, कभी केवल रोटी खाकर पानी पीकर रह जाना आदि क्रियाओं के द्वारा शरीर को आमरण अनशन के लिए प्रस्तुत कर लेता है।

अनशन आत्महत्या नहीं, किन्तु स्वेच्छापूर्वक देह का त्याग है, देह के ममत्व का विसर्जन है। देह के प्रति आकर्षण बढ़ता है तब तक व्यक्ति मौत से कतराता रहता है। वह डॉक्टर और दवाइयों के आश्रित पलता है किन्तु जब मोह विलीन होता है तभी अनशन स्वीकृत किया जा सकता है। अमरत्व की यह सबसे सुन्दर संजीवनी है कि देह के प्रति ममत्व का विसर्जन किया जाए। जैन दर्शन हर अवस्था में अनशन की अनुमति नहीं देता। उसका कथन है कि जब साधक को यह लगे कि शरीर शिथिल हो रहा है, उससे ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य की आराधना होनी कठिन है, तब वह खान-पान के विसर्जन से देह- विसर्जन की बात सोचता है। इस दिशा में वह क्रमशः गति करता है और एक दिन संपूर्ण त्याग कर समाधि-मरण को प्राप्त करता है।

३९. संयमस्य प्रकर्षाय, मनोनिग्रहहेतवे।

प्रतिमा: प्रतिपद्येत, श्रावकः साधनारुचिः॥

संयम के उत्कर्ष और मन का निग्रह करने के लिए साधना में रुचि रखनेवाला श्रावक प्रतिमाओं को स्वीकार करे।

४०. दर्शनप्रतिमां तत्र, सर्वधर्मरुचिर्भवत्।

दृष्टिमाराधयंल्लोकः, सर्वमाराधयेत्परम्॥

४१. व्रतसामायिकपौषधकायोत्सर्गा मिथुनवर्जनकम्।

सच्चित्ताहारवर्जनस्वयमारम्भवजन चापि॥

४२. प्रेष्यारम्भवर्जनमुद्दिष्टभक्तवर्जनञ्चापि।

श्रमणभूत एकादश प्रतिमा एता विनिर्दिष्टाः॥

(त्रिभिर्विशेषकम्)

श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएं हैं-

१. दर्शन-प्रतिमा दर्शन प्रतिमा को स्वीकार करने वाला सब धर्मो-साधना के सभी प्रकारों में रुचि रखता है। वृष्टि की आराधना करने वाला सबकी आराधना कर लेता है। २. व्रत-प्रतिमा ३. सामायिक-प्रतिमा ४. पौषध-प्रतिमा ५. कायोत्सर्ग-प्रतिमा ६. ब्रह्मचर्य- प्रतिमा ७. सच्चित्ताहारवर्जन-प्रतिमा ८. स्वयं आरंभवर्जन-प्रतिमा ९. प्रेष्यारंभवर्जन-प्रतिमा १०. उद्दिष्टभक्तवर्जन-प्रतिमा: ११. श्रमणभूत-प्रतिमा।

प्रतिमा का अर्थ है अभिग्रह-अमुक प्रकार की प्रतिज्ञा, संकल्प। उपासक की ग्यारह प्रतिमाएं हैं। उनका विवरण इस प्रकार है :

दर्शनश्रावक :

यह पहली प्रतिमा है। इसका कालमान एक मास का है। इसमें सर्वधर्म विषयक रुचि होती है, किन्तु अनेक शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण, प्रत्याख्यान, पौषधोपवास आदि का आत्मा में प्रतिष्ठापन नहीं होता। केवल सम्यग् दर्शन उपलब्ध होता है।

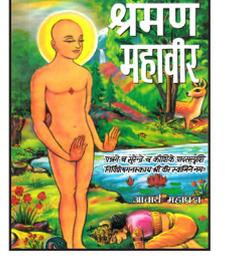
(क्रमशः)

श्रमण महावीर



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बिम्ब और प्रतिबिम्ब



एक राजा ने पांच धर्माचार्यों को आमंत्रित कर कहा, 'मैं गुरु बनाना चाहता हूं। पर मेरा गुरु वह होगा जिसका आश्रम सबसे बड़ा है।' राजा आश्रम देखने निकला। एक आश्रम पांच एकड़ में फैला था, दूसरा दस एकड़ में, तीसरा बीस एकड़ में और चौथा चालीस एकड़ में। राजा ने चारों आश्रम देख लिये। एक आश्रम बाकी रहा। बूढ़ा धर्म-गुरु राजा को नगर से बाहर एक पेड़ के नीचे ले गया। राजा के पूछने पर बताया-

'मेरा आश्रम यही है।'

'इसकी सीमा कहां तक है, महाराज ?'

'जहां तक तुम्हारी दृष्टि पहुंचती है और जहां नहीं भी पहुंचती है, वहां तक।' उसका आश्रम सबसे बड़ा था। वह राजा का गुरु हो गया।

भगवान् साधना के लिए कहीं आश्रम बांधकर नहीं बैठे। वे स्वतंत्रता के लिए निकले, निरंतर परिव्रजन करते रहे। भूमि और आकाश-दोनों पर उनका अबाध अधिकार हो गया।

वे बाह्य जगत् में भूमि का स्पर्श कर रहे थे और अन्तर् जगत् में अपनी आत्मा का। वे बाह्य जगत् में लोक-मान्यताओं का आकलन कर रहे थे और अन्तर् जगत् में सार्वभौम सत्यों का।

उस समय लोग शकुन में बहुत विश्वास करते थे। जो लोग सामाजिक अपराध करने के लिए जाते, वे भी शकुन देखते थे। चोर और डाकू अपशकुन होने पर न चोरी करते और न डाका डालते।

१. पूर्णकलश राढ़ देश का सीमांतवर्ती गांव है। भगवान् वहां से प्रस्थान कर मगध में आ रहे थे। दो चोर उन्हें मार्ग में मिले। वे आदिवासी क्षेत्रों में चोरी करने जा रहे थे। भगवान् को देख वे कुद्ध हो गए। वे भगवान् के पास आए। उन्होंने भगवान् को गालियां देकर क्रोध को थोड़ा शांत किया। फिर बोले, 'नग्न और मुंड श्रमण! आज तुमने हमारा मनोरथ निष्फल कर दिया।'

'मैंने क्या निष्फल किया?'

'हम चोरी करने जा रहे थे, तुमने सामने आकर अपशकुन कर दिया।'

'चोरी करना कौन-सा अच्छा काम है, जिसके लिए शकुन देखना पड़े।'

'चोरी अच्छा काम नहीं है, चोरी अच्छा काम नहीं है' इसकी पुनरावृत्ति में दोनों भान भूल गए।

भगवान् अन्धविश्वास के प्रहार से मुक्त होकर आगे बढ़ गए।

२. भगवान् को वैशाली में भी अन्धविश्वास का शिकार होना पड़ा। वे लुहार के कारखाने में ध्यान कर खड़े थे। लुहार छह महीनों से बीमार था। वह स्वस्थ हुआ। अपने यन्त्रों को लेकर वह काम करने के लिए कारखाने में आया। उसने देखा, कोई नंगा भिक्षु कारखाने में खड़ा है। अपशकुन का विचार बिजली की भांति उसके दिमाग में कौंध गया। वह कुद्ध होकर अपने कर्मचारियों पर बरस पड़ा।

'इस नग्न भिक्षु को यहां ठहरने की अनुमति किसने दी?'

'हम सबने।'

'यह मुझे पसन्द नहीं है।'

'हमें पसन्द है।'

'इसे निकाल दो।'

'हम नहीं निकालेंगे।'

'तुम निकाल दिए जाओगे।'

'यह हो सकता है।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण
समाधि-वृद्धि का
प्रयोग



पृथक्त्व वितर्क सविचारी

जब तक द्रव्य के अनेक पर्यायों का अनेक दृष्टियों नयों से चिन्तन किया जाता है और पूर्व-श्रुत का आलम्बन लिया जाता है तथा शब्द से अर्थ में और अर्थ से शब्द में एवं मन, वचन और काया में से एक-दूसरे में संक्रमण किया जाता है, शुक्लध्यान की उस स्थिति को पृथक्त्व वितर्क सविचारी कहा जाता है।

एकत्व वितर्क अविचारी

जब एक द्रव्य के किसी एक पर्याय का अभेद दृष्टि से चिन्तन किया जाता है और पूर्व-श्रुत का आलम्बन लिया जाता है तथा शब्द, अर्थ एवं मन, वचन और काया में से एक-दूसरे में संक्रमण नहीं किया जाता, शुक्लध्यान की उस स्थिति को एकत्व वितर्क अविचारी कहा जाता है।

सूक्ष्मक्रिया अनिवृत्ति

जब मन और वाणी के योग का पूर्ण निरोध हो जाता है और काया के योग का पूर्ण निरोध नहीं होता-श्वासोच्छ्वास जैसी सूक्ष्म क्रिया शेष रहती है, उस अवस्था को सूक्ष्म क्रिया कहा जाता है। इसका निवर्तन-हास नहीं होता, इसलिए यह अनिवृत्ति है।

समुच्छिन्नक्रिया अप्रतिपाती

जब सूक्ष्म क्रिया का भी निरोध हो जाता है उस अवस्था को समुच्छिन्न क्रिया कहा जाता है। इसका पतन नहीं होता इसलिए यह अप्रतिपाती है।

शुक्लध्यान के चार लक्षण हैं-

१. अव्यय- क्षोभ का अभाव।
२. असम्मोह- सूक्ष्म पदार्थ विषयक मूढता का अभाव।
३. विवेक- शरीर और आत्मा के भेद का ज्ञान।
४. व्युत्सर्ग- शरीर और उपधि में अनासक्त भाव।

शुक्लध्यान के चार आलम्बन हैं-

१. क्षान्ति- क्षमा।
२. मुक्ति- निर्लोभता।
३. आर्जव- सरलता।
४. मार्दव- मृदुता।

शुक्लध्यान की चार अनुप्रेक्षाएं हैं-

१. अनन्तवृत्तित्ता- अनुप्रेक्षा-संसार-परम्परा का चिन्तन करना।
२. विपरिणाम- अनुप्रेक्षा-वस्तुओं के विविध परिणामों का चिन्तन करना।
३. अशुभ-अनुप्रेक्षा- पदार्थों की अशुभता का चिन्तन करना।
४. अपाय-अनुप्रेक्षा- दोषों का चिन्तन करना।

निष्कर्ष की भाषा में कहा जा सकता है कि किसी एक आलम्बन पर मन को केन्द्रित करना अथवा मन, वाणी और शरीर के निरोध करने को ध्यान कहा जाता है। निर्जरा तत्त्व में जिस ध्यान का उल्लेख है, उसका संबंध शुभ ध्यान से है चूंकि अशुभ ध्यान में मन की एकाग्रता होती है किन्तु वह चेतना के विकास में योगभूत नहीं बनती इस दृष्टि से आर्त और रौद्र ध्यान का निर्जरा के भेदों में ग्रहण नहीं हो सकता।

दैनिक जीवन में प्रेक्षाध्यान

जैन योग के पुनरुद्धारक आचार्य श्री महाप्रज्ञ का एक अवदान है प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षाध्यान पद्धति का केन्द्रीय तत्त्व है-वीतरागता। प्रेक्षाध्यान का प्रयोग दो प्रकार का है-१. काल-प्रतिबद्ध २. काल-अप्रतिबद्ध।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री जयचंदजी (रावलियां) दीक्षा क्रमांक: 132

मुनिश्री साहसिक और बड़े सेवाभावी थे। उसके साथ आपने बहुत तपस्याएं भी कीं, जो इस प्रकार हैं, उपवास/140, 2/131, 3/21, 4/19, 5/10, 6/2, 7/4, 8/4, 9/3, 10/1, 18/1, 21/2, 22/1, 23/1, 51/1।

- साभार: शासन समुद्र -

संघीय समाचारों का मुखपत्र

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें
abtyp@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्



भाई-बहन के त्यौहार रक्षाबंधन पर विविध आयोजन

साउथ हावड़ा

अभातेयुप द्वारा निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा प्रेक्षा विहार, विवेक विहार में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण के साथ हुआ। संस्कारक प्रवीन सिंघी, पवन बैगाणी एवं बजरंगलाल डागा ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित कराया। अध्यक्ष गगन दीप बैद ने सभी का स्वागत किया। संस्कारकों ने उपस्थित सभी को मंगल मंत्र सुनाते हुए रक्षाबंधन जैन संस्कार विधि से मनाने की प्रेरणा दी। मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा भारतीय संस्कृति में रक्षाबंधन पर्व का बहुत बड़ा महत्व है। रक्षाबंधन बहन और भाई का पवित्र त्यौहार है। रक्षाबंधन का पर्व परस्पर अटूट विश्वास का पर्व है, इससे परस्पर प्रेम सौहार्द, वात्सल्य का विकास होता है।

मुनिश्री ने आगे कहा श्रावकों की प्रत्येक क्रिया में जैनत्व झलकना चाहिए। जैन संस्कार विधि के प्रयोग से व्यक्ति अनावश्यक हिंसा से बच सकता है, जैन संस्कार पुष्ट होते हैं। कार्यक्रम में प्रबंध समिति के सदस्य, कार्यसमिति सदस्य, साधारण सदस्य, किशोर मंडल के सदस्य सहित श्रावक समाज की उपस्थिति रही। संयोजक अजित दुगड़, नवीन सेठिया, ऋषभ सिपानी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपने श्रम का नियोजन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार जैन संस्कार विधि के संयोजक प्रवीन बैगाणी ने किया।

राजाजीनगर

तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा सेवा सारथी उपक्रम के अंतर्गत रक्षाबंधन के पावन अवसर पर श्रीरामपुराम स्थित सरकारी स्कूल में 'नीड बेस इंडिया' द्वारा संचालित कन्या छात्रावास में रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। ज्ञातव्य है कि तेयुप द्वारा इसी प्रांगण में वर्ष 2022 में स्व. बाबूलाल गन्ना की पुण्य स्मृति में कन्या आश्रय का उद्घाटन किया गया है जहाँ पर लगभग 80 कन्या प्रवासित हैं। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक

उच्चारण से करते हुए तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने छात्रावास की कन्याओं को रक्षाबंधन की विशेषताएं से अवगत कराया। सभी कन्याओं ने परिषद् के युवा साथियों का तिलक से वर्धापन करते हुए कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा। इस अवसर पर मानव सेवा संयोजक मुकेश भंडारी एवं युवा साथियों की उपस्थिति रही।

साउथ कोलकाता

अभातेयुप द्वारा निर्देशित जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, साउथ कोलकाता में किया गया। कार्यशाला का संचालन संस्कारक महेंद्र दूगड़ द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ किया गया। उन्होंने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन का त्यौहार मनाने की प्रक्रिया को सरल शब्दों में समझाया। जैनत्व संस्कारों के बीजारोपण हेतु तेयुप द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में ११ भाई-बहन के जोड़ों ने सहभागिता दर्ज कराई। परिषद् की ओर से अध्यक्ष मोहित बैद ने स्वागत व मंत्री कुलदीप लूनिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

तोशाम

तोशाम ज्ञानशाला द्वारा रक्षाबंधन-अध्यात्म के संग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षिकाओं द्वारा मौली के धागों पर 11 बार नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर गांठ लगाकर राखी तैयार की गई। प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंत्रों का उच्चारण करते हुए सभी ज्ञानार्थियों ने एक दूसरे को तिलक लगाकर एवं राखी बांधी। मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने सभी को रक्षा सूत्र बांधने के महत्व को बताया। उन्होंने सभी को नमस्कार महामंत्र द्वारा एक विशेष आत्मरक्षा कवच बनाना सिखाया और उसका महत्व बताते हुए कहा कि यह रक्षा कवच हर क्षेत्र में, हर प्रकार से हमें सुरक्षा प्रदान करता है। कार्यक्रम में प्रशिक्षिका सलोनी जैन, सहयोगी नैसी जैन, बबीता जैन, साक्षी जैन, महिला मंडल कोषाध्यक्ष सूचिका जैन एवं 14 ज्ञानार्थियों की उपस्थिति रही।

कांटाबांजी

अभातेयुप निर्देशानुसार तेरापंथ युवक परिषद् कांटाबांजी द्वारा तेरापंथ

भवन में समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी एवं समणी क्षान्तिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से संस्कारक अंकित कुमार जैन द्वारा रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ समणी जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। जैन संस्कारक अंकित कुमार जैन ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन मनाने की जानकारी विधि सहित प्रदान की। इस अवसर पर भाई-बहन के 25 जोड़ों ने राखी बांधी। तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष बिकाश जैन ने सभी के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, ज्ञानशाला के बच्चे एवं श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। तेरापंथ युवक परिषद् मंत्री यश जैन ने आभार व्यक्त किया।

चेन्नई

मुनि हिमांशुकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में तेरापंथ सभा भवन, साहूकारपेट, चेन्नई में 'आध्यात्मिक संकल्प राखी' का कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनिश्री ने 'आत्मा का रक्षा कवच' विषय पर उपस्थित जनमानस को सम्बोधित करते हुए कहा कि रक्षा बंधन में जहाँ भाई बहन को सुरक्षा देता है, वहीं बहन भाई के सुखी स्वास्थ्य की कामना करती है। भौतिकता के मार्ग पर व्यक्ति जहाँ शरीर, धन, परिवार, पदार्थों की सुरक्षा के इर्द गिर्द घूमता है, वहीं अध्यात्म के मार्ग पर चल कर वह आत्म रक्षा की ओर चरणान्यास करता है। उसके लिए वह इन्द्रियों और मन को संयमित करता है। धर्म की शरण को स्वीकार करता है, नवकार महामंत्र के जप से अपने आप को सुरक्षा कवच से सुरक्षित करता है। मुनि हेमंतकुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर काफी भाई बहन के जोड़ों ने राखी के इस अनमोल रिश्ते को संकल्प की डोरी से स्वीकार किया। रोचक एवं मनमोहक आध्यात्मिक राखी बनाने में कार्यसमिति सदस्य पूजा भंडारी एवं मंत्री हेमलता नाहर का सराहनीय योगदान रहा।

फरीदाबाद

अभातेयुप निर्देशित रक्षा बंधन कार्यशाला तेरापंथ भवन के प्रांगण में

जैन संस्कार विधि से संपादित कराई गई। इसमें तेयुप फरीदाबाद के अध्यक्ष, मंत्री, सह मंत्री एवं ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं की गरिमामय उपस्थिति रही। संस्कारक जितेंद्र लूनिया ने जैन संस्कार विधि के बारे में जानकारी देते हुए ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों को प्रेरणा दी की वे रक्षाबंधन जैन संस्कार विधि से मनाएं। मंगल मंत्रोच्चार के पश्चात संस्कारक आलोक सुराना ने मंगल भावना यंत्र के बारे में जानकारी देते हुए उसकी स्थापना करवाई। कार्यक्रम में तेयुप फरीदाबाद के अध्यक्ष, पदाधिकारी एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही।

भीलवाड़ा

तेरापंथ युवक परिषद् संस्था भीलवाड़ा ने रक्षाबंधन के उपलक्ष में रात्रिकालीन भाई-बहन जोड़े की प्रतियोगिता साध्वी कीर्तिलता जी ठाणा-4 के सान्निध्य में आयोजित की गई। प्रतियोगिता में 20 भाई-बहन के जोड़ों ने भाग लिया। जिसमें प्रथम स्थान विधित चोरड़िया - जीविका चोरड़िया, द्वितीय स्थान राकेश काठेड़ - मेना कोठारी, तृतीय स्थान महावीर बाबेल - स्नेहलता झाबक ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के संयोजक लोकेश बोथरा एवं सुधीर दक ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया। कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष शीर्षक नेनावटी ने एवं महिला मंडल मंत्री अमिता बाबेल ने किया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति आदि संस्थाओं के पधाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर कार्यक्रम को सफल बनाया। आभार ज्ञापन अध्यक्ष पीयूष रांका ने किया।

रायपुर

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा भाई-बहन के पवित्र त्यौहार रक्षाबंधन को आध्यात्मिकता के समावेश के साथ किस रूप में मनाया जाये पर जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में रायपुर स्थित श्री लाल गंगा पटवा भवन में किया गया। संस्कारक अनिल दुगड़ व सूर्य प्रकाश

बैद द्वारा उपस्थित जन समूह को जैन संस्कार विधि के महत्व को समझाया गया। कार्यशाला में जैन संस्कार विधि द्वारा रक्षाबंधन की संपूर्ण विधि-मंत्रोच्चार का प्रयोग करके बताया गया। कार्यशाला में विशेष सहयोग विकास बरलोटा व आभार वीरेंद्र डागा द्वारा किया गया।

उधना

अभातेयुप का महत्वपूर्ण आयाम जैन संस्कार विधि से ज्ञानशाला के बच्चों के साथ रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया गया। संस्कारक अनिल सिंघवी, कमलेश डांगी व मनोज बाबेल ने सामूहिक नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर कार्यक्रम की शुरुआत की। सभी को मंगल भावना यंत्र के बारे में जानकारी देते हुए विविध मंत्रों के साथ कार्यक्रम को संपादित करवाया। सभा अध्यक्ष निर्मल चपलोट, मुकेश बाबेल एवं ज्ञानशाला प्रभारी अरविंद कच्छरा ने अपने भाव व्यक्त किए। ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका अनीता कावड़िया ने आभार ज्ञापन किया।

सरदारपुरा

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् सरदारपुरा द्वारा अमरनगर भवन में साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया। संस्कारक कैलाश तातेड़, गौरव बरमेचा, ऋषभ श्यामसुखा ने रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से जैन मंत्रोच्चार के साथ मनाने की जानकारी विधि सहित प्रदान की। इस अवसर पर आयोजन स्थल पर भाई बहनों ने विधिपूर्वक राखी बांधी। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। परिषद् सदस्य योगेश तातेड़ और गौतम कोठारी ने मंगल भावना यंत्र की विधिवत स्थापना की।

तेयुप सरदारपुरा अध्यक्ष मिलन बांठीया ने बताया कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् की शाखाएं पूरे देश में जैन संस्कार विधि जन-जन की विधि बने इस ओर प्रयासरत हैं। इस अवसर पर साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि गृहस्थ जीवन में जैन संस्कार विधि श्रावक समाज को अनावश्यक हिंसा व बाहरी आडंबर से बचा सकती है।



222वें भिक्षु चरमोत्सव पर विशेष

तेरापंथ के आद्य प्रणेता आचार्य भिक्षु शुद्धाचार के पोषक थे

● मुनि कमल कुमार ●

आचार्य भिक्षु का जन्म राजस्थान के मारवाड़ के कांठा विभाग के कंटालिया नगर के सकलेचा परिवार में पिता बल्लू शाह, माता दीपां की कुक्षि से विक्रम संवत् 1783 आषाढ शुक्ला त्रयोदशी के दिन 1 जुलाई 1726 मंगलवार को सिंह स्वप्न से हुआ। आप जन्मजात ही प्रतिभावान और तेजस्वी थे। आपकी माता एक सरल स्वभावी और धर्मनिष्ठ महिला थी। बाल्यकाल में ही आपके पिताजी का स्वर्गवास हो गया था। बड़े भाई अलग रहने लगे, आप घर की सारी जिम्मेदारी कुशलता से सम्पादित करते।

आपकी धर्मपत्नी भी धर्म परायण थी। एक पुत्री होने के पश्चात पति पत्नी धर्म के गहरे रंग में रंग गए। जब-जब भी साधु-साध्वियों का संयोग मिलता, आप पूरा लाभ उठाते और उनसे आध्यात्मिक पाठ्य प्राप्त करते रहते। साधु संतो के सम्पर्क से आपकी सुप्त वैराग्य भावना उजागर हुई और आप उस दिशा में गतिमान हो गये। गृहस्थ अवस्था में ही आपने एकांतर अर्थात् एक दिन छोड़कर एक दिन उपवास करना प्रारम्भ कर दिया, रात्रि भोजन परिहार के साथ अब्रह्मचर्य का परित्याग कर साधना प्रारंभ कर दी। आपकी धर्मपत्नी सुगनी बाई भी आपके साथ दीक्षित होना चाहती थी, परन्तु उनका आयुष्य कम होने के कारण वे स्वर्गवासी हो गईं। उनके स्वर्गवास के पश्चात आपकी वैराग्य भावना और अधिक प्रबल हो गईं।

दीक्षा की बात जब माता को बताई तब माता ने घर में ही रहने का आग्रह किया, परन्तु आपका मन पूर्ण विरक्त हो चुका था। आपने पूज्य रघुनाथ जी के पास जाकर अपनी बात कही और रघुनाथ जी तत्काल माँ को समझाने पधारे और उनकी प्रेरणा से माता ने दीक्षा की अनुमति दे दी और विक्रम संवत् 1808 मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी को बगड़ी नगर के सरिता तट पर वटवृक्ष के नीचे आपने दीक्षा स्वीकार की। दीक्षित होते ही पूज्य रघुनाथ जी से आपको अयाचित आशीर्वाद मिला कि भीखण इस वटवृक्ष की तरह तेरा विस्तार हो। कहा जाता है कि आशीर्वाद एक बार मिलता है पर वह जीवन विकास का मार्ग प्रशस्त कर देता है। भीखण जी ने साधु बनते ही अपने महाव्रतों की परिपालना के साथ आगमों को कंठस्थ करना और उसे गहराई से समझने का प्रयास किया। आपकी विनम्रता, पवित्रता, सेवा भावना, कर्तव्यपरायणता देखकर पूज्य रघुनाथ जी ही नहीं अन्य साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका भी प्रसन्न थे। विकास के हर क्षेत्र में अहर्निश वर्धमान बनते जा रहे थे।

विक्रम संवत् 1815 में आपको गुरुदेव ने प्रथम बार राजनगर मेवाड़ में चतुर्मास के लिए भेजा। उस समय आपके साथ टोकरजी, हरनाथजी, वीरभानजी और भारीमाल जी चार सन्त थे। राजनगर के श्रावक अनास्थावान बनते जा रहे थे, इसलिए उन्हें धर्म में स्थिर रहने के लिए ही विशेषकर भेजा गया। भीखण जी के आगमन से राजनगर के श्रावकों की शिथिलता पूर्ण समाप्त हो गई। आपका आचार-विचार, व्यवहार देखकर श्रावकों में चमक आ गई। लोगों की हार्दिक श्रद्धा भक्ति देखकर एक दिन भीखणजी ने वहाँ के विशिष्ट लोगों से सारी बातचीत की, तब पता चला कि आपका कथन बिल्कुल सत्य है परन्तु आपके शुद्धाचार विचार को देखकर सब प्रसन्न हो गये।

भीखण जी ने अनास्था की स्थिति कि जानकारी की तब श्रावकों ने कहा आजकल आगम सम्मत साध्वाचार नजर नहीं आता, यही हमारी अनास्था का मुख्य कारण है। उन्होंने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह चतुर्मास का समय है आप कृपा करके आगम पढ़ें, देखें, अगर हमारी त्रुटि है तो हम सुधारेंगे, अगर आपकी है तो आप सुधारें, जिससे अनास्था का प्रसंग ही नहीं होगा। भीखणजी को बात अच्छी लगी उन्होंने चतुर्मास में दो-दो बार आगम पढ़े, सही स्थिति की जानकारी की और उन्हें लगा कि श्रावकों की बातें अत्यन्त नहीं हैं। उन्होंने चतुर्मास के पश्चात गुरु के दर्शन कर सारी स्थिति स्पष्ट की परन्तु उसका कोई समुचित समाधान नहीं होने

से दो वर्षों के पश्चात अर्थात् विक्रम संवत् 1817 चैत्र सुदी नवमी के दिन आपने बगड़ी नगर से अभिनिष्क्रमण किया।

अभिनिष्क्रमण करते ही संघर्षों का वातावरण प्रारंभ हो गया। प्रथम दिन आपको स्थानाभाव के कारण श्मशान में बनी जैतसिंह जी कि छतरी में रहना पड़ा। आहार, पानी, वस्त्र आदि के कष्ट लम्बे समय तक सहन किए, परन्तु आपका फौलादी संकल्प कभी कंपायमान नहीं हुआ।

विक्रम संवत् 1817 आषाढ सुदी पुर्णिमा शनिवार को नगर केलवा में पुनः भाव दीक्षा ग्रहण की। उस समय केवल तीन ही तीर्थ थे। साध्वियों विक्रम संवत् 1821 में दीक्षित हुईं। आपके शुद्धाचार विचार कि सौरभ जगह-जगह फैलती गईं। आपने विक्रम संवत् 1832 में प्रथम मर्यादा पत्र लिखा और अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति की। समय-समय पर दीक्षाएं होती गईं, श्रावक-श्राविका बढ़ते गए।

आप समय-समय पर मर्यादाएं बनाते गए, जिससे साधु-साध्वियों कि साधना उत्तरोत्तर गतिमान रहे। विक्रम संवत् 1860 में आप मारवाड़ के सिरियारी में चतुर्मास हेतु पधारे और भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी के दिन संथारा कर इस नश्वर देह से विदाई ली।

आपका हर दूरदर्शी चिंतन मील का पत्थर बन गया। आप द्वारा लिखी गई मूल मर्यादाओं में आज तक कोई परिवर्तन की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। वर्तमान में इस धर्मसंघ के एकादशवें अधिशास्ता महातपस्वी शान्तिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की छत्रछाया में पूरा धर्मसंघ साधना के क्षेत्र में विकासशील है। आचार्य श्री भिक्षु के 222वें महाप्रयाण दिवस पर शत- शत वंदन।

मिली भिक्षु शरण

● साध्वी विधिप्रभा ●

चरणों में है नमन, मिली भिक्षु शरण।
प्राणों के प्राण हम, शासन की शान तुम।
भक्तों के त्राण तुम, मिली भिक्षु शरण ॥

धर्मदूत बनकर आए, गाथा तेरी हम गाएं।
उग्र विरोधी भी छाप, फिर भी कमी न घबराए।
पाया तेरापंथ, गुंजे दिग्-दिगन्त,
अलबेला था वो संत, मिली भिक्षु शरण ॥

आगम का करके मंथन, पाया जीवन का दर्शन।
देकर जग को नव चिंतन, बन गया सबका आकर्षण।
तत्वों के राह चले, जिनवाणी पनाह तले,
जीवन की चाह फले, मिली भिक्षु शरण ॥

गण-गणपति में हो आस्था, अविनीतों से नहीं वास्ता।
साध्वाचार से हो नाता, श्री भिक्षु मुख ये गाता।
साधन शुद्धि हो, जागे सम्बुद्धि हो,
पापों की शोधि हो, मिली भिक्षु शरण ॥

स्मरण करूं मैं आठूं याम, गीतों में ही तेरा नाम।
पीर हरो मेरे घनश्याम, तुम्हीं हो इक आस्था धाम।
भक्ति में दम भरें, मंजिल हम वरें,
संसार हम तरें, मिली भिक्षु शरण ॥

लय- जब से मिली नजर

बाबै रो मंगल शरणो

● साध्वी कुमुदप्रभा ●

बाबै रो मंगल शरणो है।
भाद्रव सुद्र तेरस रो दिन अमृतमय झरणो है ॥
दीपां बल्लू शाह रो अंगज शासन रो सरताज।
सुधरी री छतर्यां स्यूं की है धर्म क्रांति आवाज।
जाप स्यूं भवजल तरणो है ॥

ताव चढ्यो भीखणजी ने जव कियो सत्य स्वीकार।
राजनगर में खिल्यो बोधि रो अनुपमेय मंदार।
जिनेश्वर आज्ञा रमणो है ॥

कष्टां री आंध्यां में बाबो हिम्मत नहीं हारी।
सैनिक बणकर निखर्यां गण में जावां बलिहारी।
तेरापंथ रो महाराणो है ॥

अंधेरी ओरी रो पावस केलवा महकायो।
यक्ष देव श्री चरणां रो चाकर बन हरसायो।
अमरता रो पथ वरणो है ॥

मर्यादा शासन अनुशासन संघ रो जीवन प्राण।
एक गुरु की शासना में करुणो है कल्याण।
संघ में आगै बढ़णो है ॥

सांवरियै रो नाम सुमरतां विघन हो जावै दूर।
आशावां सब फल ज्यावै है मिल जावै कोहिनूर।
भिक्षु स्याम निशदिन रटणो है ॥

लय - तावड़ा धीमो

गुणरत्नाकर दिव्य दिवाकर

● डॉ. साध्वी परमयशाजी ●

गुणरत्नाकर दिव्य दिवाकर भिक्षु का दरबार।
हमारा भाग्य फला है, हमें यह संघ मिला है ॥

संघ हमारा नयन सितारा पावन प्रज्ञा द्वार।
कल्पतरु खिला-2 है तेरापंथ गण उजला है ॥

वीतराग कल्प भिक्षु भाग्य विधायक।
फौलादी संकल्पों के वे महानायक।
अरहंताण के प्रतिनिधि को वंदन बार हजार ॥

बिंदु से सिंधू की अकथ कहानी।
बीज वपन से बरगद यह सहनाणी।
कीर्ति पुरुष की महिमा गरिमा जग सें जय जय कार ॥

दीपा के नंदन का आचार उज्ज्वल।
अर्पण जिनवाणी हित सुमेरू ज्यों अविचल।
करुणानिधि कंटालिया गौरव बल्लूशाह दीदार ॥

हे प्रभो! यह तेरापंथ जग को सुहाया।
आलोकित नम धरा दिगंत जन-2 ने गाया।
प्रज्ञानिधि से करते प्रभुवर रत्नों की बौछार ॥

आत्मा रा कारज सारां मर पूरा देस्यां।
तपस्विनी धम्मगिरी रो आनंद लेस्यां।
पिता पुत्र थिश्पाल फतेह द्वय प्रेरक रम्याकार ॥

त्रिभुवन की पीड़ा हरने आर्य भिक्षु आए।
राजपंथ तेरापंथ का वरदान लाए।
दान दया अनुकंपा लौकिक लोकोतर सुविचार ॥

लय - स्वर्ग से सुंदर



ज्ञानशाला दिवस पर विविध आयोजन

पीतमपुरा, दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में खिलौनी देवी धर्मशाला में दिल्ली सभा के तत्वावधान में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा- 'अभिभावक अपने बच्चों के समुज्ज्वल एवं शानदार भविष्य निर्माण के लिए जागरूक बनें। समुज्ज्वल भविष्य निर्माण में संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। संस्कारों के सिंचन, पल्लवन एवं पुष्पन के लिए ज्ञानशाला महत्वपूर्ण उपक्रम है। ज्ञानशाला के महत्व को समझे एवं अपने बच्चों को ज्ञानशाला में भेजें।' शालीमार बाग एवं मानसरोवर गार्डन के ज्ञानार्थियों ने अपनी मोहक प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया। दोनों क्षेत्र की प्रशिक्षिकाओं ने भी अपनी प्रस्तुति दी। महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड, ज्ञानशाला के संरक्षक रतनलाल जैन, पीतमपुरा सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोडिया, मानसरोवर गार्डन सभा अध्यक्ष नरेंद्र पारख, शालीमारबाग सभा अध्यक्षा सज्जन गौडिया, तेयुप दिल्ली क्षेत्रीय सहसंयोजक रवि जैन, पश्चिमी दिल्ली महिला मंडल अध्यक्षा रीटा चौरडिया, उत्तर दिल्ली महिला मंडल अध्यक्षा मधु सेठिया आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन प्रशिक्षिका पूनम जैन ने तथा आभार ज्ञापन मुख्य प्रशिक्षिका कांता जैन ने किया।

जोरावरपुरा

तेरापंथ भवन में साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। साध्वी श्री ने कहा - बच्चों का आध्यात्मिक विकास ज्ञानशाला से ही संभव है। ज्ञानशाला से ही बच्चों में विनम्रता, अनुशासन तथा जीवन जीने के ढंग की शिक्षा मिलती है। साध्वीश्री जी ने अनेक दृष्टान्तों के द्वारा बच्चों के विकास के लिए ज्ञानशाला का महत्व बताया। साध्वी श्रीकांतप्रभा जी ने भी बताया कि बच्चों में सुसंस्कारों की नींव ज्ञानशाला के माध्यम से ही रखी जा सकती है। साध्वीश्री ने चातुर्मास के बाद भी ज्ञानशाला जारी रखने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल से मुस्कान पुगलिया ने किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने कव्वाली, नृत्य तथा अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत कर अभी तक सीखी हुई बातों की जानकारी दी। महिला मंडल मंत्री मोनिका बुच्चा ने ज्ञानशाला दिवस पर अपने विचार रखते हुए कहा कि बच्चे बीज के समान होते हैं, जिन्हें एक अच्छी भूमि और अच्छे किसान की आवश्यकता

होती है। सभा अध्यक्ष बाबूलाल बुच्चा ने भी अपने भाव प्रकट किए। महिला मंडल द्वारा गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम में श्रावक समाज, युवक परिषद महिला मंडल, कन्या मंडल तथा ज्ञानशाला के विद्यार्थियों की अच्छी उपस्थिति रही। बच्चों को जोरावरपुरा महिला मंडल के द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

भिवानी

मुनि देवेंद्रकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन भिवानी में ज्ञानशाला दिवस बहुत ही हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया। मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य श्री तुलसी की एक रचना है- ज्ञानशाला। इसमें जैसा रंग भरा जाए वह अंकित हो जाता है। जीवन निखारने का एक माध्यम है- ज्ञानशाला। तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि संस्कारों के जागरण की शाला है- ज्ञानशाला। ज्ञानशाला का लक्ष्य है बच्चों में सद् संस्कार भरना और उनके भीतर सदाचार लाना। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। बच्चों के द्वारा संस्कार सप्तक प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला गीत व आच्छा लागै सै गीत पर बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी। 'बच्चों की अदालत' नाम से एक नाटिका का मंचन किया गया। इस अवसर पर सभा अध्यक्षा सन्मति जैन, मंत्री विकास जैन, कोषाध्यक्ष बैजनाथ जैन, प्रचार मंत्री नवीन नाहटा, उपासक रमेश जैन, सुरेंद्र जैन एडवोकेट, उपासिका मधु जैन, हरियाणा ज्ञानशाला की सह प्रभारी वनिता जैन ने अपना वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संयोजन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका रेनु नाहटा व शिखा जैन ने तथा आभार ज्ञापन मीनू जैन द्वारा किया गया।

गुवाहाटी

मुनि प्रशांतकुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांतकुमार जी ने कहा- ज्ञानशाला हमारे जीवन निर्माण की शाला है। जीवन में संस्कारों का जागरण अपेक्षित है। संस्कारी बच्चे समाज की नींव को मजबूत बनाते हैं। जीवन की बहुत सारी बुराइयां सुसंस्कारों के कारण से अपने आप रुक जाती हैं। संस्कारी व्यक्तित्व कितनों के जीवन में प्रेरणा का कार्य करता है। जागरूक अभिभावक बच्चों के भविष्य को सुखद बना देते हैं। गुरुदेव श्री तुलसी ने भावीपीढ़ी को सशक्त बनाने के लिए ज्ञानशाला का उपक्रम समाज

के सामने रखा। अभिभावक बच्चों की शिक्षा के साथ गतिविधियों की तरफ जागरूकता रखते हैं उतनी ही जागरूकता संस्कार निर्माण-जीवन निर्माण की ओर रखते हैं तो एक प्रेरणादायी जीवन का निर्माण होता है। सभा अपना दायित्व निभा रही है। ज्ञानशाला के प्रशिक्षिकगण बहुत साधुवाद के पात्र हैं। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा- गुरुदेव श्री तुलसी एवं वर्तमान अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी का समाज सदैव कृतज्ञ रहेगा। जिन्होंने समयानुकूल अनमोल तत्व ज्ञानशाला के रूप में दिया। समाज में बढ़ते अपराध इस बात के साक्षी हैं कि परिवेश, वातावरण एवं संस्कारों का योग सम्यक् नहीं मिला। ज्ञानशाला के प्रति उदासीनता भावी जीवन के लिए प्रश्नचिह्न है। प्रशिक्षक एवं स्थान की उपलब्धता करने वाले व्यक्ति साधुवाद के पात्र हैं। ये व्यक्तित्व निर्माण के साथ स्वयं के कर्मों की निर्जरा भी कर रहे हैं। नारायण नगर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अर्हम् गीत प्रस्तुत किया। रिहाबाड़ी, जी.एस. रोड एवं तेरापंथ धर्मस्थल के ज्ञानार्थियों ने गुरुदेव श्री तुलसी, आचार्य श्री महाश्रमणजी एवं ज्ञानशाला की महत्ता के बारे में बताया। मुख्य प्रशिक्षिका ममता पुगलिया ने विचार व्यक्त किए। समता भवन से ज्ञानशाला रैली प्रारंभ होकर विभिन्न स्थानों पर ज्ञानशाला की उपयोगिता का संदेश देती हुई तेरापंथ धर्मस्थल पहुंची। कार्यक्रम में सभा, तेरापंथ युवक परिषद् एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षकों का योग रहा।

माधावरम्, चेन्नई

साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में 'ज्ञानशाला दिवस' कार्यक्रम का आयोजन जैन तेरापंथ नगर, माधावरम्, चेन्नई स्थिति तीर्थकर समवसरण में हुआ। साध्वीश्री ने कहा कि ज्ञानशाला के बच्चे कोरा कागज होते हैं, इन पर जैसा लिखना है, जैसा आकार देना है, दे सकते हैं। बच्चों का सुनहरा वर्तमान, उनका भविष्य संवार देता है। जीवन को सजाने के लिए, संवर्द्धन के लिए, संस्कारों को पाने के लिए ज्ञानशाला महत्वपूर्ण माध्यम है। नचिकेता, ध्रुव, प्रल्हाद, अतिमुक्तक ने 8-10 वर्ष की आयु में ही ईश्वरत्व को उपलब्ध कर लिया था। ज्ञानशाला का तात्पर्य है- ज्ञानी बनना, नम्र बनना, शालीन बनना और लाजबाब बनना। शैशव अवस्था सृजन की अवस्था है। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि ज्ञानशाला में जानने, करने और कुछ बनने के लिए आते हैं। यह व्यक्तित्व विकास का

बहुत बड़ा माध्यम है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने 'भेजो भेजो ज्ञानशाला में भेजो' गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं बहनों के मंगलाचरण से हुई। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष प्रवीण बाबेल ने स्वागत भाषण दिया। ज्ञानशाला की आंचलिक सहसंयोजिका कविता सोनी व ज्ञानशाला व्यवस्थापक राजेश सांड ने अपने विचार रखे। माधावरम्, विल्लीवाक्कम, पैरम्बूर ज्ञानशाला के बच्चों ने 'अर्हम् अर्हम् की वन्दना' गीत से संयुक्त प्रस्तुति दी। मोगपेर, वडपलनी, व्यासरपाडी और नॉर्थ टाउन ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पच्चीस बोल के प्रथम चार बोल पर प्रस्तुति दी। पल्लावरम और ताम्बरम ज्ञानशाला ने ज्ञानशाला की अतीत से वर्तमान तक की विकास यात्रा की मनमोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की सुचारु व्यवस्था में इन्द्रा रांका, कविता मेडतवाल, विजयलक्ष्मी सियाल, चन्द्रप्रकाश छल्लाणी, सुरेश रांका, मंत्री पुखराज चोरडिया एवं माधावरम् ट्रस्ट की पूरी टीम का सराहनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन संगीता धोका एवं विनीता बैद ने किया। आभार ज्ञापन नीलम आच्छा ने दिया। 13 ज्ञानशालाओं से लगभग 160 ज्ञानार्थी एवं 60 प्रशिक्षिकाएं इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

गंगाशहर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर के तत्वावधान में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी चरितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में शांति निकेतन में आयोजित किया गया। साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ज्ञानशाला एक बहुत बड़ा उपक्रम है, जिसमें संस्कार निर्माण का कार्य होता है, जिससे भविष्य में वटवृक्ष का निर्माण निश्चित है। ज्ञानशाला आचार्यश्री तुलसी की अनुपम देन है। बच्चों में कुछ करने की क्षमता होती है, उन्हें अवसर देने की आवश्यकता है। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ज्ञानशाला का उपक्रम बच्चों के व्यक्तित्व विकास का माध्यम बनता है। प्रशिक्षिकाएं बच्चों के लिए मेहनत करती हैं। माता-पिता का कर्तव्य है की भावी पीढ़ी को संस्कारी किया जाए। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानार्थियों द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। प्रशिक्षिकाओं ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। छोटे-

छोटे ज्ञानार्थियों द्वारा 'जन्म से नहीं कर्म से जैन बने' विषयक नाटिका प्रस्तुत की गई। ज्ञानशाला प्रभारी चैतन्य रांका ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा के मंत्री जतन लाल संचेती, महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालानी, तेरापंथ युवक परिषद के सह मंत्री मांगीलाल बोथरा, मुख्य प्रशिक्षिका सुनीता पुगलिया व प्रशिक्षिका श्रीया गुलगुलिया ने अपने विचार व्यक्त किये। तेरापंथ सभा द्वारा गत वर्ष स्नातक उत्तीर्ण करने वाली प्रशिक्षिका प्रेम बोथरा, कनक गोलछा, श्रीया गुलगुलिया को सम्मानित किया गया। आभार ज्ञापन प्रशिक्षिका सरिता आंचलिया ने किया। इस अवसर पर 234 ज्ञानार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन रुचि छाजेड़ ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्ताओं सहित सभी प्रशिक्षिकाओं का श्रम नियोजित हुआ।

तोशाम

ज्ञानशाला दिवस कार्यक्रम आयोजन का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुआ। बच्चों ने 'अर्हम् अर्हम् की वन्दना' गीत, आध्यात्मिक एबीसीडी का संगान किया। उपासिका मंजू जैन ने कहानी व कविता के माध्यम से अपने विचार रखे। ज्ञानार्थियों ने 'ज्ञानशाला शो' के माध्यम से ज्ञानार्थी बैग की उपयोगिता एवं 'नशा नाश का द्वार' नाटिका के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। पर अपनी प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने 'ज्ञानशाला संस्कारों की शाला' गीत की सामूहिक प्रस्तुति दी। प्रशिक्षिका साक्षी जैन, बबिता जैन ने कविता के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने अपने वक्तव्य में कहा परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का शुभारंभ वर्ष 2012 में हुआ था। ज्ञानशाला दिवस प्रत्येक वर्ष भाद्रपद महीने के प्रथम रविवार को मनाया जाता है। उन्होंने ज्ञानशाला के सभी आयामों की जानकारी दी और कहा कि बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए ज्ञानशाला में भेजना जरूरी है। ज्ञानशाला के बच्चों ने सामूहिक रूप से 'मेरी ज्ञानशाला - शाला के बच्चे' गीत का संगान किया। सभा की ओर से पंकज जैन व महिला मंडल अध्यक्षा रंजना जैन ने अपने विचार प्रकट किए। चेतना जैन को चित्रकला प्रतियोगिता में अखिल भारतीय स्तर पर चयन होने पर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रशिक्षिका ज्योति जैन ने किया।



समाज की, परिवार की धुरी है दम्पति

कांदिवली।

साध्वीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में और तेरापंथ युवक परिषद् कांदिवली-मलाड के तत्वावधान में 'हैप्पी कपल खुशी डबल' विषयक कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर सैकड़ों की संख्या में उपस्थित दम्पतियों को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा- समाज की गाड़ी दम्पति के सहयोग से चलती है। परिवार से समाज बनता है और व्यक्ति से परिवार बनते हैं।

परिवार की धुरी पति-पत्नी रूपी पहिए होते हैं। यदि वे सशक्त हैं तो परिवार भी सशक्त बन जाता है। आवश्यक है कि परिवार में शांति बनी रहे। बिजली की तरह यदि तार सही जुड़ जाते हैं तो प्रकाश प्राप्त होता है,

समाज की गाड़ी दम्पति के सहयोग से चलती है। परिवार से समाज बनता है और व्यक्ति से परिवार बनते हैं।

अन्यथा प्रकाश की जगह अंधेरा हो सकता है।

साध्वीश्री ने विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- जीवन को जीने के लिए इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि पति-पत्नी एक-दूसरे को सहें और सम्मान देते रहें। दुःख-दर्द में पारस्परिक सौहार्द बना रहे। पारस्परिक व्यवहार में भ्रम पैदा न हो, विश्वास की शक्ति ऐसी होती है जिससे रिश्ते मजबूत बने रहते हैं। रिश्तों में मिठास बनी रहे, इसके लिए अनेक बातों को नज़रअंदाज़

भी किया जा सकता है। साध्वी वृंद ने रहैप्पी खुशियां डबल हों, पल-पल मंगलर गीत का सामूहिक संगान किया। तेयुप अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने स्वागत संबोधन प्रस्तुत किया। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा- दम्पति अपने जीवन में गुणों का प्रकाश भरें, संयम की चेतना जगाएं। मुख्य वक्ता के रूप में चेन्नई से पधारे राकेश खटेड़ ने आकर्षक प्रेरक वक्तव्य से श्रोताओं का मन मोह लिया और दाम्पत्य जीवन के कई टिप्स बताए। बोरिवली ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका शीतल सांखला ने दम्पतियों से रोचक प्रश्न पूछे।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा शानदार प्रस्तुति दी गई। तेयुप मलाड के अध्यक्ष जयंती मादरेचा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी अतुल्यशाजी ने किया।

संस्कारशाला का आयोजन

सिकंदराबाद। समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत संस्कारशाला A Way to Happiness का आयोजन टैगोर होम सेकेंडरी स्कूल सिकंदराबाद में किया गया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष कविता आच्छा, मंत्री सुशीला मोदी, रिटा सुराणा, नमिता सिंघी व संतोष गुजराणी द्वारा संस्कारशाला ली गई। कार्यशाला का शुभारंभ महाप्राण ध्वनि के साथ किया गया। कार्यशाला के दौरान बच्चों को व्यायाम व मुद्राओं के द्वारा अपने सब्जेक्ट पर मन को केंद्रित करना सिखाया गया। रिटा सुराणा ने माता-पिता एवं बड़ों का सम्मान विषय पर व मंत्री सुशीला मोदी ने सत्य एवं ईमानदारी विषय पर कार्यशाला ली। नमिता सिंघी ने मस्तिष्क विकास एवं स्मृति विकास के लिए योगासन सिखाए। लगभग 215 बच्चों की सहभागिता रही।

समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत संस्कार शाला का आयोजन

पाली।

समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल पाली द्वारा न्यू पब्लिक मार्डन शिक्षण समिति विद्यालय में संस्कारशाला का आयोजन किया गया।

तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सुषमा डागा द्वारा नमस्कार महामंत्र से संस्कारशाला का प्रारंभ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की सदस्यों द्वारा मंगलाचरण किया गया। मंत्री सीमा मरलेचा के द्वारा महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया गया। संगठन मंत्री लीना वेदमुथा

ने कहानी के माध्यम से बच्चों को आलस्य नहीं, समय का सदुपयोग करने की प्रेरणा दी।

सहमंत्री मीना मंडोत ने बच्चों से सवाल पूछे और पारितोषिक देकर उनका उत्साह बढ़ाया।

ज्ञानशाला प्रभारी हेमलता सोनी मंडिया ने बहुत ही सुंदर ढंग से बच्चों को पॉजिटिव अफमेशन करवाया।

कार्यकारिणी सदस्या मधु बरडिया एवं सुमित्रा सुदेशा ने सभी का आभार व्यक्त किया। संस्कारशाला में लगभग 100 बच्चों की उपस्थिति रही।

मासखमण तप अभिनंदन समारोह

भुज।

मुनि अनंतकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन भुज में महिमा बसंत भाई महेता के 31 दिनों कि तपस्या के अनुमोदना में मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ।

मुनि श्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भगवान महावीर ने मोक्ष के चार मार्ग बताए, उनमें एक मार्ग है तप। भारतीय संस्कृति में जितने भी धर्म दर्शन हैं, सब में तप को करणीय उपासना के

रूप में स्वीकार किया है। तप कोई भी करे, आत्मविशुद्धि होगी।

तप के द्वारा व्यक्ति अपने पूर्व संचित कठोर से कठोर कर्म को भी क्षय कर सकता है। बहन महिमा ने मासखमण की तपस्या करके छोटी अवस्था में बड़ा काम किया है। उनकी यह तपस्या सब लोगों के लिए अनुकरणीय है, अनुमोदनीय है।

परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के आशीर्वाद से भुज नगर में यह पहला मासखमण तप संपन्न हो रहा है। मुनि

विपुलकुमार जी ने गीत के माध्यम से सबको तपस्या कि प्रेरणा दी। तेरापंथ सभा द्वारा तपस्वी का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में पारिवारिक जनों ने अपने उल्लास की अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ सभा के मंत्री भरत भाई महेता, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष महेश भाई गांधी, महिला मंडल की ओर से भारती बहन शाह ने तपस्विनी बहन के प्रति अपने भावों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन आशीष भाई बाबरिया ने किया।

संक्षिप्त खबर

'नमोत्थुणं' की लिखित प्रतियोगिता

रायपुर। आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में देवों द्वारा रचित जैन धर्म के शाश्वत पाठ 'शक्र स्तुति' (नमोत्थुणं) पर लिखित प्रतियोगिता का आयोजन श्री लाल गंगा पटवा भवन में तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा किया गया। जिसमें 27 पुरुषों एवं महिलाओं ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को परिषद् द्वारा सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता के प्रारंभ में मुनि सुधाकर जी द्वारा उपस्थित प्रतिभागियों से मौखिक प्रश्न पूछे गए। आयोजन में अभय गोलछा, रिषभ जैन, पंकज बैद, गौरव दुगड़, वीरेंद्र डागा की सहभागिता रही।

जैन विद्या परीक्षा के प्रमाण-पत्र वितरित

गुवाहाटी। मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी, गुवाहाटी के तत्वावधान में जैन विद्या परीक्षा 2023 के प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। जैन विद्या परीक्षा के स्थानीय केंद्र व्यवस्थापक संजय चौरडिया ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया कि जैन विश्व भारती के उपक्रम समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित जैन विद्या परीक्षा संपूर्ण भारतवर्ष के साथ ही गुवाहाटी में भी अक्टूबर 2023 में आयोजित हुई थी। पिछले साल गुवाहाटी केंद्र के 3 परीक्षार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर पर स्थान प्राप्त किया। इनमें भाग-4 में कमला देवी संचेती ने तृतीय स्थान तथा भाग-8 में डिंपल कोचर ने द्वितीय स्थान एवं स्वाती सुराणा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। गुवाहाटी से कुल 57 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी थी। इस वर्ष की जैन विद्या परीक्षा आगामी 9 एवं 10 नवंबर 2024 को आयोजित होगी। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, मंत्री राजकुमार बैद, समण संस्कृति संकाय के पूर्वोत्तर प्रभारी अशोक मालू, आंचलिक संयोजक अनिल कुमार पटवा ने सभी परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

पैसठिया यंत्र-मंत्र आराधना का आयोजन

इरोड। मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में महामंगलकारी पैसठिया यंत्र-मंत्र आराधना का अनुष्ठान रविपुष्यामृत नक्षत्र में आयोजित किया गया। किशोर मण्डल, कन्या मण्डल, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों और स्थानीय श्रावक-श्राविका समाज के साथ मैसूर, तिरुपुर, कुन्नूर (उडुपी) के श्रावकों ने भी उत्साहपूर्ण भाग लिया।

मासिक अमावस्या पर जप, तप एवं स्वाध्याय

राजाजीनगर। भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाणोत्सव के उपलक्ष में तेरापंथ धर्म संघ के एकादशमाधिशस्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा इंगित प्रत्येक मासिक अमावस्या को जप, तप एवं स्वाध्याय की नवम मासिक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन राजाजीनगर में हुई।

उपासक राजमल बोहरा ने सामूहिक नमस्कार महामंत्र एवं भगवान महावीर की स्तुति के पश्चात आचार्यश्री महाप्रज्ञा जी द्वारा लिखित पुस्तक 'श्रमण महावीर' का स्वाध्याय करवाया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, महिला मंडल अध्यक्ष उषा चौधरी, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया, तेयुप परिवार एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

- आचार्य श्री महाश्रमण

संक्षिप्त खबर

अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 का आयोजन

हावड़ा। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 का आयोजन अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा सेंट पॉल्स एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में आयोजित किया गया। कार्यक्रम दो ग्रुप में आयोजित हुआ, जिसमें चित्रकला की प्रतियोगिता आयोजित हुई। अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 के विषय 'व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण' के अंतर्गत प्रतियोगिता संपादित की गई। सेंट पॉल्स एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के 122 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में सहमंत्री एवं प्रभारी लीना सिंधी, संगठन मंत्री उमैद राखेचा एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

जसोल। मुनि यशवंतकुमार जी के सान्निध्य में मुमुक्षु दीप्ति वैदमूथा की दीक्षा के उपलक्ष में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा जसोल द्वारा मंगलभावना समारोह का आयोजन रखा गया। मुनि यशवंत कुमार जी ने कहा कि वर्तमान के संसार की भौतिकतावादी सुख सुविधा छोड़कर संयम पथ पर अग्रसर होने जा रही मुमुक्षु बहन के लिए बड़े ही गौरव की बात है। तेरापंथ धर्म संघ में एक और अध्याय जुड़ जाएगा। मुनि मोक्षकुमार जी ने भी मुमुक्षु बहन के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र से व मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मंडल द्वारा स्वागत गीतिका का संगान किया गया।

स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी ने प्रस्तुत किया। इस अवसर ज्ञानशाला प्रभारी डुंगरचन्द सालेचा, प्रवीण भंसाली, तेयुप अध्यक्ष मनीष बोकड़िया, हर्षिता बुरड सहित अनेकों वक्ताओं ने मुमुक्षु बहन के प्रति मंगलभावना व्यक्त की, साथ ही मुमुक्षु दीप्ति वैदमूथा ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा विदाई गीत के साथ व तेरापंथ कन्या मंडल की ओर से संयोजिका कुनिका बाघमार द्वारा मुमुक्षु बहन का अभिनंदन किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री धनपत संखलेचा ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन मंडल अध्यक्ष कंचनदेवी ढेलडिया ने किया।

मुस्कुराएं बचपन : खिलखिलाएं बचपन

इचलकरंजी। अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ कन्या मंडल इचलकरंजी की कन्याओं ने 78वां स्वतंत्रता दिवस अनाथालय के बच्चों के साथ मनाया। कन्याओं ने बच्चों को स्वतंत्रता दिवस के बारे में स्पीच व कहानी के द्वारा बताया। अभातेमम कार्यकारिणी सदस्य जयश्री जोगड़ ने एक जोश भरी कविता के माध्यम से बच्चों को प्रेरणा दी। महिला मंडल अध्यक्ष शिल्पा बाफना व मंत्री मीना भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए।

क्विज प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

गांधीनगर, बैंगलोर। तेरापंथ भवन में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा गांधीनगर बैंगलोर के तत्वावधान में साध्वी उदितयशाजी ठाणा 4 के सान्निध्य में ज्ञानशाला के बच्चों के लिए क्विज Check Your Talent प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी उदितयशाजी द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण के साथ हुआ। ज्ञानशाला पाठ्यक्रम पर आधारित प्रश्नों को 15 टीम एवं 6 राउंड के माध्यम से पूछा गया। प्रतियोगिता में प्रथम ओकलीपुरम ज्ञानशाला, द्वितीय कामाक्षिपाल्या ज्ञानशाला एवं तृतीय संयुक्त रूप में शंकर मठ, शांति नगर एवं केंगेरी ज्ञानशाला ने प्राप्त किया। इस आयोजन में मुख्य प्रशिक्षिका मंजू गन्ना, जोन संयोजिका बबीता चोपड़ा, चेतना वेदमूथा, टीना मांडोत, मंजू दूक का सहयोग रहा। सभी विजेता बच्चों को सभा द्वारा प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया एवं सुमित्रा बरडिया ने किया।

मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह

नागपुर।

अणुव्रत भवन में मुनि अर्हत् कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत टीपीएफ सदस्यों के मंगलाचरण से हुई।

'क्या कहता है जैन धर्म?' विषय पर सांस्कृतिक प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 18 से अधिक विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन एडवोकेट शिवाली पुगलिया एवं मधु डागा द्वारा किया गया। मुनिश्री ने Good Parenting

विषय पर उपस्थित माता-पिता को बच्चों में अच्छे संस्कारों का निर्माण करने की प्रेरणा प्रदान की।

मुनि भरत कुमार जी के PHD इन न्यूमेरोलॉजी एवं एस्ट्रोलॉजी पूरी होने पर सुरेंद्र पटावरी ने डिग्री प्रदान की। 80 से अधिक विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया तथा 5 मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। स्वर्गीय जीतमल छाजेड़ की स्मृति में इस कार्यक्रम की प्रायोजक शांतिदेवी छाजेड़ के साथ संजय सुनील छाजेड़ परिवार ने छात्रों का अभिनंदन किया। टीपीएफ अध्यक्ष सीए प्रियांक छाजेड़ ने समाज के सभी

सदस्यों का स्वागत किया। सीए सौरभ दफ्तरी, परियोजना संयोजक एवं सह-संयोजक एडवोकेट नवीन बैद ने पूरे कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक संचालन किया। धन्यवाद ज्ञापन टीपीएफ नागपुर की सचिव एडवोकेट शिवाली पुगलिया ने दिया।

कार्यक्रम की मेजबानी टीपीएफ कोषाध्यक्ष सीए विवेक पारख ने की। कार्यक्रम में TPF राष्ट्रीय आध्यात्मिक संयोजक सीए आदित्य कोठारी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इस सफल आयोजन में लगभग 250 से अधिक लोग शामिल हुए।

मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में रिसड़ा प्रवासी सुमति बैद का मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन प्रेक्षा विहार में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि तप पूर्वाजित कर्म पर्वतों को तोड़ने के लिए वज्र है। आंतरिक काम दावानल की ज्वालाओं को शांत करने के लिए यह शीतल जल है। भोगलुब्ध इंद्रिय रूपी सूर्य को बांधने का यह अमोघ मंत्र है। तपस्या आत्मशुद्धि का उत्तम मार्ग है। करोड़ों

करोड़ों भवों से
संचित कर्म तपस्या
से जीर्ण होकर झड़
जाते हैं।

भवों से संचित कर्म तपस्या से जीर्ण होकर झड़ जाते हैं। बहन सुमति बैद ने मासखमण तप कर बहुत ही साहस का परिचय दिया है। यह तप इस चातुर्मास का आठवां मासखमण तप है। मुनिश्री ने सुमति बैद को 31 की तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया। तप

अनुमोदना में अनेक भाई-बहनों ने तप करने का संकल्प व्यक्त किया। साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना ने तपस्वी बहन का अभिनंदन करते हुए साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन किया। डॉ. साध्वी सम्पूर्णयशा जी द्वारा लघु भगिनी को प्रदत्त तप संदेश का वाचन मुनि कुणाल कुमार जी ने किया। पारिवारिक बहनों और भाइयों ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। आभार सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने व संचालन मुनिश्री परमानंद ने किया।

तत्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन व तत्वविज्ञ परीक्षा के प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम

हैदराबाद। तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद द्वारा प्रमाण पत्र वितरण एवं सम्मान का कार्यक्रम 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन डी. वी. कॉलोनी सिकंदराबाद में आयोजित किया गया।

वर्ष 2023 में तत्वज्ञान के 19 परिक्षार्थियों एवं तत्व विज्ञ में 3 परिक्षार्थियों ने परीक्षा दी। रेखा संकलेचा ने अखिल भारतीय स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया।

सभी गणमान्य पदाधिकारी गण एवं महिला मंडल की अध्यक्ष कविता आच्छा व मंत्री सुशीला मोदी व तत्वज्ञान परीक्षा की केंद्र व्यवस्थापिका उपासिका मंजू दूगड़ ने सभी को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

संस्कारशाला की प्रथम कार्यशाला का आयोजन

जसोल। अभातेमम के निर्देशन में तेरापंथ जसोल द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के तहत नवकार विद्या मंदिर जसोल में संस्कार शाला की प्रथम कार्यशाला का आयोजन किया गया। अध्यक्ष कंचन देवी ढेलडिया ने कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण दिया। स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा मंगला

चरण किया गया। मंत्री अरुणा डोसी ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया और इससे लाभ को बताया। पुष्पा बुरड ने 'क्रोधी नही- सहनशील बनें' विषय पर चंडकोशिक सर्प की कहानी सुनाई। फेना देवी भंसाली, जयश्री भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए।

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

कोयम्बतूर।

अभातेमम के निर्देशानुसार स्थानीय मंडल व तिरपुर महिला मंडल के संयुक्त तत्वाधान में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में चित्त समाधि शिविर का आयोजन किया गया। अध्यक्ष मंजू सेठिया ने स्वागत व अभिनंदन किया। तिरपुर महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। मुनि काव्यकुमार जी ने कहा कि अपने जीवन में नकारात्मक बातों

से बचे व बीती हुई बातों को भुलने का प्रयास करें। चित्त में समाधि लाना है तो प्रसन्न रहने व वर्तमान में जीने का प्रयोग करें। मुनि दीपकुमार जी ने मंगल भावना का सामूहिक उच्चारण करवाया। मुनिश्री ने जीवन ऊंचा लक्ष्य उसी अनुरूप जीवन शैली के नियम बनाने की प्रेरणा दी। मुनि श्री ने आगे कहा - समाधि का अर्थ है जीवन के हर क्षेत्र में शांति हो, आनंद हो। अगर चित्त में समाधि नहीं है तो सारे ही अनुष्ठान असफल हैं।



संक्षिप्त खबर

बच्चों में कैसे हो संस्कारों का निर्माण

सरदारपुरा। तेरापंथ महिला मंडल सरदारपुरा द्वारा संस्कार शाला प्रोजेक्ट राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय चिलका में आयोजित किया गया। महिला मंडल सरदारपुरा की बहनों ने अपने रचनात्मक तरीके से बालिकाओं में संस्कारों के निर्माण के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। मंत्री चेतना घोड़ावत ने सामूहिक महाप्राण ध्वनि का उच्चारण करवाया।

महिला मंडल अध्यक्ष दिलखुश तातेड़ ने अपने मंडल का परिचय दिया तथा सबका स्वागत अभिनंदन किया। विद्यालय की बालिकाओं ने कहानी, कविता, ड्रामा के माध्यम से क्रोध तथा आलस पर अपनी मनमोहक प्रस्तुतियां दी। महिला मंडल के बहनों जया जीरावला, सविता तातेड़ ने कहानी तथा कविता के माध्यम से बच्चों को क्रोध छोड़ने तथा आलस का त्याग करने के लिए प्रेरित किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल-कोलकाता ने अविनि ऑक्सफोर्ड फेज 2 ओनर्स एसोसिएशन के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कुल 67 यूनिट रक्त संग्रहित हुआ। परिषद् द्वारा उज्जास कॉम्प्लेक्स ऑनर्स एसोसिएशन के सहयोग से आयोजित रक्तदान शिविर में 38 यूनिट रक्त संग्रहित हुआ।

ज्वाला 2024 अन्तर विद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन

चेन्नई। तेरापंथ जैन विद्यालय, साहुकारपेट के प्रांगण में ज्वाला 2024 अन्तर विद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 12 विद्यालयों के एलकेजी से बारहवीं कक्षा तक के 333 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर विद्यालय चैयरमैन गौतमचंद बोहरा, मेनेजिंग ट्रस्टी मेघराज लूणावत, महासंवाददाता महावीरचंद गेलडा, कोषाध्यक्ष गौतमचंद समदड़िया व पट्टालम स्कूल महासंवाददाता संजय कुमार भंसाली उपस्थित थे।

प्रतिवर्ष समायोजित इस प्रतियोगिता में फैंसी ड्रेस, राइम ओ फन, मॉम एण्ड मी, एकल नृत्य, तिरुक्कुरल रिसिटेशन, ओरिगामि, गेस द लोगो, इंग्लिश ड्रामा, सामूहिक नृत्य, सीजल एण्ड स्टॉम्प, प्रश्न मंच, ट्विस्ट द ट्यून्, चैनल सरफिंग जैसी अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। डॉ. कमलेश नाहर ने विभिन्न प्रतियोगिता में विजेता विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र व ट्रॉफी प्रदान कर पुरस्कृत किया। शिक्षिका सुमिता ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पंचपरमेष्ठी आत्मरक्षा कवच अनुष्ठान का आयोजन

पीतमपुरा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में खिलौनी देवी धर्मशाला के प्रांगण में पंचगती पंचपरमेष्ठी आत्मरक्षा कवच का अनुष्ठान हुआ। सैकड़ों भाई-बहनों ने इस दिव्य अनुष्ठान में भाग लेकर अद्भुत एवं दिव्य ऊर्जा का अनुभव किया। साध्वीश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा- नमस्कार महामंत्र मंत्रों का सरदार हैं। इस महामंत्र में अनेक शक्तियों को नमस्कार किया गया है। घनीभूत आस्था व श्रद्धा के साथ निरंतर इसका जप करने वाला साधक सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है। नमस्कार महामंत्र हमारा रक्षा कवच है। मंत्रविद् आचार्यों ने इस महामंत्र के साथ शक्तिशाली बीजमंत्रों को जोड़कर और अधिक शक्तिशाली बनाया है।

साध्वीश्री ने कहा- इस जप अनुष्ठान को करने वाला साधक अनेक प्रकार की नकारात्मक शक्तियों एवं नकारात्मक

ऊर्जा को समाप्त कर सकता है। यह अनुष्ठान आत्मिक ऋद्धि, सिद्धि व समृद्धि प्रदायक बन सकता है। इस अनुष्ठान को करने वाला व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन में खुशहाली ला सकता है। यह अनुष्ठान आत्मरक्षा कवच का निर्माण कर सकता है जो आधि-व्याधि एवं उपाधि का हरण कर सकता है। अपेक्षा है व्यक्ति निरन्तर एवं नियमित महामंत्र जप का अनुष्ठान करे। डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा- सनातन परम्परा में कोई पूजा होती है तो पूजा के पश्चात दक्षिणा दी जाती है। हम चाहते हैं आप भी हमें दक्षिणा दें। हमारी दक्षिणा होगी - पौषध। सम्बत्सरी महापर्व पर ज्यादा से ज्यादा भाई-बहन पौषध कर हमें दक्षिणा दें। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने तीर्थंकर स्तुति के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। पीतमपुरा सभा मंत्री वीरेन्द्र जैन ने आभार ज्ञापित किया।

पृष्ठ 1 का शेष

अंतर्राष्ट्रीय मैत्री दिवस के...

तदुपरान्त साधु-साध्वियों ने बारी-बारी से आचार्यश्री से खमतखामणा की। तदुपरान्त साधु-साध्वियों ने आपस में खमतखामणा की। श्रावक-श्राविकाओं आचार्यश्री से तथा परस्पर भी खमतखामणा की। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी जी ने कहा कि जहां गांठें हैं, वहां बन्धन है। जहां गांठें खुली हैं, वहां मुक्ति है। आज गांठों को बान्धने का नहीं, खोलने का दिन है। अपना अन्तः निरीक्षण करें कि जिस किसी के साथ वर्षभर में गांठ बन्ध गई है, उसे खोलने का प्रयास करें। कर्मों के भार को हल्का कर मुक्ति की ओर प्रस्थान करें। मुख्यमुनि श्री महावीरकुमारजी ने कहा कि 84 लाख जीव योनि में जितने जीव हैं, उनसे खमत खामणा करना अच्छी बात है। आज उन सबसे खमत खामणा करने का दिन है जिनके साथ वर्ष भर में आपका व्यवहार हुआ हो। जिस किसी के साथ कलुष भाव हो या दूसरे ने किया हो तो उन सभी से आज के दिन अवश्य खमत खामणा करें। क्षमा वही कर सकता है जो वीर होता है। हम अहंकार मुक्त होकर इस क्षमा पर्व को व्यावहारिक धरातल पर लाने का प्रयास करें। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने कहा कि मार्दव के द्वारा मान को जीतें और ऋजुता के द्वारा माया को जीतें। अहंकार का वर्जन कर सरलता को अपनायें। जहां विनम्रता और सरलता होती है, वहां क्षमा होती है। आत्मा जब विनम्र और सरल बन जायेगी तो क्षमा का आदान-प्रदान कर सकेंगे। सभी संस्थाओं की ओर से व्यवस्था समिति

अध्यक्ष संजय सुराणा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेशकुमार जी ने "बड़े प्रेम से मिल जुल सीखें मैत्री मंत्र महान रे" गीत का सुमधुर संगान किया।

भगवती संवत्सरी का...

चारित्र आत्माओं में तो विशेष साधना चलती है पर गृहस्थों में भी धर्म की अच्छी साधना चले। नमस्कार महामंत्र तो जैन धर्म की पहचान है, नाशे से पहले रोज नमस्कार महामंत्र की माला हो जाए। शनिवार को सायंकाल 7 से 8 बजे के बीच सामायिक होती रहे। हमारे जैन समाज में खान-पान की शुद्धि रहे, नशा मुक्ति रहे। भगवान महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' को शिखर पर पहुंचाते हुए बताया कि अंतिम भव में त्रिशला के गर्भ से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को एक पुत्र का जन्म हुआ। जन्म के बारहवें दिन नामकरण के लिए स्वजन एकत्रित हुए। पिता सिद्धार्थ बोले कि जब से बालक गर्भस्थ हुआ तब से हमारे राज्य में सभी प्रकार की वर्धमानता हो रही है इसलिए बालक का नाम वर्धमान होना चाहिए। वर्धमान में बचपन से ही निर्भीकता थी। उन्हें पढ़ने के लिए गुरुकुल में भेजा गया, पर वे तो तीन ज्ञान के धनी थे, शीघ्र ही गुरुकुल से वापस लौट आए। थोड़ी उम्र आने पर उनके माता-पिता ने उनकी शादी करा दी। माता-पिता के देहावसान के बाद, राजकीय शोक संपन्न होने के बाद, वर्धमान सर्व सावित्री योग का तीन कारण तीन योग से त्याग कर

साधुपन स्वीकार कर लेते हैं। दीक्षा के पहले दिन ही परीषद का क्रम प्रारम्भ हुआ, जिसे इन्द्र द्वारा दूर किया गया। आगे चण्डकौशिक सर्प, शूलपाणी यक्ष आदि के भी परीषद भी भगवान को डिगा नहीं पाए। लगभग बारह वर्षों की साधना के बाद उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई। जनकल्याण के बाद पावापुरी लगभग बहत्तर वर्ष की आयु में उनका महाप्रयाण हुआ।

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने भगवती संवत्सरी महापर्व की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि जैसे सब मंत्रों में परमेष्ठी मंत्र, तीर्थों में तीर्थंकर, दानों में अभय दान, ग्रहों में गुरु, व्रतों में ब्रह्मचर्य और नियमों में संतोष श्रेष्ठ है, वैसे ही सब पर्वों में पर्वाधिराज भगवती संवत्सरी का दिन श्रेष्ठ है। इसमें देह शुद्ध नहीं आत्म विशुद्ध का प्रयास किया जाता है।

आचार्य प्रवर ने दूसरे सत्र के मंगल प्रवचन में तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता आचार्यश्री भिक्षु एवं धर्म संघ के पूर्वाचार्यों के जीवन प्रसंगों को वर्णन किया। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने आचार्यश्री महाश्रमणजी के जीवनवृत्त व कर्तृत्व का वर्णन किया।

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने आचार्य संपदा विषय पर अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वीवर्या श्री साध्वी संबुद्धयशाजी ने 'आत्मा की पोथी' गीत का संगान किया। भगवान महावीर के ग्यारह गणधरों के विषय में साध्वी राजश्रीजी ने अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी प्रबुद्धयशाजी ने जैन धर्म की प्रभावक साध्वियों के विषय में अपनी प्रस्तुति दी।

पृष्ठ 20 का शेष

स्वाध्याय के द्वारा...

क्षांति, मुक्ति, आर्जव और मार्दव - ये चार ऐसे द्वार हैं जो धार्मिक होने के लक्षण हैं। 10 प्रकार के श्रमण धर्म में एवं चार प्रकार के धर्म द्वारों में पहला द्वार है- क्षांति धर्म। मुख्य मुनि श्री ने क्षमा की व्याख्या करते हुए कहा - किसी प्रकार की प्रतिकूल स्थिति आने पर भी सहज भाव से सहन करना क्षमा है, उत्तेजित होने का अवसर आने पर भी शांत रहना क्षमा है, सामने वाले की दुर्बलता को अपनी स्नेह की धारा से विलीन कर देना क्षमा है। क्षमा आत्मा का स्वभाव है।

क्षमा का आधार लिए बिना कोई व्यक्ति शांतिपूर्वक जीवन नहीं जी सकता। आत्म चिंतन के द्वारा व्यक्ति क्रोध के कारण को जाने और फिर उसके निवारण का प्रयास करें। दूसरा द्वार है मुक्ति। हम लोभ को जीतकर वीतरागाता की दिशा में गतिशील बनें। साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने क्षांति-मुक्ति धर्म पर आधारित गीत का संगान किया। साध्वीवर्या जी ने कहा कि धर्म का दूसरा द्वार मुक्ति को बताया गया है। जहां निर्लोभता जाग जाती है, वह मुक्ति कहलाती है। निर्लोभता के लिए हमें अनासक्त जीवन जीना होगा।

मुनि सिद्धकुमारजी ने तीर्थ और तीर्थंकर विषय पर अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। साध्वी प्रीतिप्रभाजी ने स्वाध्याय दिवस पर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



समाधि बाहर नहीं हमारे भीतर है

उदयपुर।

तेरापंथ महिला मंडल उदयपुर द्वारा आयोजित चित्त समाधि कार्यशाला में डॉ. साध्वी परमयशा जी ने कहा कि चित्त समाधि खुशहाल रिश्तों का आधार है, रिश्तों का सुरक्षा कवच है। जिस परिवार में तानों उलाहनों का संगीत सितार बजाता है वे सुख समृद्धि के दर्शन नहीं कर सकते।

सफलता का सूर्योदय आडंबर, प्रदर्शन चीख, चिल्लाहट, टनटनाहट में नहीं प्रत्युत सद्गुण सुमनों में छुपा है। असमाधिस्थ चित्त कई बीमारियों को आमंत्रण देता है। आपने आगे कहा कि समाधिस्थ चित्त की साधना के उपाय हैं- आशावादी रहें, हंसते-मुस्कराते रहें, स्वाध्याय-सामाजिक का आनंद लें, संगीत की स्वर लहरियों से

टेशन को बाय कहना सीखें, चिंता नहीं चिंतन करें।

साध्वी विनम्रयशा जी ने कहा कि चित्त समाधि में चित्त का अर्थ है चिंतन की प्रशस्त दिशा। समाधि का अर्थ है सहनशीलता का विकास करें। साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने कार्यशाला में अपने भाव रखते हुए कहा कि पांच सकार को साकार करने से चित्त समाधि रह सकती है जैसे सेवा, संस्कार, सहिष्णुता, समन्वय और संगठन।

इससे पूर्व तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सीमा बाबेल ने सभी का स्वागत किया। संगीता पोरवाल ने चित्त समाधि पर योग, प्रेक्षा ध्यान, प्राणायाम के प्रयोग करके सभी को निरंतर करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन खुशबू कंटालिया ने किया। आभार तेरापंथ महिला मंडल मंत्री ज्योतिजी कच्छारा ने किया।

दम्पति आराधना अनुष्ठान का आयोजन

इरोड।

मुनि रश्मिकुमार जी के निर्देशन में दंपति आराधना अनुष्ठान का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन इरोड में किया गया। इस अवसर पर मुनि रश्मिकुमारजी ने मंत्रों की साधना करवाते हुए उनका महत्व बताया।

उन्होंने कहा कि आज के युग में हम मंत्रों के द्वारा तनाव मुक्त रह सकते हैं। मनोवांछित कार्य सिद्धि मंत्र, वैर शमन मंत्र, क्रोध-आवेश शांति मंत्र, सर्व मंगलकारी मंत्र, शांतिदायक मंत्र, पारस्परिक सौहार्द मंत्र व ग्रह-शान्तिदायक मंत्रों से हम आधि-व्याधि-उपाधि से मुक्ति पाते हुए,

अपने जीवन को सुव्यवस्थित बना सकते हैं। अनुष्ठान द्वारा व्यक्ति के कर्मों की निर्जरा होती है। इससे व्यक्ति हर प्रकार की सुख-समृद्धि प्राप्त कर सकता है।

सामूहिक रूप में किए जाने वाले अनुष्ठानों से पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्र की समस्याओं से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने कहा विघ्न-हरण ग्रह-शान्ति का यह अनुष्ठान एक दुर्लभ अनुष्ठान है।

इसमें भाग लेकर व्यक्ति अपने जीवन को सुखी और समृद्ध बना सकता है। अनुष्ठान में दंपति जोड़ों ने मंत्रों से गर्भित पिरामिड को अपने मस्तिष्क पर धारण कर भाग लिया।

मित्रता दिवस, स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन कार्यशाला

माधावरम, चेन्नई साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में किशोर मंडल के तत्वावधान में फ्रेंडशिप डे, इंडिपेंडेंस डे एवं रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन हुआ।

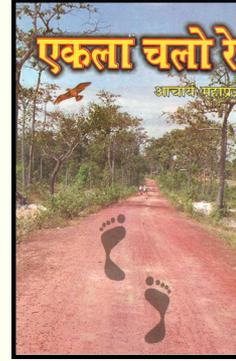
साध्वीश्री ने दोस्ती की मजबूती बढ़ाने आदि अनेक बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए मित्र की उपयोगिता को बताया। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में साध्वी श्री ने कहा कि हर नागरिक भारत को विकसित देश बनाने का संकल्प करे। अपनी विरासत पर गर्व व सम्मान, हिंदुस्तान की एकता और एकजुटता का लक्ष्य रखें। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा- अपने देश के वफादार नागरिक बने। भारत का गौरव ताजमहल, कुतुबमीनार नहीं इसका गौरव है प्राचीन मूल्यों से। साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी मेरुप्रभाजी ने कार्यक्रम संचालन करते हुए देशभक्ति काव्य प्रस्तुति दी।

फ्री मेडिकल एवं रक्त जांच शिविर का आयोजन

गुवाहाटी। तेरापंथ युवक परिषद् गुवाहाटी द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर (एटीडीसी) के सहयोग से फ्री मेडिकल एवं रक्त जांच शिविर का आयोजन स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। तेयुप अध्यक्ष सतीशकुमार भादानी ने अपने स्वागत वक्तव्य में शिविर में उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए कहा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर की गतिविधियों की जानकारी दी। शिविर में हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मयंक अग्रवाल, डॉ. अभिनव अग्रवाल, डॉ. असीम चौधरी, डॉ. डेंटिस्ट डॉ. नेहा अग्रवाल, होम्योपैथी डॉ. जैस्मिन अख्तर ने अपनी सेवाएं दीं। शिविर में रक्तचाप, ब्लड शुगर, थायरॉयड, हीमोग्लोबिन, ईसीजी आदि की निःशुल्क जांच की गई। इस शिविर के प्रायोजक शुभकरण मनीष कुमार सिंधी थे। शिविर में सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। एटीडीसी संचालन समिति के संयोजक इनकार दुधोडिया एवं तेयुप पूर्व अध्यक्ष मनीष कुमार सिंधी का विशेष सहयोग रहा। शिविर के संयोजक अमित मालू थे। सहमंत्री गौतम वैद ने धन्यवाद किया।

बोलती किताब

एकला चलो रे



श्वास द्वारा व्यक्तित्व को निखारें - हम प्रयत्नशील हैं कि हम अपने आपको जानें अपने आपको देखें, अपने आप से परिचित बनें अपने प्रति जागरूक हों। इस दिशा में पहले प्रयोग है श्वास प्रेक्षा, श्वास को देखना। जिस व्यक्ति ने श्वास को देखना शुरू कर दिया, उसने अपने व्यक्तित्व को समझना शुरू कर दिया, अपने आप को समझना शुरू कर दिया। श्वास के प्रति हमारी जागरूकता होती है, इसका गहरा अर्थ होता है कि हम अपने समूचे व्यक्तित्व के प्रति जागरूक बन जाते हैं।

ध्यान की गहराई द्वारा अनुभव प्राप्ति - पदार्थ की और चेतना की प्रक्रिया सर्वथा भिन्ना होती है। ध्यान-प्रक्रिया के पहले दिन के अभ्यास में जितनी नीरसता लगती है, दस दिन के अभ्यास-काल के बाद नहीं लगती। पहले दिन जो दूरी होती है ध्यान के साथ, वह दस दिन पश्चात् इतनी दूरी नहीं होती। जो ध्यान के अभ्यास से गुजरते हैं, उनको ऐसा अवश्य ही अनुभव होता है।

सफलता प्राप्ति की तीन शर्तें- आदमी सफलता चाहता है। जो भी प्रवृत्ति प्रारंभ करता है, उसमें सफल होना चाहता है। सफलता के लिए तीन शर्तें हैं-सम्यक् दृष्टि सम्यक् नहीं होती तो सफलता नहीं मिलती। उपाय सम्यक् नहीं होता तो सफलता नहीं मिलती और पुरुषार्थ सम्यक् नहीं होता तो सफलता नहीं मिलती। ये तीनों बातें अनिवार्य हैं और तीनों में एक को भी नहीं छोड़ा जा सकता। तीनों परस्पर संबद्ध हैं।

दुःख मुक्त का एक उपाय-एकांतवास - एकांतवास की इतनी दृष्टि विकसित हो जाती है तो जीवन में आने वाली सर्दी और गरमी, अनुकूलता और प्रतिकूलता, प्रियता और अप्रियता-इन सारी की सारी परिस्थितियों को झेलने की क्षमता बढ़ जाती है, क्षमता विकसित होती है और उसके परिपात्र के हजारों-हजारों मानसिक समस्याओं, दुःखों और उलझनों से अपने आपको मुक्त कर सकते हैं।

जीवन को सुंदर बनाने का सार है स्वास्थ्य - प्रश्न पूछा गया कि ज्ञान का सार क्या है? उत्तर मिला, ज्ञान का सार है-आचार। 'धर्म का सार क्या है?' उत्तर मिला-शांति। जीवन का सार क्या है? इसका उत्तर होगा-श्वास।

समझदार व्यक्ति वही, जो मस्तिष्क को सुंदर बनाए - आवश्यक है मस्तिष्क को स्वस्थ और सुंदर रखना। जिस व्यक्ति ने अपनी शक्ति को, चाहे सर्दी का समय हो, चाहे गर्मी का समय हो, मस्तिष्क के सौंदर्य को बढ़ाने के लिए और मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए लगाई है, वह वास्तव में समझदार आदमी है।

आध्यात्मिकता द्वारा आचरण होगा पवित्र -

भावनात्मक तनावों को समाप्त करने की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि भी निर्मित हो जाएगी। आदमी जैसे-जैसे तनाव से मुक्त होता जाएगा, उससे व्यवहार और आचरण की पवित्रता आती जाएगी।



पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

कांटाबांजी। अभातेममं के निर्देशन में चित्त समाधि शिविर का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन कांटाबांजी में समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में रखा गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। समणी क्षांतिप्रज्ञा जी द्वारा मंगल भावना का संगान एवं व्याख्या की गई। समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी द्वारा शारीरिक व मानसिक व्याधि के

निवारण एवं आपसी रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया गया। जीवन शैली प्रभावी कैसे बने?

पारिवारिक रिश्तों में हमारी भूमिका क्या हो? जिससे घर का वातावरण खुशहाल बने और हमें चित्त समाधि मिले आदि विषयों पर समणीजी द्वारा सभी का मार्गदर्शन किया गया। ऋतु जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया।



साध्वी धैर्यप्रभाजी की स्मृति सभा का हुआ आयोजन

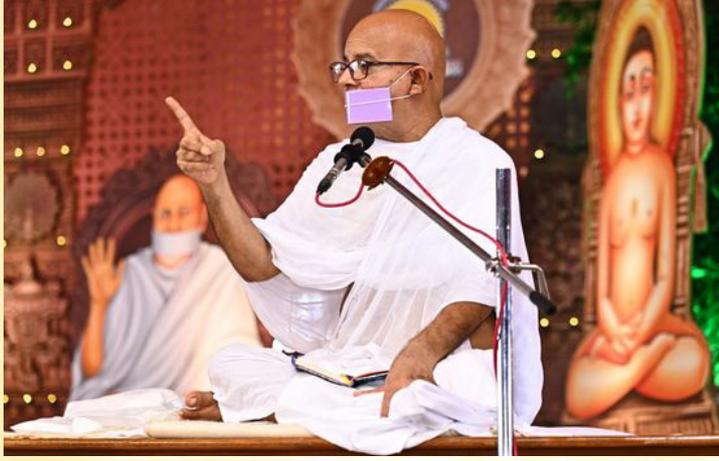
सम्यक्त्व का मूल तत्व है यथार्थ पर श्रद्धा : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

04 सितम्बर, 2024

महावीर के प्रतिनिधि आचार्य श्री महाश्रमण जी ने प्रभु महावीर के भवों की जीवन यात्रा का विश्लेषण करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर ने अपने अनंत जन्मों में एक नयसार के भव में सम्यक्त्व रत्न की प्राप्ति की थी। इसलिए 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' का शुभारम्भ इसी भव से किया जाता है। सम्यक्त्व की प्राप्ति होना बड़ी उपलब्धि है, इससे बड़ा रत्न नहीं होता है। चारित्र को सम्यक्त्व पर निर्धारित रहना होता है, किन्तु सम्यक्त्व को चारित्र की अपेक्षा नहीं होती है। इस कारण सम्यक्त्व चारित्र से बड़ा होता है। सम्यक्त्व स्वतंत्र भी हो सकता है।

नयसार ने सम्यक्त्व का पालन किया। जो चीज मिल जाये उसकी देखभाल रखो। वह सत्य है, वह सत्य ही है जो जिनों ने प्रवेदित किया है। यथार्थ पर हमारी श्रद्धा हो। यह सम्यक्त्व का मूल तत्व है। साथ में कषाय का प्रतनुकरण हो। तत्व को समझने का प्रयास करें, साथ में यथार्थ को ग्रहण करें। अनाग्रह भाव से समझने पर नया आलोक मिल सकता है।



नयसार का आयुष्य पूरा कर महावीर की आत्मा प्रथम देवलोक में उत्पन्न होती है। वहां से च्युत होकर पुनः मनुष्य जन्म प्राप्त कर भगवान ऋषभ के पौत्र और चक्रवर्ती भरत के पुत्र मरीचि के रूप में उत्पन्न हुए। भगवान ऋषभ की देशना सुन मरीचि प्रभु के पास दीक्षित हो जाता है। ग्यारह अंगों का अध्ययन करता है। ज्ञान वृद्धि और वैराग्य वृद्धि की दृष्टि से आगम स्वाध्याय करना चाहिये। प्यास के परीषह से मरीचि साधुपन छोड़, अलग होकर साधना करने लग जाता है।

आचार्य प्रवर ने वाणी संयम दिवस के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को अपनी वाणी का संयम

रखने का प्रयास करना चाहिए। बोलना आवश्यक है, किन्तु वाणी का विवेक होना अतिआवश्यक होता है। विवेकपूर्ण वाणी वाणी संयम का ही एक माध्यम हो सकता है।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि हमारे जीवन के दो पक्ष हैं- अध्यात्म और व्यवहार। अध्यात्म की गहराई में जाने के लिए मौन श्रेयस्कर है। व्यवहार जगत में बोलना पड़ता है। हमें मौन की यात्रा करनी है, वह भीतर की यात्रा है। इससे भीतरी सुख की अनुभूति होती है। अध्यात्म और व्यवहार जगत में संतुलन बनाते हुए हम वाणी संयम का प्रयोग करें।

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने लाघव व सत्य धर्म की व्याख्या करते हुए कहा जो अकिंचन है वह तीन लोक का स्वामी हो सकता है। लाघव धर्म की साधना करने वाला सुखी बन सकता है। सत्य धर्म का संबंध महाव्रत, अणुव्रत, भाषा समिति और वचन गुप्ति से है। जो चीज जैसी है उसको उसी रूप में प्रस्तुत करना और अपनी स्वीकृत प्रतिज्ञा को निर्वाह करने की क्षमता रखता सत्य धर्म के अंतर्गत आता है। पंचपद वंदना में तीन शब्द आते हैं- भाव सत्य, करण सत्य, योग सत्य। भाव धारा की पवित्रता, कार्य की प्रामाणिकता (कथनी-करनी में एकता) और मन-वचन-काया की विशुद्धि से सत्य की आराधना की जा सकती है। साध्वीवर्या श्री सम्बुद्धयशाजी ने लाघव और सत्य धर्म पर आधारित गीत का संगान किया।

मुनि मार्दवकुमारजी ने भगवान शांतिनाथ के विषय में और मुनि गौरवकुमारजी ने भगवान ऋषभ के संदर्भ में अपनी अभिव्यक्ति दी। सामायिक दिवस के संदर्भ में साध्वी वैराग्यप्रभाजी व साध्वी समत्वप्रभाजी ने गीत का संगान किया। वाणी संयम दिवस के संदर्भ में साध्वी प्रफुल्लप्रभाजी व साध्वी श्रुतविभाजी ने

गीत का संगान किया।

एक दिवस पूर्व ही आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में चतुर्मासगत और तपस्यारत साध्वी धैर्यप्रभाजी का देवलोक गमन हो गया था। उनकी स्मृतिसभा में आचार्य प्रवर ने साध्वी धैर्यप्रभाजी का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रदान करते हुए उनकी आत्मा के आध्यात्मिक गति करने की कामना की। आचार्यश्री ने उनकी आत्मा की शांति के लिए चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगसस का ध्यान किया। तदुपरान्त मुख्यमुनिश्री, साध्वीप्रमुखाश्री, साध्वीवर्याश्री, साध्वी धैर्यप्रभाजी की संसारपक्षीया पुत्री साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी, साध्वी सुमतिप्रभाजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी हिमश्रीजी, साध्वी विशालप्रभाजी, साध्वी प्रांजलयशाजी, साध्वी हेमरेखाजी ने अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की।

साध्वी तेजस्वीप्रभाजी द्वारा रचित गीत को साध्वीवृंद ने प्रस्तुति दी। साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी ने मुनि कौशलकुमारजी की भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद ने उनकी स्मृति में एक गीत का संगान किया। ताराचन्द बोहरा, मधु बोहरा व रमेशचन्द बोहरा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। सेजल चोरडिया आदि ने गीत का संगान किया।

अनुकूल-प्रतिकूल परीषहों में समता रखना है श्रेयस्कर : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

05 सितम्बर, 2024

पर्वाधिराज पर्युषण का पांचवा दिवस-व्रत चेतना दिवस। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा प्रसंग के अंतर्गत फरमाया की सम्यक्त्व प्राप्ति के तीसरे भव में मरीचि को तृष्णा का परीषह हो गया। चारित्रात्मा परीषहों के संग्राम में विजयी बनें। बाईस परीषह आगम में उल्लेखित हैं। परीषह अनुकूल-प्रतिकूल हो सकते हैं, उनमें समता रखें, यह साधु के लिए श्रेयस्कर होता है।

चक्रवर्ती भरत ने एक बार भगवान ऋषभ से पूछा कि क्या कोई दूसरा भी आपकी तरह तीर्थंकर बनने वाला है? भगवान ने फरमाया कि इस परिषद के बाहर तुम्हारा पुत्र मरीचि तीर्थंकर बनेगा, उसके बीच के भवों में वासुदेव भी बनेगा, चक्रवर्ती भी बनेगा। तीन महत्वपूर्ण पदों की खुशियां सुन भरत भी खुश हुए। चक्रवर्ती भरत मरीचि से मिले और

भगवान द्वारा बताई गई बातें बताई। मरीचि को भी सुनकर हर्ष हुआ और अहंकार आ गया कि मेरा कुल कितना उच्च है। मेरे दादाजी प्रथम तीर्थंकर बने, मेरे पिता प्रथम चक्रवर्ती बने, मैं प्रथम वासुदेव बनूंगा, आगे चक्रवती भी बनूंगा और फिर तीर्थंकर भी बनूंगा।

तथ्य को प्रस्तुत करना बुरा नहीं है परंतु उसके साथ अहंकार का होना बुरा है। घमंड पाप कर्म, नीच गोत्र का बंध कराने वाला होता है, आदमी को घमंड नहीं करना चाहिए। अभी तो आदमी पिछली पुण्याई भोग रहा है, आगे के लिए क्या कर रहे हो? आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी कहा करते थे कि मैं आगे के लिए ध्यान दे रहा हूँ। हमारा जीवन साधना के लिए समर्पित हो। आत्म-कल्याण के बारे में चिन्तन करना चाहिये।

व्रत चेतना दिवस के संदर्भ में पूज्य प्रवर ने फरमाया कि व्रत से संवर हो जाता है। श्रावक के देश-विरति हो जाती है। बारह व्रतों को स्वीकार कर पालन करना ऊंची बात है। त्याग में करण, योग का भी



महत्त्व है। साधु के तो महाव्रतों का तीन करण, तीन योग से त्याग होता है। सुगमल साधना भी त्याग की काफी अच्छी साधना है। सघन साधना शिविर में भी साधना की बात है। प्रेक्षाध्यान भी एक साधना है। 30 सितंबर 2024 से प्रेक्षाध्यान कल्याण महोत्सव भी शुरू होने वाला है। अणुव्रत भी नैतिक चेतना का उपक्रम है। सर्वविरति में भी अप्रमाद की चेतना रहे। श्रावक छोटे-छोटे त्याग भी कर सकते हैं, रोज चौदह नियम चितारें। तपस्याएं भी चल रही हैं जो व्रत को पुष्ट करने वाली हैं। जितनी हमारी त्याग संयम की चेतना बढ़ेगी उतना श्रेयस्कर होगा। साध्वीप्रमुखा

श्री विश्रुतविभाजी ने व्रत चेतना की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि ठाणं सूत्र में दो प्रकार के धर्मों की व्याख्या मिलती है- श्रुत धर्म और चारित्र धर्म। चारित्र धर्म को पुनः दो भागों में विभक्त किया गया है- अगार धर्म और अणगार धर्म। साधु और श्रावक दोनों ने व्रत के मार्ग को स्वीकार किया है, दोनों वीतरागता के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहते हैं। पर दोनों की गति में, त्याग में तारतम्य होता है। आनन्द आदि श्रावकों ने भगवान से बारह व्रतों को समझा और अपने जीवन में उतारा। आचार्य श्री तुलसी ने व्रत-दीक्षा में बारह व्रतों को सरलता से समझाया है। हम त्याग के रहस्य को

समझने का प्रयास करें, त्याग के द्वारा हमारी आत्मिक शक्ति का विकास होता है। मुख्यमुनि श्री महावीरकुमारजी ने संयम धर्म के संदर्भ में सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वीवर्या श्री सम्बुद्धयशाजी ने संयम धर्म पर चर्चा करते हुए कहा कि साधक न किसी से दूर रहे, न किसी के निकट रहे, वह आत्मस्थ रहे।

योगों का निग्रह करना संयम है। संयम की आराधना करने के लिए हमें आत्मा को मलिन बनाने वाले तत्वों से अलग रहना होगा। स्वभाव से विभाव में ले जाने वाले तत्वों से विरक्ति लेनी होगी। चार प्रकार के संयम बताये गये हैं- मन का संयम, वचन का संयम, काया का संयम, उपकरण संयम। हम आत्मा की उन्नति के लिए अपने जीवन में संयम का विकास करें।

मुनि अभिजीतकुमार जी ने भगवान मल्लिनाथ के विषय में अपनी अभिव्यक्ति दी। व्रत चेतना दिवस पर साध्वी मैत्रीयशाजी व साध्वी ख्यातयशाजी ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

स्वाध्याय के द्वारा करें अपने ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

नयसार के भव से प्रारंभ हुई महावीर की अध्यात्म यात्रा

सूरत।

02 सितम्बर, 2024

पर्वधिराज पर्युषण का द्वितीय दिवस - स्वाध्याय दिवस। महावीर समवसरण में अध्यात्म योगी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि महाविदेह की हर विजय में तीर्थंकर हो सकते हैं। इसी जंबूद्वीप के पश्चिम महाविदेह की महावप्र विजय में जयन्ति नाम की नगरी थी। वहां का राजा शत्रुमर्दन था। उसके राज्य में पृथ्वी प्रतिष्ठान नाम की नगरी का अधिकारी नयसार था। राजा का कर्तव्य होता है कि वह प्रजा की रक्षा करे, भरण-पोषण करे। राजतंत्र हो या लोकतंत्र दोनों का लक्ष्य होता है कि प्रजा की रक्षा करे। राजनीति सेवा का माध्यम होता है। राजनीति में भी अहिंसा, प्रामाणिकता और सद्भावना रहे। प्रजा का भौतिक विकास करना राजनीति का कार्य है, इसके साथ आध्यात्मिकता और नैतिकता भी विकसित हो, पुष्ट हो। एक ओर व्यवस्था तंत्र है, दूसरी ओर हृदय परिवर्तन है। ये दोनों अगर मजबूत रहें तो जनता का विकास हो सकता है।

राजा शत्रुमर्दन ने नयसार को लकड़ी लाने का आदेश दिया। वह जंगल में गया, भूख लगने पर भोजन करने बैठा। तभी उसे कुछ साधुओं की मंडली दिखाई दी। जानकारी मिली कि ये साधु मार्ग भूल कर आये हैं। मन में भक्ति जागी और संतों से निवेदन किया कि मुनिवर! शुद्ध आहार उपलब्ध है, हमें दान का मौका दीजिए। साधुओं को दान देना अच्छी बात है। मैं भी न भूखा रहूँ, साधु न भूखा जाय।



नयसार ने साधुओं को दान दिया। भावना भाना बड़ी बात है, चाहे साधु आये या न आये, पर भावना भाना धार्मिक लाभ देने वाला सिद्ध हो सकता है। नयसार ने संतों को सही मार्ग दिखाया तो साधुओं ने भी उसे प्रतिबोध दिया।

स्वाध्याय दिवस के अवसर पर पूज्य प्रवर ने फरमाया कि ज्ञान से आदमी पदार्थों को, भावों को जानता है। ज्ञान दो तरह का हो सकता है- एक ज्ञान कुए के समान होता है, जो भीतर से प्रस्फुटित होता है, दूसरा ज्ञान कुंड के समान होता जो किताबें आदि पढ़कर ग्रहण किया जाता है। स्वाध्याय के द्वारा बाहर का ज्ञान संग्रहित हो सकता है। स्वाध्याय के पांच प्रकार हैं- वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्म कथा। ज्ञान को पढ़ें, सुनें, पृच्छना करें, पुनरावर्तन करें, अनुप्रेक्षा करें और परोपकार के रूप में धर्म का प्रचार करें। स्वयं कमाई करें और दूसरों का कल्याण करें। स्वाध्याय के द्वारा हम अपने ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करें।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वाध्याय हमारी शारीरिक कैलोरी और मानसिक स्फूर्ति को बढ़ाने वाला है। स्वाध्याय से शक्ति का संवर्द्धन होता है, एक नया आलोक प्राप्त होता है।

स्वाध्याय को निर्जरा का एक प्रकार बताया गया है। साधु तो स्वाध्याय में रत रहे। स्वाध्याय से साधु कर्म मलों को दूर कर आत्मा को निर्मल बनाता है। जो व्यक्ति अपना अध्ययन करता है, आत्म चिंतन करता है वह व्यक्ति कैवल्य की भूमिका तक भी पहुंच सकता है।

हम ज्ञान प्राप्ति के लिए, एकाग्रचित होने के लिए, आत्मा को स्थिर करने के लिए और दूसरों को ज्ञान में स्थित करने के लिए स्वाध्याय करें।

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने क्षांति-मुक्ति धर्म को विवेचित करते हुए कहा कि व्यक्ति धार्मिक कहलाना चाहता है, पर जब तक उसके भीतर धर्म के महल में प्रवेश करने की चेतना जागृत नहीं होगी तब तक वह उसमें प्रवेश नहीं कर पाएगा। (शेष पेज 17 पर)

अर्हम् साध्वी धैर्यप्रभा जी का देवलोकगमन



जीवन परिचय

- जन्म :** 5 अगस्त 1968, चेन्नै
माता : स्व. कांतादेवी
पिता : स्व. सम्पतराजजी छल्लाणी
सास-ससुर : स्व. लक्ष्मीदेवी - स्व. मोहनलालजी बोहरा
दीक्षा : 11 नवम्बर 2018, परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के मुखकमल से चेन्नै में सपरिवार दीक्षा
कंठस्थ : दसवेआलियं, उत्तराध्ययन के कुछ अध्याय, भक्तामर, आचार्य बोध, संस्कार बोध, अष्टकम् आदि
यात्रा : तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र व गुजरात
ज्ञाति चरित्रात्माएं : स्व. मुनि अनिकेतकुमारजी (पति) मुनि कौशलकुमारजी (पुत्र) साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी एवं साध्वी तेजस्वीप्रभाजी (पुत्री) वि. सं. 2081 भाद्रपद अमावस्या, 3 सितम्बर 2024, प्रातः लगभग 6:05 बजे, सूरत
देवलोकगमन :
विशेष :
- संसार पक्षीय पुत्री साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी ने पूरे परिवार को दीक्षा को लिए तैयार किया।
 - 29 आगमों का वाचन
 - प्रतिदिन श्रुत सामायिक व दसवैकालिक का स्वाध्याय।
 - प्रतिदिन चौविहार पौरुषी - 2 साल से,
 - प्रतिदिन छह विगय वर्जन - 3 साल से,
 - 11 द्रव्यों की सीमा - 3 साल से,
 - चरम प्रत्याख्यान - दीक्षा से,
 - उपवास आदि तप में मौन - दीक्षा से,
 - औषध आदि का प्रयोग नहीं - दीक्षा से,
 - 11, 31 और 46 का तप - एक बार
 - प्रथम वर्षीतप में प्रारम्भ में लगभग 5 महीने तक उपवास के पारणे में एकासन किए। शेष 8 महीनों में उपवास के पारणे में आयम्बल किए।
 - द्वितीय वर्षीतप अभी चल रहा था। लगभग 2 महीने 10 दिन तक उपवास के पारणे में आयम्बल किए। तत्पश्चात् आषाढी तेरस से तपस्या प्रारंभ।
 - परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी की दीक्षा कल्याण महोत्सव के सन्दर्भ में साधु-साध्वियों द्वारा करणीय 51 संकल्पों में से 51 संकल्पों को पूरा करने का प्रयास किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

